kanwhizztimes
@kanwhizztimes
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स
सिर्फ सच

❑ वर्ष-14 ❑ अंक-187 ❑ शुक्रवार, 08 अगस्त 2025 ❑ नगर संस्करण ❑ लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित ❑ मूल्य- ₹ 3.00 ❑ पृष्ठ-12

श्री गांधी हताशा में देश की संवैधानिक संस्थाओं के खिलाफ बयान दे रहे हैं। उन्होंने श्री गांधी की आयोग के अधिकारियों के संबंध में 'चुन चुन कर, देख लूंगा, और उनको छोड़ूगा नहीं' जैसी टिप्पणियों पर कहा कि देश के अधिकारियों को धमकी दिया जाना बेहद निंदनीय है। यह एक तरह से लोकतंत्र पर आघात है। संबित पात्रा

राजग ने मोदी, नड्डा को सौंपी उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के चयन की जिम्मेदारी 11

सेना ने धराली में राहत व बचाव अभियान किया तेज, 70 लोगों को किया रेस्क्यू 12

किसानों-पशुपालकों के हितों से समझौता नहीं : मोदी

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने व्यापार में भारत के खिलाफ अतिरिक्त आयात शुल्क लगाने के अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के फैसले के खिलाफ गुरुवार को एक कड़ा और स्पष्ट संदेश देते हुए हुए कहा कि भारत देश के किसानों, पशुपालकों और मछुआरों जैसे कमजोर वर्ग के लोगों के हितों के साथ कभी कोई समझौता नहीं करेगा और वह स्वयं इसके लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार हैं।

श्री मोदी प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक भारत रत्न स्वर्गीय डॉ एम एएस स्वामिनाथन के जन्म शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में राजधानी में कृषि विज्ञान पर एक अंतराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। श्री मोदी ने कहा, ' हमारे लिए अपने किसानों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारत अपने किसानों के, पशुपालकों के, और मछुआरे भाई-बहनों के हितों के साथ कभी भी समझौता नहीं करेगा।ङ्क उन्होंने इसी संदर्भ में कहा, ..और मैं जानता हूं व्यक्तिगत रूप से मुझे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी, लेकिन मैं इसके लिए तैयार हूं। उन्होंने

❑ टैरिफ का जिक्र किए बिना कहा- हितों की रक्षा के लिए मैं बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार : प्रधानमंत्री

कहा कि सरकार देश के किसानों , मछुआरों , पशुपालकों की पूरी मदद के लिए पूरी तरह तैयार है और किसानों की आय बढ़ाने, खेती की लागत कम करने, किसानों की आय के नए स्त्रोत बनाने, इन लक्ष्यों पर सरकार लगातार काम कर रही हैं।

उन्होंने कहा , ' डॉ .स्वामीनाथन ने हमें सिखाया था कि खेती सिर्फ फसल की नहीं होती, खेती लोगों की जिंदगी होती है। खेत से जुड़े हर इंसान की गरिमा, हर समुदाय की खुशहाली और प्रकृति की सुरक्षा, यही हमारी सरकार की कृषि नीति की ताकत है। हमें विज्ञान और समाज को एक धागे में जोड़ना है, छोटे किसान के हितों को सर्वोपरि रखना है, और खेतों में काम करने वाली महिलाओं को सशक्त करना है, सशक्त करना है।'

श्री मोदी ने इस अवसर पर खाद्यान्न को जीवन तथा विश्व शांति का आधार बताया। उन्होंने भारतीय कृषि वैज्ञानिकों से पोषण सुरक्षा के लिए काम करने तथा विकसित

भारत के लक्ष्य को हासिल करने में हर संभव योगदान करने का आह्वान किया। श्री मोदी ने कहा कि वैज्ञानिकों को अब देश की पोषण सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन से कृषि के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों और आनाज उत्पादन बढ़ाने के साथ धरती की रक्षा के उपायों पर विशेष ध्यान देना है।

श्री मोदी ने कहा, ' डॉ. स्वामीनाथन से प्रेरणा लेते हुए, अब देश के वैज्ञानिकों के पास एक बार फिर इतिहास रचने का मौका है। पिछली पीढ़ी के वैज्ञानिकों ने खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। अब पोषण सुरक्षा पर फोकस करने की आवश्यकता है। हमें बायो-फोर्टिफाइड और न्यूट्रीशन से भरपूर फसलों को व्यापक स्तर पर बढ़ाना होगा, ताकि लोगों का स्वास्थ्य बेहतर हो। रसायनों का उपयोग कम हो, नैचुरल फार्मिंग (प्राकृतिक खेती) को बढ़ावा मिले, इसके लिए हमें अधिक तत्परता दिखानी होगी। श्री मोदी ने कहा कि हमें जलवायु परिवर्तन से प्रभावित न होने वाली फसलों की ज्यादा से ज्यादा किस्मों को विकसित करना होगा। सूखा और ऊष्णाता में भी फलने फूलने में समर्थ और में भी तैयार हो सकने वाली फसलों पर ध्यान देना होगा। फसल चक्र कैसे बदला जाए, किस मिट्टी के लिए क्या उपयुक्त है, उस पर अधिक अनुसंधान होने चाहिए। इसके साथ ही, हमें सस्ते मृदा परीक्षण उपायों और भू ऊर्वरता प्रबंधन के तरीके, उसको भी विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और तकनीशयनों से सौर ऊर्जा चालित सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के विकास की दिशा में और ज्यादा काम करने । ड्रिप सिस्टम और प्रिसिशन इरिगेशन ज्यादा व्यापक और असरदार बनाने , कृषि क्षेत्र के लिए सैटेलाइट डेटा, कृत्रिम मेधा (एआई) और मशीन लर्निंग को जोड़ने की संभावनाओं को तलाशने का भी आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज बड़ी संख्या में युवा खेती की समस्याओं के नये-नये समाधान निकालने में जुटे हैं। अनुभवी वैज्ञानिक उन्हें मार्गनिर्देशन दें तो उनके बनाए प्रोडक्ट ज्यादा प्रभावशाली होंगे, और अधिक उपयोगी होंगे। उन्होंने कहा, ' हमारी सरकार ने किसानों की ताकत को देश की प्रगति का आधार माना है। इसलिए बीते वर्षों में जो नीतियां बनीं, उनमें सिर्फ मदद नहीं थी, किसानों में भरोसा बढ़ाने का प्रयास भी था। उन्होंने कहा कि पीएम किसान सम्मान निधि से छोटे किसानों को आत्मबल दिया है। पीएम फसल बीमा योजना ने किसानों को सुरक्षा दी है। पीएम कृषि सिंचाई योजना से सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हुआ। 10 हजार एफपीओ के निर्माण ने छोटे किसानों की संगठित शक्ति बढ़ाई है, सहकारिता और स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक मदद ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति दी है। आनलाइन मंडी व्यवस्था ई-नाम से किसानों को अपनी उपज बेचने की ● शेष पेज 11 पर

अटल बिहारी वाजपेयी छात्रवृत्ति योजना को मिली मंजूरी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर छात्रवृत्ति योजना को मंजूरी प्रदान कर दी है।

लोकभवन में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि बैठक में भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी-चिवनिंग उत्तर प्रदेश राज्य सरकार छात्रवृत्ति योजना को मंजूरी प्रदान की गई है। चिवनिंग ब्रिटिश की एक प्रशासनिक इकाई है, जिसके साथ उत्तर प्रदेश सरकार का करार हुआ है। कैबिनेट की बैठक में कुल 19 प्रस्ताव लाए गए और सभी प्रस्तावों पर मुहर लग गई। बैठक में उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय अधिनियम, 2019 के अन्तर्गत मुजफ्फरनगर में वेदान्ता विश्वविद्यालय, की स्थापना के प्रस्ताव के लिये प्रायोजक संस्था को आशय-पत्र निर्गत किये जाने के सम्बन्ध प्रस्ताव को मंज़ूरी प्रदान की गई। सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश में निजी क्षेत्र के अन्तर्गत केडी विश्वविद्यालय, ● शेष पेज 11 पर

❑ यूपी कैबिनेट बैठक में 19 प्रस्तावों पर लगी मुहर

सांसद-विधायक एडेड स्कूलों के लिए जारी कर सकेंगे अपनी निधि से अग्रिम राशि

लखनऊ। एडेड माध्यमिक विद्यालयों के जीर्णोद्धार, मरम्मत, पुर्ननिर्माण एवं नवनिर्माण आदि के लिए सांसद व विधायक अपनी निधि से अग्रिम राशि जारी कर सकेंगे। कैबिनेट ने इससे संबंधित एक प्रस्ताव को गुरुवार को मंजूरी प्रदान कर दी। अब तक नियम यह था कि सरकार एडेड स्कूलों को विद्यालय भवनों के जीर्णोद्धार, मरम्मत, पुर्ननिर्माण एवं नवनिर्माण आदि पर होने वाले कुल खर्च का 75 प्रतिशत राशि प्रदान करती थी तथा शेष 25 प्रतिशत राशि विद्यालय को अपने पास से देना पड़ता था। शासन द्वारा उसके हिस्से की राशि जारी किए ● शेष पेज 11 पर

संक्षेप

राष्ट्रपति पुतिन इस साल के आखिर में भारत आएंगे

मॉस्को/नई दिल्ली। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस साल के आखिरी हफ्ते में भारत दौरे पर आ सकते हैं। रूसी न्यूज एजेंसी तास के मुताबिक, यह जानकारी भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने दी है। डोभाल ने रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु से मुलाकात में कहा, ''अब हमारे बहुत अच्छे रिश्ते बन गए हैं, जिनकी हम कदर करते हैं। हमारे देशों के बीच एक मजबूत साझेदारी है और हम हाई लेवल पर बातचीत करते हैं। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल बुधवार को रूस पहुंचे। उनकी राष्ट्रपति पुतिन के साथ भी मुलाकात हो सकती है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद डोभाल की यह पहली मॉस्को यात्रा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तरफ से रूस के साथ भारत के संबंधों पर की गई टिप्पणियों की वजह से ये यात्रा काफी अहम मानी जा रही है। आखिरी बार 2021 में भारत आए थे पुतिन राष्ट्रपति पुतिन ने 06 दिसंबर 2021 को भारत की यात्रा की थी। तब वे सिर्फ 4 घंटे के लिए भारत आए थे। इस दौरान भारत और रूस के बीच 28 समझौते पर दस्तखत हुए थे। इसमें मिलिट्री और तकनीकी समझौते शामिल थे। दोनों देशों ने 2025 तक 30 अरब डॉलर (2 लाख 53 हजार करोड़ रुपए) सालाना ट्रेड का टारगेट रखा था। फरवरी 2022 में यूक्रेन वॉर शुरू होने के बाद यह पुतिन की पहली भारत यात्रा होगी। इस विजिट से दोनों देशों के बीच 2030 के लिए नए आर्थिक रोडमैप को आगे बढ़ाने की उम्मीद है। भारत और रूस अपने बाइलैटरल ट्रेड को दोगुना करके सालाना 100 अरब डॉलर से ज्यादा करने पर सहमत हुए हैं।

आईएएस अभिषेक प्रकाश के करीबी निकांत जैन के पांच ठिकानों पर ईडी का छापा

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। रिश्वत प्रकरण में निलम्बित आईएएस अभिषेक प्रकाश के करीबी निकांत जैन के खिलाफ ईडी ने गुरुवार को बड़ी कार्रवाई की। ईडी ने निकांत जैन और उसके परिचित होटल रेग्नेंट के मालिक राजेन्द्र बग्गा के पांच ठिकानों पर छापा मारा। छापे की कार्रवाई निकांत के विक्रम खंड स्थित घर व आफिस में सबसे ज्यादा देर तक चली। निकांत के बैंक खातों में राजेन्द्र के साथ बड़े लेन-देन मिले थे।

ईडी यह भी पता कर रही है कि राजेन्द्र के साथ किन वजह से ये बड़े लेन-देन किए गए हैं। निकांत जैन 20 मार्च को गिरफ्तार होने के बाद से अभी तक जेल में ही है। ईडी गुरुवार सुबह केन्द्रीय पुलिस बल के साथ सबसे पहले विक्रम खंड स्थित निकांत जैन के घर और आफिस पहुंची। यहां कुछ देर पड़ताल के बाद वह तीन अन्य स्थानों पर भी गई। ईडी सूत्रों के मुताबिक निकांत के घर कई ऐसे दस्तावेज मिले हैं, जिसमें कई नई जानकारियां है। इससे पहले ईडी ने जब छापा मारा था तो ये दस्तावेज हाथ नहीं लगे थे। कुछ महीनों से इस प्रकरण में ईडी कोई कार्रवाई नहीं कर रही थी। दो दिन में ईडी को निकांत जैन और

❑ होटल रेग्नेंट के मालिक राजेन्द्र बग्गा के घर भी ईडी पहुंची

❑ गोल्डन ब्लॉसम रिसार्ट में साझीदार भी है राजेन्द्र, कई दस्तावेज जब्त किए

❑ कई बड़ों के साथ लेन-देन भी मिला

उनके परिवारीजनों के पांच और खातों का पता चला था। इन खातों में ही कई बड़ों से लेन-देन मिले थे। इसके बाद ही ईडी ने गुरुवार को अचानक यह कार्रवाई की। होटल रेग्नेंट में कई घंटे तक चली कार्रवाई ईडी के चार अफसर केन्द्रीय पुलिस बल के साथ निराला नगर स्थित होटल रेग्नेंट पहुंचे। ईडी के यहां पहुंचते ही हड़कम्प मच गया। ईडी ने होटल की पांचवीं मंजिल पर बने आफिस में सबको रोक लिया। किसी को भी अन्दर-बाहर नहीं जाने दिया गया। ईडी की एक टीम होटल रिसेप्शन पर पहुंची जबकि एक टीम आफिस में दस्तावेज खंगालने में लग गई। यहां से कई दस्तावेज व पार्टी की बुकिंग के दस्तावेज ● शेष पेज 11 पर

सनातन धर्म के पवित्र स्थलों को अपवित्र करने वालों को चुकानी होगी कीमत: योगी

एजेंसी

संभल। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि सनातन धर्म के पवित्र स्थलों को अपवित्र करने वालों को कीमत चुकानी पड़ेगी।

संभल जिले के बहजोई में 659 करोड़ रुपये की 222 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करने के अवसर पर एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संभल की सच्चाई को छिपाने वाले गलत मंसूबों को ध्वस्त किया जाएगा और संभल के साथ पाप करने वालों को उनके पापों की सजा मिलेगी। संभल के विकास को बाधित करने वालों को कीमत चुकानी पड़ेगी। सनातन धर्म के पवित्र स्थलों को अपवित्र करने वालों को कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्होने कहा कि संभल में कभी 68 तीर्थ, 19 पावन कूप और परिक्रमा मार्ग थे, लेकिन विदेशी बर्बर आक्रांताओं ने हमारे तीर्थों को अपवित्र और नष्ट करने का कार्य किया। सभी कूपों और तीर्थों पर कब्जे हो गए। 24 और 84 कोस परिक्रमा मार्ग को बाधित किया गया। एक सत्य को छिपाने का कुत्सित प्रयास किया गया। मुख्यमंत्री ने इस अन्याय को 'कुत्सित चेष्टा' बताते हुए जोर देकर कहा कि उनकी सरकार अब इन 68 तीर्थों और 19 कूपों के पुनरोद्धार की जिम्मेदारी उठाएगी। उन्होंने लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर का

उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे उन्होंने काशी विश्वनाथ और सोमनाथ मंदिरों का पुनरोद्धार किया, वैसे ही संभल के तीर्थों को भी नया जीवन दिया जाएगा। योगी ने संभल को हिंदू आस्था का प्रतीक बताते हुए विदेशी आक्रांताओं, कांग्रेस और सपा को निशाने पर लिया और चेतावनी दी कि 'संभल के साथ पाप करने वालों को उनके पापों की कड़ी सजा मिलेगी।' उन्होने कहा कि विकास तभी सार्थक होता है जब वह विरासत के साथ जुड़ता है। ये विरासत का संरक्षण भी है और वर्तमान एवं भविष्य के सुनहरे सपने को उड़ान देने का अभियान है। मुख्यमंत्री ने संभल की धार्मिक महत्वता पर जोर देते हुए कहा कि यह स्थान हरि (विष्णु) और हर (शिव) दोनों का सामूहिक दर्शन स्थल है, जहां भगवान विष्णु के 10वें अवतार कल्कि अवतरित होंगे। उन्होंने पुराणों का हवाला देते हुए बताया कि श्रीमद्भागवत महापुराण, स्कंद पुराण और विष्णु पुराण में संभल की चर्चा है और यह ● शेष पेज 11 पर

डीएम ने की बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में साफ-सफाई व स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा

जिलाधिकारी ने क्षेत्र का निरीक्षण भी किया और सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों दिए आवश्यक निर्देश भी दिये

कैनविज टाइम्स संवाददाता

प्रयागराज। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने गुरुवार को नगर आयुक्त साई तेजा के साथ चांदपुर सलोरी, मऊ सरैया एवं गंगानगर क्षेत्रों का निरीक्षण किया। यह दौरा बाढ़ के बाद तेजी से खाली हो रहे मोहल्लों में व्यापक स्तर पर साफ-सफाई, जल निकासी और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया।निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने खाली पड़े प्लॉटों में जलभराव की स्थिति, उसमें से पानी की निकासी तथा स्प्रे ड्रोन से एंटी लार्वा छिड़काव की व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने नगर निगम को निर्देश दिया कि जलस्तर कम होते ही अधिक संख्या में सफाई कर्मियों की तैनाती कर, नियमित रूप से ब्लीचिंग पाउडर, चूना व एंटी लार्वा का छिड़काव कराया जाए।क्षेत्रीय लोगों से बातचीत में उन्होंने समस्याएं सुनीं, जिनमें नागरिकों ने बताया कि जलस्तर में लगातार कमी आ रही है और प्रशासन द्वारा की जा रही सफाई व्यवस्था से संतुष्ट हैं। जिलाधिकारी ने विशेष रूप से निचले इलाकों और बस्ती के मध्य खाली पड़े गंदे प्लॉटों में मशीनों से पानी निकासी एवं ड्रोन से दवा छिड़काव की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. ए.के. तिवारी को निर्देशित किया कि चिकित्सा टीमों को डोर-टू-डोर विजिट कराना सुनिश्चित करें, आवश्यक दवाएं उपलब्ध कराएं और मेडिकल कैंप लगाए जाएं।साथ ही, अपर जिलाधिकारी नगर, उप जिलाधिकारी सदर और नगर निगम के अधिकारियों को आपसी समन्वय से सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी करने के सख्त निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि साफ-सफाई और छिड़काव कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी, अपर जिलाधिकारी नगर सत्यम मिश्रा, अपर नगर आयुक्त दीपेन्द्र कुमार, उप जिलाधिकारी सदर अभिषेक सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव का समापन समारोह 8 अगस्त को

प्रयागराज। आजादी के अमर सेनानियों की स्मृति में मनाया जा रहा काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव अब अपने समापन की ओर है। इसका समापन समारोह 8 अगस्त 2025 को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में पूर्वाह्न 10:00 बजे से किया जाएगा।समापन अवसर पर प्रभात फ़ेरी, मोटरसाइकिल तिरंगा रैली, तिरंगा मेला, पुलिस बैंड द्वारा राष्ट्रधुन वादन, शहीद स्मारकों पर श्रद्धांजलि, और ''एक पेड़ मां के नाम'' वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रमों के साथ-साथ भाषण, निबंध लेखन, सुलेख लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी अभिलेख प्रदर्शनी जैसे आयोजन भी होंगे।प्रभात फ़ेरी का आयोजन हनुमान मंदिर चौराहा से गेट नंबर 3, आजाद पार्क तक किया जाएगा जबकि मोटरसाइकिल रैली सुभाष चौराहा (सिविल लाइंस) से प्रारंभ होकर आजाद पार्क तक जाएगी।समारोह की सफलता के लिए मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह ने जिला विकास अधिकारी को नोडल अधिकारी, तथा क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी एवं पाण्डुलिपि अधिकारी को सह नोडल अधिकारी नामित किया है।

शंकरगढ़ के सतगुरु अस्पताल पर ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

इलाज के नाम पर लाखों की वसूली का आरोप, मौत के बाद परिजनों को नहीं सौंपी गई बॉडी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

प्रयागराज। शंकरगढ़ क्षेत्र में संचालित सतगुरु अस्पताल एक बार फिर विवादों में घिर गया है। स्थानीय ग्रामीणों ने अस्पताल प्रशासन पर इलाज के नाम पर लाखों रुपये वसूलने और लापरवाही बरतने का गंभीर आरोप लगाया है।मामला एक सांप के काटने से पीड़ित युवक का है, जिसे परिजन गंभीर हालत में सतगुरु अस्पताल लेकर पहुंचे थे। आरोप है कि युवक को भर्ती करने के बाद अस्पताल प्रबंधन ने इलाज के लिए लाखों रुपये की मांग की, लेकिन उचित इलाज न मिलने पर उसकी मौत हो गई।पीड़ित परिजनों का कहना है कि अस्पताल की लापरवाही और पैसे की लालच ने युवक की जान ले ली, और अब अस्पताल प्रशासन बकाया बिल चुकाने तक शव सौंपने से मना कर रहा है। इससे आक्रोशित ग्रामीणों ने अस्पताल के बाहर हंगामा किया और कार्रवाई की मांग की।सूचना पर शंकरगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को शांत कराया। परिजनों ने जिला प्रशासन से अस्पताल के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्रयागराज में रोजगार महाकुंभ

प्रयागराज। युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर आने वाला है। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, प्रयागराज एवं नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, हनुमानगंज प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में 12 और 13 अगस्त 2025 को दो दिवसीय रोजगार महाकुंभ 2025 का आयोजन किया जा रहा है। यह वृहद रोजगार मेला नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित होगा।इस रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की लगभग 55 प्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी और करीब 8500 रिक्त पदों पर अभ्यर्थियों का साक्षात्कार के माध्यम से चयन किया जाएगा। हाई स्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक, आईटीआई, डिप्लोमा, बीटेक आदि योग्यताधारी अभ्यर्थी इस मेले में हिस्सा ले सकते हैं।रोजगार मेले में प्रतिभाग करने के लिए अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल (rojgaarsangam.gov.up.in) पर Jobseeker विकल्प के माध्यम से पंजीकरण कर ââActive Rojgaar Melaaââ सेक्शन में आवेदन करना होगा। साथ ही, मेले में प्रवेश के लिए बारकोड स्कैन करना अनिवार्य है, जिसे सेवायोजन कार्यालय और विश्वविद्यालय परिसर के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया गया है।राजीव कुमार यादव, सहायक निदेशक सेवायोजन प्रयागराज ने युवाओं से इस अवसर का भरपूर लाभ उठाने की अपील की है।

नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया निरीक्षण

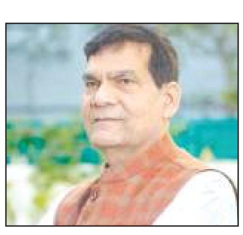

लखनऊ। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री श्री ए.के. शर्मा ने बाढ़ प्रबंधन एवं राहत कार्यों की वास्तविक स्थिति का जायजा लेने हेतु अपने दो दिवसीय दौरे पर भदोही, वाराणसी, मऊ एवं जौनपुर जनपदों में व्यापक जनसंपर्क किया। मंत्री श्री शर्मा ने बाढ़ प्रभावित बस्तियों एवं मोहल्लों में जाकर आमजन से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याएं जानीं और मौके पर समाधान के निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान आयोजित समीक्षा बैठकों में मंत्री श्री शर्मा ने जनप्रतिनिधियों से फीडबैक लिया।जौनपुर में समीक्षा बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने अवगत कराया कि विद्युत आपूर्ति की स्थिति अच्छी है परंतु निचले स्तर के कुछ कर्मचारी लगातार लापरवाही कर रहे हैं। इसके उपरांत ऊर्जा मंत्री ने अधीक्षण अभियंता को निर्देशित किया कि लापरवाही करने वाले कर्मचारियों को चिन्हित कर उन पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करें।ऊर्जा मंत्री ने लखनऊ स्थित संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रभावित क्षेत्रों में जलस्तर में कमी आते ही प्रभावित क्षेत्रों में युद्धस्तर पर सफाई अभियान चलाया जाए तथा विद्युत आपूर्ति को त्वरित गति से बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि जिला स्तरीय कंट्रोल रूम के माध्यम से दैनिक प्रगति की समीक्षा करते हुए समस्त कार्यों की रियल टाइम मॉनिटरिंग की जाए। उन्होंने क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मर, तार, पोल आदि की मरम्मत कार्य युद्ध स्तर पर करने तथा बिजली से जुड़े सभी खतरों से बचाव हेतु सुरक्षा मानकों के पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।श्री शर्मा ने यह भी कहा कि सरकार जनता के साथ खड़ी है और हर प्रभावित परिवार तक राहत और मदद पहुंचाना प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को टीम भावना से कार्य करते हुए संवेदनशीलता एवं तत्परता के साथ राहत कार्यों को अमल में लाने के निर्देश दिए।

थानाध्यक्ष पर पत्रकार के साथ बदसलूकी का आरोप

गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के एक पत्रकार ने थानाध्यक्ष गोला पर समाचार संकलन के दौरान गाली गुप्ता देने व धमकी आदि का आरोप लगाते हुए क्षेत्राधिकारी गोला की अनुपस्थिति में कार्यालय प्रभारी को पत्रक दिया है तथा कार्यवाही की मांग किया है। कौवाडील निवासी एचडी शर्मा ने पुलिस को दिए पत्रक के माध्यम से बताया कि वह जनसंदेश टाइम्स अखबार में पत्रकार व तहसील प्रभारी है।बीते छह अगस्त को दिन में 2:23 बजे पंजाब नेशनल बैंक गोला बाजार में एक ठगी व जालसाजी की सूचना मिलने पर समाचार संकलन हेतु गया था।उसी दौरान गोला पुलिस पीड़ित व्यक्ति के साथ बैंक में पहुंची तो मैं समाचार संकलन हेतु पीड़ित व्यक्ति से पुछताछ करना चाहा तो थानाध्यक्ष मुझे गाली देते हुए मुझे मारने का प्रयास किए और गाली गुप्ता देने के साथ ही थाने में बंद करके पीटने की धमकी देने लगे।मैं किसी तरह से पीछे हटकर उनके वार से बचा।इस दुर्व्यवहार की सारी घटना बैंक के सीसीटीवी कैमरे में दर्ज है तथा वहां उपस्थित बैंक के कर्मचारियों व ग्राहकों ने भी देखा है।इस घटना से मैं काफी पीड़ित हूं।इस संबंध में सीओ गोला से बातचीत करने का प्रयास किया गया लेकिन मोबाइल स्विच ऑफ था।

किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले गया संतकबीरनगर का युवक

गोरखपुर। थाना क्षेत्र के एक गांव की एक किशोरी की मां की तहरीर पर पुलिस ने रवि कुमार पुत्र बबलू ग्राम जमुनी कला थाना महुली संतकबीरनगर के खिलाफ बीएनएस की धारा 137(2) के तहत केस दर्ज कर किशोरी की तलाश में जुटी हुई है। थाना क्षेत्र के एक गांव की किशोरी की मां ने थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बीते 2 जुलाई को शाम 4 बजे के करीब हमारी बेटी को रवि कुमार पुत्र बबलू ग्राम जमुनी कला थाना महुली संतकबीरनगर ने अछियांवा बाग से बहला फुसलाकर कर भगा ले गया। काफी खोजबीन करने के बाद जब बेटी का कुछ पता नहीं चला तो गुरुवार को थाने में तहरीर देकर नामजद केस दर्ज कराया। इस संदर्भ में थानाध्यक्ष मदन मोहन मिश्र ने बताया कि किशोरी की मां की तहरीर पर अपहरण का मुकदमा दर्ज कर किशोरी की तलाश की जा रही है।

दिनदहाड़े हुई नगदी सहित पांच लाख के जेवर चोरी

गोरखपुर। थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बुदहट निवासी कृष्ण मोहन शुक्ला के तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ बीएनएस की धारा 305(थ) के तहत मुकदमा दर्ज कर चोरी का खुलासा करने में जुटी हुई है। थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बुदहट निवासी कृष्ण मोहन शुक्ला ने थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बुधवार हम गांव के एक युवक के दाह-संस्कार में अयोध्या गए हुए थे, पत्नी आंगनबाड़ी बिन्दा देवी कम्पोजिट विद्यालय हरपुर बैठक में गई हुई थीं और छोटा लड़का मानस शुक्ला पढ़ने गया था, मकान में ताला बन्द था, घर पर कोई नहीं था कि दोपहर बारह बजे के करीब छत पर चढ़ कर सीढ़ी के रास्ते घर में घुसकर कर बहू के कमरे में रखा आलमारी का लाकर सब्बल से तोड़ कर उसमें रखा हार सेट, झाली, बिंदी सेट, बिछिया पांच, नथुनी दो, मंगलसूत्र दो, जेन्स अंगूठी दो, चैन एक, चांदी का सिक्का दो, नथुनी तीन, लेडिज अंगूठी तीन, सात पायल, पावजेब दो और तेइस हजार रुपए नकद अज्ञात चोरों ने चुरा ले गए।

फाफामऊ थाना प्रभारी की तत्परता से युवक की बची जान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

प्रयागराज। फाफामऊ थाना क्षेत्र में एक बड़ी घटना टल गई, जब समय रहते पुलिस ने एक युवक को गंगा पुल से कूदकर आत्महत्या करने से बचा लिया। गुरुवार दोपहर फाफामऊ थाना प्रभारी अश्विनी कुमार सिंह को सूचना मिली कि 34 वर्षीय विजय कुमार गुप्ता, निवासी मान्धाता, जनपद प्रतापगढ़, पारिवारिक विवाद से परेशान होकर फाफामऊ गंगा पुल पर आत्महत्या की कोशिश कर रहा है।सूचना मिलते ही थाना प्रभारी ने सर्विलांस की मदद से युवक की लोकेशन ट्रेस की और तत्काल मौके पर पहुंचकर टीम सहित उसे समझा-बुझाकर आत्मघाती कदम उठाने से रोका। विजय को सुरक्षित पुल से हटाकर थाने लाया गया, जहां उसकी काउंसलिंग की गई।युवक ने बताया कि वह घरेलू विवाद से मानसिक रूप से परेशान था और इसी कारण यह कदम उठाने जा रहा था। फाफामऊ पुलिस ने युवक को सकुशल उसके परिजनों को सौंपने के लिए प्रतापगढ़ पुलिस के हवाले कर दिया।इस मौके पर उप निरीक्षक दिनेश यादव, वंश बहादुर सिंह और अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे। थाना प्रभारी अश्विनी कुमार सिंह की त्वरित कार्रवाई की सराहना क्षेत्र में हो रही है।

बारिश में सड़क धंसने से ग्रामीणों में आक्रोश, आवाजाही बाधित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मलिहाबाद, लखनऊ। मलिहाबाद विकासखंड के रानीखेड़ा बंजारनखेड़ा मार्ग पर बारिश के चलते सड़क धंसने की घटना सामने आई है। घटना के बाद प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से रास्ते पर आवाजाही रोक दी है, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय निवासी आदित्य, अविनाश, सचिन, रंजीत और अमित ने बताया कि अचानक सड़क के बीचों-बीच जमीन धंसने लगी और कुछ ही देर में वहां एक बड़ा गड्ढा बन गया। गनीमत रही कि उस समय कोई व्यक्ति या वाहन वहां से गुजर नहीं रहा था। यह पहली बार नहीं है जब इस इलाके में जमीन धंसी है। इससे पहले भी इस मार्ग पर 5-6 फीट गहरा गड्ढा बन चुका है। इस बार घटना बंजारनखेड़ा गांव के समीप हुई है, जिससे ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त हो गया है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि बार-बार होने वाली इन घटनाओं के बावजूद जिम्मेदार अधिकारी ना तो स्थायी समाधान कर रहे हैं और ना ही कारणों की जांच। ग्रामीणों ने सड़क की जल्द मरम्मत और स्थायी समाधान की मांग की है। उन्होंने चेताया है कि यदि समय रहते समस्या का हल नहीं निकाला गया तो कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है जिसमें वाहन या राहगीर इसकी चपेट में आ सकते हैं।

बहनों ने जवानों के कलाई पर बांधी राखियां

गोरखपुर । गुरुवार को सक्षम उतर प्रदेश और गक्टक्के सयुक्त तत्वाधान में आयोजित रक्षाबंधन कार्य क्रम में आए सम्मानित बंधु और शहर के सुप्रसिद्ध संघठन और स्कूल के बच्चे शिक्षण गण को साधु वाद में उनका हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं सक्षम टीम के डॉ डी के गुप्ता जी गोरखपुर महानगर अध्यक्ष प्रदेश कार्याध्यक्ष प्रमोद कुमार दूबे महानगर ईकाई सचिव श्री योगेश जी सह सचिव अनीता शर्मा जी कार्यालय प्रमुख रवि जी डॉ श्वेता सिंह जी शिखा जी परमात्मा जी विशिष्ट आमंत्रित सदस्य और चंचला जी शांति जी और सैकड़ों द्वदन्द्ध के जवानों को राखी बंधन कार्य क्रम बनाया और संचालन नलनी जी और योगेश ने किया उद्बोधन महानगर अध्यक्ष डॉ डी के गुप्ता जी और आभार प्रमोद कुमार दूबे जी किया है । पूरे कार्यक्रम में माँ सेवा संस्थान शाहपुर की निदेशिका अनिता शर्मा ने बढ़चढ़ कर हिस्सेदारी की ।

कमिश्नर और डीएम ने किया काकोरी शहीद स्मारक का निरीक्षण

लखनऊ में काकोरी ट्रेन एक्शन वर्षगांठ की तैयारियों का जायजा

काकोरी शहीद स्मारक पर तैयारियां जोरों पर, पुलिस उपायुक्त और वरिष्ठ अधिकारियों ने किया निरीक्षण

कार्यक्रम की भव्यता के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध

कैनविज टाइम्स संवाददाता

काकोरी, लखनऊ। काकोरी ट्रेन एक्शन की वर्षगांठ को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में हैं। इसी के मद्देनजर गुरुवार को काकोरी शहीद स्मारक पर चल रही तैयारियों का गहन निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण का नेतृत्व पुलिस उपायुक्त पश्चिम ने किया। इस दौरान एडीसीपी पश्चिमी, मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब और जिलाधिकारी श्री विशाख जी भी मौजूद रहे।निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी श्री अजय जैन, अपर जिलाधिकारी नगर पूर्वी श्री महेन्द्रपाल सिंह, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व श्री राकेश कुमार सिंह और अपर जिलाधिकारी ट्रांस-गोमती श्री राकेश सिंह समेत विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। सभी अधिकारियों ने मिलकर तैयारियों का जायजा लिया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।अधिकारियों ने सभी व्यवस्थाओं को जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्षगांठ के कार्यक्रम से पहले ही सभी तैयारियां पूरी कर ली जानी चाहिए। इसके साथ ही, बारिश के मौसम को देखते हुए विशेष सतर्कता बरती जा रही है। नगर निगम को डिवाटरिंग पम्प और जेनसेट की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं ताकि बारिश की स्थिति में किसी भी तरह की परेशानी न हो।काकोरी ट्रेन एक्शन वर्षगांठ एक ऐतिहासिक घटना की स्मृति का प्रतीक है, और प्रशासन इस आयोजन को गरिमा और भव्यता के साथ संपन्न कराने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

स्वरोजगार के लिए अनुसूचित जाति के युवाओं को 50 हजार तक अनुदान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

विशेष केंद्रीय सहायता द्वारा संचालित पीएम-अजय योजना के तहत अनुसूचित जाति के युवाओं को स्वरोजगार के लिए ऑनलाइन व ऑफलाइन आवेदन शुरू हो चुके है

प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह ने बताया कि विशेष केंद्रीय सहायता द्वारा संचालित पीएम-अजय योजना के तहत अनुसूचित जाति के युवाओं को स्वरोजगार के लिए 50,000 तक का अनुदान प्रदान किया जा रहा है। योजना का उद्देश्य समूह या क्लस्टर के रूप में स्वरोजगार इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा देना है।इस योजना में वही अभ्यर्थी पात्र होंगे जिनकी आयु 18 से 50 वर्ष के बीच हो, वे प्रयागराज जनपद के निवासी एवं अनुसूचित जाति के हों। लाभार्थी साक्षर, किसी अन्य योजना में डिफाल्टर न हों और एक्रठत्रख स्कोर अच्छा हो। आवेदन ऑनलाइन पोर्टल द्धप्ण्ध्ः//द्दन्थद्वप्-द्धद्व-थद्वद.फ्ध्पद्धदद.द्धद्व के माध्यम से या विकास भवन, कमरा नंबर 82/83 में जाकर ऑफलाइन किया जा सकता है। परियोजना लागत का 5% अंशदान बैंक में जमा करना होगा, जबकि शेष राशि बैंक ऋण के रूप में दी जाएगी।. छात्रावास सुविधा के लिए आवेदन 31 अगस्त तक, निर्धन व मेधावी छात्रों को मिलेगा लाभसमाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों में आवासीय सुविधा हेतु आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2025 निर्धारित की गई है। डॉ. भीमराव अंबेडकर छात्रावास (चांदपुर सलोरी), राजकीय छात्रावास (बालिका) ऋत्ज्ञ परिसर और छात्रावास (बालक) चैथम लाइन प्रयागराज में बीए, बीटेक, डिप्लोमा व पीजी स्तर के विद्यार्थियों को प्रवेश मिलेगा।प्रवेश हेतु 70% सीटें अनुसूचित जाति/जनजाति और 30% पिछड़ा एवं सामान्य वर्ग के लिए आरक्षित हैं। आवेदन केवल वही छात्र कर सकते हैं जिन्हें समाज कल्याण विभाग से छात्रवृत्ति प्राप्त होती है। इच्छुक छात्र द्धप्ण्ध्पः//फ्द्धद्वप.द्धद्व पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। जिला समाज कल्याण अधिकारी रामशंकर पटेल ने छात्रों को समय रहते आवेदन करने की अपील की है।

स्वच्छता के संकल्प के साथ आजादी का जश्न मनायेगा रेलवे प्रशासन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। रेलवे प्रशासन द्वारा देश की आजादी का जश्न स्वच्छता के संकल्प के साथ सम्पूर्ण भारतीय रेल पर दो चरणों में मनाया जा रहा है, जिसके प्रथम चरण के सातवें दिन 07 अगस्त,2025 को पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर स्वच्छता सम्बंधित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में 07 अगस्त,2025 को वाराणसी मण्डल के बनारस,वाराणसी सिटी,गाजीपुर सिटी,बलिया,मऊ,आजमगढ़, प्रयागराज रामबाग,देवरिया सदर, भटनी, सीवान एवं छपरा स्टेशनों स्टेशनों पर कार्यरत रेलकर्मियों के साथ मिलकर स्वच्छता सम्बन्धी पोस्टर एवं बैनर के साथ प्रभात फ़ेरी निकाली गई तथा श्रमदान किया गया ।
बनारस स्टेशन पर एकल उपयोगी प्लास्टिक के उपयोग से बचने हेतु सभी को जागरूक किया गया। सीवान स्टेशन पर स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली गई, नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया तथा स्वच्छता हेतु श्रमदान किया गया। आजमगढ़, गाजीपुर सिटी, वाराणसी सिटी, भटनी, प्रयागराज रामबाग, बलिया, छपरा तथा मऊ स्टेशनों पर रेल यात्रियों और कर्मचारियों में स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता लाने हेतु सार्वजनिक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया ꟷ साथ ही साथ अलग कूड़ेदान लगाकर कचरे के पृथक्करण को प्रोत्साहित करने हेतु, रेलवे परिसर में जल निकायों की सफाई के लिए और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान कार्यक्रम एवं श्रमदान का आयोजन किया गया ।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री अनिका गौतम के आधार कार्ड में त्रुटिवश नाम अशिश गौतम दर्ज हो गया जो कि गलत है। मेरी पुत्री का सही नाम अनिका गौतम है। मेरी पुत्री को अनिका गौतम के नाम से जाना व पहचाना जाए। **आकाश कुमार गौतम, निवासी ग्राम मामपुर बाना, तहसील बख्शी का तालाब, जिला लखनऊ।**

आफत में नौनिहालों की जान, जर्जर भवन ही विद्यालय की पहचान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। शिक्षा के मंदिर माने जाने वाले सरकारी विद्यालय आज खुद अस्तित्व के संकट से जूझ रहे हैं। जिले के कई सरकारी स्कूल जर्जर भवनों में संचालित हो रहे हैं, जहां पढ़ाई तो हो रही है, लेकिन बच्चों की जान हर पल खतरे में है।विद्यालयों की हालत ऐसी है कि कहीं छत से प्लास्टर झड़ रहा है, तो कहीं दीवारें दरारों से भरी हैं। बरसात के मौसम में स्थिति और भी भयावह हो जाती है। स्कूलों के जर्जर भवन विभागीय उदासीनता के कारण कभी भी दुर्घटना का बड़ा कारण बन सकता है। मामला है बांसगांव विकास खण्ड के बगही ग्राम पंचायत के हटवार गांव मे संचालित प्राथमिक विद्यालय हटवार का जिसकी स्थापना 1960 में किया गया तथा भवन का निर्माण सर्व शिक्षा अभियान योजना के तहत 1990 मे कराया गया। 1960 मे बने भवन के पीछे आंगनवाड़ी भवन का निर्माण कराया गया है लेकिन जर्जर भवन प्रांगण में होने के नाते बच्चे उसमें खेलते हैं जिससे कभी भी कोई भी घटना घट सकती हैं। 1990 मे बना यह भवन भी जर्जर हो चुका है लेकिन उसमें भी बच्चों के साथ विद्यालय कार्यालय भी चलता है। विद्यालय में बच्चों की संख्या 55 की होने के बावजूद भी बच्चों के लिए पीने के पानी की कोई व्यवस्था नहीं है विद्यालय प्रांगण में एक नल है वह भी दुषित पानी देता हैं।

उत्तर रेलवे

शुद्धिपत्र

प्रेष्य: निविदा संख्या: डब्लू– सी.बी.–सी.सी. टी. वी. –2025–02 के संबंध में संशोधन सूचना।
संदर्भ: निविदा सूचना संख्या: उ.रे./आर.एस.डब्लू./जुलाई/सी.सी.टी.वी./2025/02 दिनॉक: 11.07.2025.
कार्य का विवरण: 850 एम.ई.एम.यू. (MEMU), डी.ई.एम.यू. (DEMU) और ई.एम.यू. (EMU) कोचों तथा 3–फेज एयर कंडीशंड ए.सी. ई.एम.यू. (AC/EMU) कोचों में IP आधारित वीडियो निगरानी प्रणाली (VSS) की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण एवं कमीशनिंग (SITC)।"
उपरोक्त निविदा दस्तावेज में निम्नलिखित संशोधन किए गए हैं:

क्रम सं.	विवरण	पूर्व निर्धारित	संशोधित
1	निविदा बंद होने की तिथि व समय	12.08.2025, 15:00 बजे	21.08.2025, 15:00 बजे

निविदा की अन्य सभी शर्तें यथावत रहेंगी। सभी संशोधन www.ireps.gov.in वेबसाइट पर देखे और डाउनलोड किए जा सकते हैं ।
सं.: डब्लू– सी.बी.–सी. सी. टी. वी. –2025–02 दिनांक: 07.08.2025
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 2414/25

स्कूल में 13 वर्षीय छात्रा से शिक्षक ने की छेड़छाड़

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के प्रतिष्ठित सेंट जोज़फ स्कूल (बालागंज ब्रांच) में सातवीं कक्षा की 13 वर्षीय एक छात्रा के साथ शिक्षक द्वारा छेड़छाड़ का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पीड़ित छात्रा ने अपने गणित के शिक्षक मोहित मिश्रा पर गलत नियत से छूने और वॉशरूम जाते समय पीछा करने का गंभीर आरोप लगाया है। इस घटना ने स्कूल जैसे सुरक्षित माने जाने वाले स्थान की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। पीड़ित छात्रा के अनुसार, शिक्षक मोहित मिश्रा ने कई दिनों तक उसका मानसिक उत्पीड़न किया। बच्ची ने बताया कि शिक्षक गलत इरादे से उसे बार-बार छूता था और वाशरूम जाते समय उसका पीछा करता था, जिससे वह डर और तनाव में थी। आजिज़ आकर बच्ची ने पूरी बात अपने परिजनों को बताई। घटना की जानकारी होने पर बच्ची के पिता मोहम्मद नदीम खान स्कूल पहुंचे और प्रशासन से जवाब मांगा। नदीम ने आरोप लगाया कि स्कूल प्रबंधन ने शिक्षक को स्कूल परिसर में ही छिपा लिया और उनसे मुलाकात नहीं करने दी। इतना ही नहीं, छात्रा को भी स्कूल के शिक्षकों ने धमकाकर चुप रहने को कहा। मो. नदीम खान ने बताया, ''जब मेरी बेटी ने मोहित मिश्रा की हरकतों के बारे में बताया, तो मैं तुरंत स्कूल गया। लेकिन प्रिंसिपल और स्कूल प्रबंधन ने न तो मुझसे ठीक से बात की और न ही आरोपी को मेरे सामने पेश किया।'' दूसरी ओर, स्कूल कोऑर्डिनेटर ने दावा किया कि आरोपी शिक्षक को तत्काल निलंबित कर दिया गया है और स्कूल के सीसीटीवी फुटेज में ऐसी कोई घटना दर्ज नहीं हुई। सआदतगंज, फाजिलनगर निवासी मोहम्मद नदीम खान ने थाना ठाकुरगंज में आरोपी शिक्षक के खिलाफ तहरीर दी, जिसके आधार पर पुलिस ने मोहित मिश्रा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इस घटना ने ''बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ'' जैसे नारों की हकीकत पर सवाल उठाए हैं। परिजनों और स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है। स्कूल प्रशासन की निगरानी व्यवस्था और बच्चों की सुरक्षा को लेकर उठ रहे सवालों ने शिक्षा संस्थानों की जवाबदेही पर बहस छेड़ दी है। स्थानीय पुलिस ने कहा कि जांच में सभी पहलुओं को ध्यान में रखा जाएगा और दोषी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

युवती को बहला-फुसलाकर ले जाकर विशेष समुदाय के आरोपी ने किया दुष्कर्म

मोहनलालगंज, लखनऊ । मोहनलालगंज थाना क्षेत्र एक गांव से गायब हुई एक हिंदू युवती को पुलिस ने सकुशल बरामद कर लिया है। युवती को बहला-फुसलाकर ले जाकर दुष्कर्म करने के आरोप में पुलिस ने विशेष समुदाय के युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार पीड़िता के परिजनों ने बीते मंगलवार को मोहनलालगंज थाने में लिखित शिकायत की थी कि उनकी बेटी बीते रविवार को घर से निकली थी लेकिन वापस नहीं लौटी। परिजनों ने जब तलाश की तो पता चला कि अनस सिद्दीकी नामक युवक उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है।प्रभारी निरीक्षक दिलेश कुमार सिंह ने बताया कि पीड़ित पिता की तहरीर के आधार पर में मुकदमा पंजीकृत किया और युवती को बीते बुधवार को सकुशल बरामद कर लिया। पीड़िता के बयान के आधार पर अनस सिद्दीकी पर बलात्कार व अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा बढ़ाया गया। इंस्पेक्टर दिलेश कुमार सिंह ने बताया गुरुवार को पुलिस ने खास मुखबिर की सूचना पर आरोपी अनस सिद्दीकी को गोसाईगंज थाना क्षेत्र के इंदिरा नहर के पास, से दबोच लिया। आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है।यह पूरी कार्रवाई एसीपी मोहनलालगंज रजनीश वर्मा के निर्देशन और थाना प्रभारी दिलेश कुमार सिंह की सक्रियता में अंजाम दी गई।

सपा की मासिक बैठक सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय 6, लाजपत राय भवन, कैसरबाग, लखनऊ पर मासिक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' ने की वहीं संचालन जिला महासचिव शब्बीर अहमद खान ने किया। बैठक को सम्बोधित करते हुए जिलाध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' ने कहा कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्देश पर विधानसभा वार पीडीए चौपालों का आयोजन निरन्तर 2027 तक किया जाता रहेगा। आगामी स्नातक एमएलसी चुनाव में पार्टी प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करने हेतु बूथ स्तर पर स्नातक मतदाता बनाये जाये के निर्देश देने के साथ ही जिला समाजवादी पार्टी द्वारा जनपद के प्रत्येक ब्लाक पर बूथ अध्यक्षों का सम्मेलन होना तय हुआ, जिसकी तैयारियों को लेकर चर्चा की गयी। 18 वर्ष पूर्ण कर चुके नये मतदाताओं के नामों को मतदाता सूची में सम्मिलित कराने के निर्देश दिये। बैठक के समापन के बाद दिवंगत पूर्व राज्यपाल सत्पाल मलिक, पूर्व मुख्यमंत्री शीबू सुरेन के साथ ही जिला लखनऊ निवासी कुलदीप यादव, एडवोकेट राकेश यादव, सूरज यादव की दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए 2 मिनट का मौन रखकर शोक सभा की गयी। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रदेश उपाध्यक्ष सी0एल0 वर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष नागेन्द्र सिंह यादव, पूर्व विधायक अम्ब्रीश सिंह पुष्कर, राजेन्द्र यादव, पूर्व नगर अध्यक्ष सुशील दीक्षित, प्रदेश सचिव विजय सिंह यादव, चौधरी ज्ञान सिंह, वीर बहादुर सिंह, एस0यू0 खाान भईया जी, अमरपाल सिंह, अनिल कुमार यादव, वरिष्ठ नेता भरत यादव, हरिशंकर यादव, जिला उपाध्यक्ष/जिला निर्वाचन प्रभारी टी0बी0 सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यूथ ब्रिगेड नागेन्द्र सिंह यादव, रामप्रकाश यादव, जिला उपाध्यक्ष बचान सिंह यादव के साथ अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पूर्व प्रधान के घर से लाइसेंसी रिवॉल्वर और नकदी चुराने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रहीमाबाद पुलिस ने रिवॉल्वर और 6,600 रुपये नगद किये बरामद

रहीमाबाद/लखनऊ। रहीमाबाद थाना क्षेत्र के मिर्ज़ापुर गांव में पूर्व प्रधान के घर से हुई चोरी की घटना का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके पास से लाइसेंसी रिवाल्वर, पांच जिंदा कारतूस और 6,600 रुपये नकद बरामद किए हैं। पुलिस के अनुसार, घटना 31 जुलाई की रात की है, जब पूर्व प्रधान धर्मेंद्र सिंह के घर से लाइसेंसी रिवॉल्वर और नगदी चोरी हुई थी। धर्मेंद्र रात 11 बजे तक घर के बाहर बरामदे में ग्रामीणों के साथ बैठे थे। अगली सुबह जब वह कहीं जाने को तैयार हुए तो पाया कि घर के बाहरी हिस्से में रखी अलमारी से रिवाल्वर और 10 हज़ार रुपये नगद गायब हैं। पीड़ित ने तुरंत रहीमाबाद थाने में तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और गुरुवार को मुखबिर की सूचना पर आरोपी को कटियारी फार्म हाउस, सदन मार्केट के पास से गिरफ्तार कर लिया। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक आनंद द्विवेदी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान विकास गुलरहिया के रूप में हुई है, जो खगेश्वर खेड़ा उमरावल रोड के पास देखा गया था। उसके पास से चोरी किया गया लाइसेंसी रिवाल्वर, 32 बोर के पांच जिंदा कारतूस, और 6,600 रुपये नकद बरामद हुए हैं।

फ़ेक साइड बनाकर ठगी करने वाला गिरोह का पर्दाफाश

दिल्ली से दो आरोपी गिरफ़्तार अन्य की तलाश जारी ठगी में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों सहित नकदी बरामद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सरोजनीनगर-लखनऊ। सरोजनी नगर थाना क्षेत्र में फ़ेक बेबसाइट बनाकर धोखाधडी करके क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने तथा उसमें बीमा जैसे किसी प्लान के एक्टिव होने का झांसा देकर लाखों रुपये की ठगी करने वाले अन्तर्राज्यीय गैंग का खुलासा किया गया। डी सी पी दक्षिण के अनुसार सरोजनीनगर पुलिस व साइबर क्राइम सेल टीम के संयुक्त अभियान के तहत फर्जी बेबसाइट बनाकर लोगों को क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढाने व उसमें बीमा जैसे किसी प्लान के एक्टिव होने का झांसा देकर लिंक भेजकर क्रेडिट कार्ड का ओटीपी आदि की जानकारी प्राप्त कर ऑनलाइन घोखाधड़ी करके ठगी करने वाले गिरोह का खुलासा किया गया। गिरोह के 02 सदस्यों राहुल लखेडा पुत्र राम चन्द्र लखेडा निवासी सी 239 हरिनगर पार्ट 2 जैतपुर बदरपुर साउथ दिल्ली उम्र 28 वर्ष व विकास कुमार पुत्र गुमान सिंह नि0 डी 22 गली नं0 1 ओमनगर मीठापुर थाना जैतपुर बदरपुर साउथ दिल्ली उम्र करीब 28 वर्ष को ओमनगर मीठापुर गली नं0 01 मकान सं0 डी 22 नई दिल्ली से गिरफ्तार किया गया। इनके पास से ठगी में इस्तेमाल करने वाले उपकरण

25 मोबाइल फोन विभिन्न कम्पनी के 01 लैपटाप, 02 राउटर ,24 सिमकार्ड (भिन्न-भिन्न कम्पनी के), और 41250/- रुपये नगद बरामद किए गए। बीती 24 जून को जितेन्द्र कुमार पुत्र स्व0 नौमी लाल नि0 बाग नं0 2 बेहसा थाना सरोजनीनगर लखनऊ के द्वारा सूचना दी गयी कि अज्ञात मोबाइल द्वारा फोन करके उनसे कार्ड बन्द करने के सम्बन्ध में सूचना मांगने के नाम पर पैन कार्ड नं, ओटीपी इत्यादि पूछकर क्रेडिट कार्ड से 160432/- रुपये की फ्लिपकार्ट से खरीदारी कर ली गयी। अभियुक्तों ने पूछताछ में बताया कि ये लोग आपस में मिलकर बैंक के नाम से एक फ़ेक बेबसाइट व फ़ेक एप्लीकेशन बनवाते हैं। तथा लोगों को क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने अथवा उसमें बीमा जैसे किसी प्लान के एक्टिव होने का झांसा देते हैं। झासे में लेने के बाद उन लोगों को फ़ेक बेबसाइट एप्लीकेशन का लिंक भेजते है तथा उस लिंक को ओपन करके क्रेडिट कार्ड का डेटा भरने को कहते हैं। जब लोग उसमें डेटा भर देते हैं तो हम लोगों को सारी जानकारी मिल जाती है। अन्त में ओटीपी की जानकारी प्राप्त होते ही ये लोग उस क्रेडिट कार्ड के पैसों से ऑनलाइन मोबाइल आर्डर कर देते हैं। मोबाइल प्राप्त करके उसे मार्केट से कम दामों पर बिल के साथ बेच देते हैं। इस तरह इन्होंने कई लोगों को शिकार बनाया तथा लाखों रुपयों की ठगी की है।

नगराम के बहरौली में भारी बारिश से मकान भर-भरा कर ढहा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गृहस्थी का सामान दबकर नष्ट, लेखपाल ने किया मौके का निरीक्षण

नगराम, लखनऊ । पिछले कई दिनों से लगातार हो रही बारिश ने ग्रामीणों की मुसीबतें बढ़ा दी हैं। बारिश के चलते गुरुवार की भोर करीब चार बजे बहरौली गांव निवासी चंदन गुप्ता का कच्चा मकान अचानक भरभराकर ढह गया। इस हादसे में घर के अंदर रखा राशन, बर्तन, कपड़े और अन्य जरूरी सामान मलबे में दबकर पूरी तरह से नष्ट हो गया। गनीमत यह रही कि हादसे के वक्त घर में मौजूद परिवार के सदस्य बाल-बाल बच गए। पीड़ित चंदन गुप्ता मेहनत-मजदूरी कर किसी तरह अपने परिवार का पेट पालते हैं। उन्होंने बताया कि लगातार हो रही बारिश से दीवारें कमजोर हो गई थीं, लेकिन मकान इस तरह अचानक गिर जाएगा, इसकी कल्पना भी नहीं की थी। हादसे के बाद परिवार खुले आसमान के नीचे आ गया है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे क्षेत्रीय लेखपाल आलोक वर्मा ने नुकसान का जायजा लिया। उन्होंने बताया कि मकान गिरने की घटना की रिपोर्ट तैयार कर उच्चाधिकारियों को भेज दी गई है। लेखपाल ने पीड़ित परिवार को शासन से मिलने वाली अहेतुक आर्थिक सहायता दिलाने का भरोसा भी दिलाया।

बीकेटी में विद्युत बंदी सूचना, इस क्षेत्र में नहीं आएगी तीन घंटे बिजली

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बीकेटी,लखनऊ । बीकेटी अंतर्गत विद्युत उपकेंद्र मामपुर बाना के स्विच यार्ड में 33 केवी मेन लाइन पर लगे खराब सीटी के बदलने का कार्य एवं सर्किट ब्रेकर टेस्टिंग का कार्य किया किया जायेगा जिस कारण 220 केवी विद्युत उपकेंद्र साढ़ामाऊ से बी के टी तहसील की 33 केवी का शट डाउन लिया जायेगा जिससे विद्युत उपकेंद्र मामपुर बाना से संचालित सभी क्षेत्र की सप्लाई शुक्रवार प्रातः 11.00 बजे से 2.00बजे दोपहर तक पूर्ण रूप से बाधित रहेगी।

डेंगू-मलेरिया को लेकर नगर निगम सतर्क, ड्रोन से छिड़काव जारी

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। बारिश के मौसम में डेंगू, मलेरिया जैसे रोगों के बढ़ते खतरे को देखते हुए नगर निगम लखनऊ पूरी तरह अलर्ट है। नगर आयुक्त गौरव कुमार के निर्देश पर शहर भर में एंटी लार्वा दवा का छिड़काव और फॉगिंग अभियान तेज़ कर दिया गया है। जहां पानी जमा होने की आशंका है, वहां विशेष निगरानी रखी जा रही है। टीमें तुरंत ऐसे स्थानों पर दवा का छिड़काव कर रही हैं। अधिकारियों को इन स्थलों की पहचान कर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। जहां मैन्युअल छिड़काव संभव नहीं, वहां ड्रोन से दवा का छिड़काव किया जा रहा है। गुरुवार को जोन 1 में बटलर पैलेस झील और जोन 2 में मोती झील पर ड्रोन से दवा का छिड़काव हुआ। इस दौरान दोनों जोनों के अपर नगर आयुक्त भी मौके पर मौजूद रहे। सभी जोनों में ड्रोन इस्तेमाल के निर्देश नगर स्वास्थ्य अधिकारी पी.के. श्रीवास्तव और नगर आयुक्त ने सभी ज़ेडएसओ व एसएफ़आई को निर्देश दिए हैं कि ड्रोन तकनीक का उपयोग झीलों, खाली भूखंडों और निर्माणाधीन स्थलों पर प्राथमिकता से करें।

व्यापारी ने लगाया रंगदारी मांगने का आरोप

बंथरा,लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। इलाके के एक व्यापारी को गाली गलौज सहित धमकाकर रंगदारी मांगने का मामला सामने आया है। व्यापारी के अनुसार आरोपियों ने कहा कि अगर मुझे रंगदारी नहीं मिली तो तुम्हें यहां रहना दुश्वार कर देंगे। पीड़ित की शिकायत पर बंथरा पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू की है। सिकंदरपुर बंथरा निवासी महेंद्र पुत्र स्वर्गीय बृजपाल सिंह ने लिखित तहरीर देकर शिकायत दर्ज कराई है। महेंद्र के अनुसार वह एक व्यापारी हैं। मंगलवार की शाम करीब 4:30 बजे जब वह हमेशा की तरह अपने किशनपुर कौड़िया रोड काका कॉलोनी के पास स्थित ऑफिस में बैठे थे तभी एक महिंद्रा एक्सयूवी (500) से अमन सिंह पुत्र चुन्नी सिंह निवासी हमीरपुर, शीतल पुत्र स्वर्गीय घूरु प्रसाद व अन्य दो व्यक्ति जो कि उनके रिश्तेदार बता रहे थे ऑफिस पर आए और बोले की तुम यहां प्लाटिंग का कार्य कर रहे हो, यहां पर मेरी इजाजत के बगैर कोई कार्य नहीं करता इसके लिए मुझे प्रतिमाह 50 हजार रुपए नहीं दोगे तो तुम्हारा यहां रहना दुश्वार कर दूंगा साथ ही गंदी-गंदी गाली सहित जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित द्वारा इसकी शिकायत मौके पर ही 112 नंबर पुलिस को की गई। बंथरा पुलिस ने मामले को दर्ज कर अपनी कार्रवाई शुरू की है।

प्लॉट की रजिस्ट्री के बाद भी नहीं मिला कब्जा, पीड़ित ने निगोहां थाने में दर्ज कराई एफआईआर

निगोहां, लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना क्षेत्र के टिकरा गांव में एक युवक के साथ प्लॉट खरीद के नाम पर धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। पीड़ित आनंद कुमार ने निगोहां थाने में दी गई तहरीर में बताया कि उन्होंने एक्में रेजीडेंसी प्लॉटिंग योजना के तहत 1200 वर्ग फीट का प्लॉट खरीदा था, जिसकी बाकायदा रजिस्ट्री भी कराई गई, लेकिन आज तक कब्जा नहीं मिला।पीड़ित आनंद कुमार निवासी रायल सिटी, बिजनोर रोड लखनऊ ने बताया कि उन्होंने मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र टिकरा, गांव स्थित गाटा संख्या 1204 के प्लॉट संख्या ई-366 को राहुल श्रीवास्तव पुत्र राजेश कुमार श्रीवास्तव, निवासी आदर्श नगर वेस्ट, विकासनगर से खरीदा था। रजिस्ट्री बीते 19 फरवरी 2024 को तहसील मोहनलालगंज में कराई गई थी। वादी का आरोप है कि रजिस्ट्री के बाद भी विपक्षी ने न तो कब्जा दिलाया और न ही जमीन पर कोई अधिकार सौंपा। जब वादी खुद मौके पर गया तो पता चला कि मौके पर ऐसा कोई प्लॉट मौजूद ही नहीं है। पीड़ित का कहना है कि कई बार संपर्क करने के बाद भी जब कोई जवाब नहीं मिला तो थक-हारकर उसने निगोहां थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर आरोपी राहुल श्रीवास्तव के खिलाफ सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर जांच शुरू कर दी है।थाना प्रभारी निगोहां अनुज कुमार तिवारी ने बताया कि मामले की विवेचना की जा रही है।

जनप्रिय युवा भाजपा नेता नीरज सिंह ने भाजपा कार्यालय मोहनलालगंज का किया उद्घाटन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मोहनलालगंज लखनऊ । मोहनलालगंज विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक अमरेश कुमार के नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन गुरुवार को भाजपा के वरिष्ठ नेता नीरज सिंह द्वारा रुद्राभिषेक पूजन के पश्चात फीता काटकर किया गया मोहनलालगंज स्थित भाजपा कार्यालय उद्घाटन कार्यक्रम में भारी संख्या में वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मोहनलालगंज भाजपा विधायक अमरेश कुमार के सुसज्जित

कार्यालय का उद्घाटन गुरुवार को वरिष्ठ भाजपा नेता एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बेटे नीरज सिंह ने रुद्राभिषेक पूजन के पश्चात फीता काटकर विधिवत उद्घाटन किया। वहीं भाजपा कार्यालय के उद्घाटन समारोह में पहुंचने से पहले मोहनलालगंज कस्बा चौकी के पास सैकड़ो की संख्या में उपस्थित भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष सुधांशु सिंह के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने जनप्रिय युवा भाजपा नेता नीरज सिंह का ढोल नगाड़ा आतिशबाजी और पुष्प वर्षा कर 51 किलो की माला पहनाकर योगी आदित्यनाथ जिंदाबाद नीरज सिंह जिंदाबाद के नारे लगाते हुए जोरदार स्वागत किया। भाजपा कार्यालय उद्घाटन कार्यक्रम में विधायक अमरेश रावत, पूर्व सांसद मंत्री कौशल किशोर, महापौर सुषमा खर्कवाल, पूर्व मंडल अध्यक्ष सुधांशु सिंह, राघवेंद्र प्रताप सिंह,शशांक शेखर सिंह, विनोद सिंह, प्रधान प्रभाकर त्रिवेदी, सुरेंद्र दीक्षित भाजपा के सभी मंडल अध्यक्ष, राजेश सिंह, योगेंद्र सिंह छोटू, अंजनी शुक्ला, प्रदीप सिंह अभय प्रताप सिंह सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे। वहीं सड़क यातायात व्यवस्था व सुरक्षा के लिए इंस्पेक्टर डीके सिंह के साथ एसआई अतुल सिंह, वीर बहादुर दुबे सहित भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा।

बाढ़ की चपेट में राजघाट व देवदेवश्वर धाम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नैमिषारण्य सीतापुर । बैराजो से छोडे गए लाखो क्यूसेक पानी व लगातार बारिश से गोमती नदी उफान पर है पिछले 24घन्टो मे नदी का जलस्तर मे 70 सेंटीमीटर का इजाफा हुआ है बृहस्पतिवार को गोमती का पानी 121.30मीटर पर पहुंच गया यह खतरे के निशान 123.10 मीटर से महज 1.80 मीटर नीचे है गोमती के उफनाने से नैमिषारण्य के राजघाट व दशाश्वमेध घाट चपेट मे आ गए हे इधर बृहस्पतिवार को तीनो बैराजो से 4.77लाख क्यूसेक पानी छोडा गया है इससे हालत और बिगड सकते है । गोमती की बेकाबू लहरे ने नैमिषारण्य के तटीय क्षेत्रो को चपेट मे लेना शुरु कर दिया बृहस्पतिवार को राजघाट और दशाश्वमेध घाट बाढ़ के पानी

मे डूब गए नैमिषारण्य मे पर्यटन विभाग की ओर से राजघाट पर बने मंडप हाल कैंटीन सुलभ शौचालय मार्केट और घाट पर बनी वेदियो और शिव मंदिर मे बाढ़ग्रस्त का पानी भर गया है समूचे राजघाट मे पाच मीटर तक राजघाट मे पानी भर गया है । गोमती नदी के उफनाने का असर चक्र तीर्थ पर भी नजर आने लगा चक्र तीर्थ का पानी तेजी से बढ़ रहा है यहा के पुरोहितो के मुताबिक पानी इसी तरह बढता रहा तो चक्र तीर्थ भी बाढ की चपेट मे आ सकता है।

कृषि यंत्र के लाभार्थियों का ई-लॉटरी के माध्यम से किया गया चयन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में गठित, जिला स्तरीय कार्यकारी समिति (डी0एल0ई0सी0) के द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार, सीतापुर में रु0-10,000 से अधिक अनुदान वाले कृषि यन्त्रों/कृषि रक्षा उपकरणों, यथा लेजर लैण्ड लेवलर, रोटावेटर, कम्बाइन हार्वेस्टर, सुपर सीडर, हैरो, मिनी राइस मिल, पावर चैफ कटर, कल्टीवेटर, मल्टी क्राप थ्रेसर, ऑयल मिल विद फिल्टर प्रेस, पोटैटो डिगर, पोटैटो प्लान्टर, पावर ट्रिलर, पावर वीडर, सुगरकेन पावर वीडर, ट्रैक्टर मॉउन्टेड स्प्रेयर, स्मॉल गोदाम, थ्रेसिंग फ्लोर, बैच ड्रायर मेज, एम0बी0 प्लाऊ, स्ट्रा चापर/मल्चर इत्यादि के लाभार्थियों का चयन ई-लाटरी के माध्यम से कराया गया। जनपद के विकास खण्डों में लक्ष्य के अनुरूप लाभार्थियों का चयन निर्विवाद रूप से

कलेक्ट्रेट सभागार में जिला कार्यकारी समिति के समक्ष ई0-लॉटरी प्रक्रिया हुयी सम्पन्न

पूर्ण पारदर्शिता के साथ किया गया। चयन का संदेश मोबाइल पर मिलने से किसानों में खुशी का माहौल देखने का मिला, किसानों द्वारा ई-लॉटरी प्रक्रिया को सराहा गया। उप कृषि निदेशक, सीतापुर द्वारा बताया गया ई-लॉटरी के माध्यम से कृषि यंत्रों के लाभार्थियों का चयन किया गया है इससे जनपद के सभी किसानों को यंत्रों पर अनुदान पाने का समान अवसर प्राप्त होगा और यंत्र बुकिंग के समय सर्वर व्यस्त होने सम्बन्धी परेशानियों से निजात मिल सकेगी। ई-लॉटरी के समय समिति के सदस्यों सहित विभिन्न विकास खण्डों के किसान बंधु उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की उपस्थिति में तिरंगा पखवाड़ा, महिलाओं और छात्राओं ने जवानों को बाँधी राखी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । उत्तर प्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित राखी को तिरंगा राखी कार्यक्रम के अंतर्गत तिरंगा पखवाड़ा में जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की गरिमामई उपस्थिति में भूतपूर्व सैनिकों, पुलिस के जवानों आदि को उपलब्ध कराई गई। समूह की महिलाओं द्वारा जिलाधिकारी, पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों तथा भूतपूर्व सैनिकों को भी राखी बांधी गई। इसके साथ ही कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, खैराबाद की छात्राओं ने भी हाथ से बनी राखी जवानों को सौंपी एवं मौके पर जिलाधिकारी महोदय के साथ साथ अन्य अधिकारियों को भी बांधा तथा सभी को शुभकामनाएं दीं। जिलाधिकारी ने सभी को उपहार भेंट किये। कार्यक्रम में जिला

विकास अधिकारी संतोष नारायण गुप्ता, डीसी एन0आर0एल0एम0 चंदन देव पांडे, डी0एम0एम अमरजीत, सहायक विष्णु तथा समूह की महिलाओं के साथ साथ विद्यालय से आए अध्यापकगण भी उपस्थित रहे। डीसी एन0आर0एल0एम0 ने बताया कि समूहों द्वारा राखी तैयार कर बाजार में बेचा जा रहा है ताकि समूह की आमदनी के साथ साथ नैमिष ब्रांड का प्रचार प्रसार भी हो सके।

जिलाधिकारी की जनमानस से अपील बारिश के दौरान अपनाएं सुरक्षात्मक तरीके

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने विगत दो-तीन दिनों से हो बारिश के दृष्टिगत जनसामान्य से अपील की है कि अतिवृष्टि के दौरान सतर्क रहें, ऐसे स्थानों पर ना जाएं जहां जलभराव की स्थिति बनती है, गहरे स्थानों, नदी, नालों, नहरों, तालाब, डैम, कुंए इत्यादि स्थानों पर जाने से बचें तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों को मानें और प्रशासन का सहयोग करें. पुराने, जर्जर भवन के नीचे निवास न करें। उन्होंने कहा कि बारिश और खराब मौसम के दौरान यथासंभव अति आवश्यक हो तभी घर से बाहर निकलें तथा जलभराव वाले स्थानों पर जाने से बचें। बारिश के दौरान बिजली के खंभों में करंट उतरने की संभावना अत्यधिक रहती है, इसलिए बिजली के खंभों के किनारे कतई न जाये। नदी, नालों, नहरों, तालाबों में कतई न जाएं तथा बच्चों पर विशेष निगरानी रखें कि वे जलभराव वाले स्थान पर न जाने पाएं।

वहीं जिला आपदा प्रबंधन सीतापुर प्रबंधन

जलभराव वाले स्थानों व बिजली के खंभों से बनाएं दूरी, मोबाइल में

डाउनलोड करें दामिनी एप, आकाशीय बिजली से बचाएगा दामिनी एप-डीएम सीतापुर

प्राधिकरण द्वारा बारिश के दृष्टिगत एडवाइजरी जारी कर बचाव व सुरक्षा के उपाय बताए गए हैं। जिलाधिकारी ने जनसामान्य से अपील करते हुए कहा है कि खराब मौसम में आकाशीय बिजली गिरने/वज्रपात की घटनाएं घटित होने की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं, जिससे जनहानि की घटनाएं भी हो सकती हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि आकाशीय बिजली से बचने के उपायों को अपनाया जाये ताकि वज्रपात से जनहानि एवं पशु हानि न होने पाये। उन्होंने कहा है कि जनसामान्य अपने मोबाइल में मौसम विज्ञान विभाग भारत सरकार द्वारा विकसित दामिनी एप डाउनलोड करें जिससे वज्रपात की पूर्व सूचना मिल सके ताकि जनहानि या घायल होने की घटनाओं से बचा जा सके। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष वज्रपात से बड़ी संख्या में जनहानि व पशुहानि होती है तथा इन्फास्ट्रक्चर को भी भारी नुकसान पहुंचता है। वज्रपात से कम से कम क्षति हो इसके लिए प्रभावी व्यवस्था को अपनाने के साथ ही अधिसूचित आपदाओं की पूर्व चेतावनियों एवं अलर्ट को आम जनमानस तक समय से पहुचांकर आपदा को कम किया जा सकता है। बताया कि वज्रपात से बचने के लिए पेड़ों के नीचे, मोबाइल टावर व ऊंचे मकान के नीचे शरण न लें। बच्चों को बाहर न खेलने दें, लोहे की खिड़की, दरवाजे व हैण्डपम्प आदि को न छुएं। धातु से बने छाते का प्रयोग न करें, लैण्डलाइन एवं विजली के उपकरणों का उपयोग न करें, खुल वाहनों मे सवारी न करें, बचाव के लिए जमीन पर न लेटें जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनसामान्य को आकाशीय बिजली से बचाव हेतु दामिनी एप का प्रयोग करने की सलाह दी गई है। किसानों और पशुपालकों को सलाह दी गई है कि अपने मवेशियों को सुरक्षित स्थानों पर रखें। जलभराव के कारण सर्पदंश की घटनाएं संभावना भी बढ़ सकती है, ऐसे में घरों में सावधानी बरतें तथा सांप काटने पर झाड़-फूंक के चक्कर में न पड़ते हुए तुरन्त अपने निकटतम सीएचसी या जिला अस्पताल जाकर एन्टी स्नेक वेनम का इंजेशन लगवाएं।

आपात स्थिति में इन नम्बरों पर कॉल करके लें मदद-जिलाधिकारी सीतापुर

जिलाधिकारी महोदय के निर्देश पर संभावित बाढ़ एवं अन्य आपदाओं से निपटने के लिए जनपद स्तर पर कलेक्ट्रेट स्थित इमरजेंसी आपरेशन कक्ष में कन्ट्रोल रूम सक्रिय है। जिलाधिकारी महोदय ने बताया कि आपात स्थिति में जनपद स्तरीय इमरजेंसी ऑपरेशन सेन्टर के हेल्पलाइन नम्बर सीयूजी 9454416556, 05862-242400/05862-245753 अथवा टोल फ्री नंबर 1077 पर कॉल करके मदद ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि कन्ट्रोल रूम 24 घन्टे सक्रिय हैं तथा शिफ्टवार ड्यूटी लगी हैं।

सीतापुर पत्रकार हत्याकांड,दो शूटरो का किया गया एनकाउंटर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । सीतापुर जनपद के चर्चित पत्रकार हत्याकांड में सीतापुर पुलिस और स्पेशल टास्क फोर्स टीम ने दोनों शूटरो को एनकाउंटर में मार गिराया, मन्दिर क़े पुजारी ने 4 लाख की सुपारी देकर कराई हत्या कराई थी।उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में मार्च माह में हुई पत्रकार राघवेंद्र बाजपेयी की हत्या के मामले में शामिल दो शूटरों को देर रात स्पेशल टास्क फोर्स ने मुठभेड़ में मार गिराया। दोनों आरोपी रिजवान राजू और अकील खान उर्फ़ संजय सगे भाई थे और उन पर 1-1 लाख का इनाम घोषित था।

घटना पिसावा थाना क्षेत्र के अंतर्गत हुई जहाँ स्पेशल टास्क फोर्स टीम और स्थानीय पुलिस संयुक्त रूप से वाहनों की चेकिंग कर रही थी।इसी दौरान एक संदिग्ध बाइक को रोकने की कोशिश की गई, लेकिन बाइक सवारों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दोनों आरोपी

घायल हुए और अस्पताल ले जाते समय उनकी मौत हो गई।

हत्या की पृष्ठभूमि

8 मार्च को पत्रकार राघवेंद्र बाजपेयी की हत्या उस समय हुई थी जब वह अपनी बाइक से जा रहे थे। हाईवे पर उनकी बाइक को रोककर हमलावरों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसाईं। मामले की जांच में सामने आया कि हत्या की साजिश कारदेव बाबा मंदिर के पुजारी शिवानंद बाबा उर्फ विकास राठौर ने रची थी। पत्रकार ने पुजारी को मंदिर परिसर में आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया था, जिससे नाराज होकर पुजारी ने हत्या की योजना बनाई। दोनों को सुपारी देकर हत्या करा दी थी। पुजारी पहले ही जेल जा चुका है।

होमगार्ड रहमत अली के परिवार को मिला 38 लाख का बीमा क्लेम, डीएम ने सौंपा चेक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी। जनपद के एक होमगार्ड की सेवा के दौरान सड़क दुर्घटना में हुई दुखद मृत्यु के बाद जिला प्रशासन ने उनके परिवार को बड़ा आर्थिक संबल प्रदान किया है। बुधवार को कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम में जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने दिवंगत होमगार्ड रहमत अली की पत्नी शमीम बानो को 30 लाख रुपये और पुत्री नज़रीन को 8 लाख रुपये का चेक सौंपा। यह कुल 38 लाख रुपये की बीमा सहायता राशि एक्सिस बैंक में संचालित मानदेय खाते पर लागू व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के तहत प्रदान की गई। चेक सौंपते समय माहौल भावुक हो गया। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने परिजनों को गले लगाकर ढाढ़स बंधाया और आश्वस्त किया कि प्रशासन उनके साथ हर मोड़ पर खड़ा रहेगा। उन्होंने कहा कि रहमत अली जैसे कर्मठ होमगार्ड समाज की

सेवा में अपना जीवन समर्पित करते हैं और ऐसे वीरों के परिवार की मदद करना प्रशासन की नैतिक जिम्मेदारी है। इस अवसर पर एडीएम नरेंद्र बहादुर सिंह, एसडीएम अर्चना ओझा, लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर अशोक गुप्ता, एक्सिस बैंक के कानपुर सर्किल हेड सचिन श्रीवास्तव, क्लस्टर हेड निखिल अग्रवाल, ब्रांच मैनेजर विशाल वैश्य, जिला कमांडेंट होमगार्ड रमाकांत पाठक व प्लाटून कमांडर गिरीश कुमार भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी अधिकारियों ने दिवंगत होमगार्ड को श्रद्धांजलि दी और उनके परिवार की हर संभव सहायता का भरोसा दोहराया।

सिंचन एजुकेशनल एंड वेल्फ़ेयर सोसाइटी का सहयोगी कार्यक्रम संपन्न

सीतापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता ।आज सिंचन एजुकेशनल एंड वेलफ़ेयर सोसाइटी की अध्यक्षा दीपिका मिश्रा जी के सहयोग से छात्र,छात्राओं के लिए स्टेशनरी का वितरण जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के कर कमलों द्वारा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय पर संपन्न हुआ संस्था द्वारा चयनित 20 विद्यालयों को को 50 - 50 मल्टी पर्पज कॉपियां पेन,रबर ,कटर प्रदान की गईं। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारीअखिलेश प्रताप सिंह,ने उपस्थित शिक्षकों और संस्था के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों को शिक्षा ग्रहण कराने में अगर किसी ने भी थोड़ी सी मदद की तो उसका फल उसे ईश्वर हमेशा देता रहेगा क्योंकि यह बहुत पुनीत कार्य होता है और इस संस्था के द्वारा निरंतर ऐसे कार्य किए जा रहे हैं इस लिए जितनी भी तारीफ़ संस्था की और इसके संयोजकों की करें वो कम होगी मैं इस संस्था की प्रगति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। इसके अतिरिक्त उपस्थित लोगों में जिला कॉर्डिनेटर किसलय अग्निहोत्री ,एस आर जी करुणेश मिश्र,मदनेश मिश्र,आलोक श्रीवास्तव के साथ साथ संयोजक डॉ0अनुपम मिश्र,प्रबंधक कुशमेश मिश्र, उपाध्यक्ष योगेन्द्र पांडेय उपस्थित रहे। इस पुनीत कार्यक्रम में श्याम बिहारी मिश्र,प्रमोद शुक्ल,अरुण मिश्र,सालिक राम,पंकज मिश्र, आशुतोष मिश्र,अभिलाषा, अंकिता गट्टानी, अंकिमा गुप्ता,सुनीता यादव,सौरभ जायसवाल, रश्मि शर्मा,समीर दीक्षित सहित अनेक शिक्षक मौजूद रहे। सभी शिक्षकों ने एक स्वर में संस्था द्वारा ग्रामीण छात्र छात्राओं के लिए किए जा रहे प्रयासों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा वास्तव में जनपद स्तर पर किसी भी स्वय सेवी संस्था द्वारा किया जाने वाला यह प्रयास अनुकरणीय है।निपुण विद्यालय बनाने में यह सामग्री बहुत उपयोगी है। सभी शिक्षकों को संस्था के प्रबंधक कुशमेश मिश्र के द्वारा सुंदर जलपान कराया गया और प्रदत्त सामग्री का सही सदुपयोग करने पर बल दिया गया।

राष्ट्रीय मध्यस्थता अभियान शुरू, सुलह से अब तक 36 मामलों का निस्तारण

लखीमपुर खीरी कैनविज टाइम्स संवाददाता । राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के आदेश पर जनपद में 01 जुलाई से 30 सितंबर 2025 तक राष्ट्रीय मध्यस्थता अभियान चलाया जा रहा है। जनपद न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष सैयद माऊज बिन आसिम के निर्देश पर विभिन्न न्यायालयों द्वारा उपयुक्त दीवानी मामलों को मध्यस्थता हेतु संदर्भित किया गया है। अभियान के तहत वैवाहिक विवाद, सड़क दुर्घटना दावा, घरेलू हिंसा, बैंक चेक बाउंस, वाणिज्यिक विवाद, सेवा संबंधी विवाद, शमनीय अपराध, उपभोक्ता विवाद, ऋण वसूली, संपत्ति विवाद, बेदखली व भूमि अधिग्रहण जैसे मामलों को सुलह-समझौते के जरिए निपटाया जा रहा है। मध्यस्थ अधिवक्ताओं की सक्रिय भूमिका में अब तक 36 मामलों का शांतिपूर्ण व सफल समाधान कराया जा चुका है। शेष मामलों पर भी कार्यवाही जारी है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने पक्षकारों से अपील की है कि वे आगे आएं और इस अभियान का लाभ उठाकर अपने विवादों का समाधान आपसी सहमति से कराएं।

13 सितंबर को लगेगी राष्ट्रीय लोक अदालत, समझौते से निपटेंगे हजारों मामले

लखीमपुर खीरी कैनविज टाइम्स संवाददाता ।राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देश पर 13 सितंबर 2025 (शनिवार) को जनपद न्यायालय लखीमपुर खीरी एवं तहसील न्यायालयों में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन होगा। जिला न्यायाधीश व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष सैयद माऊज बिन आसिम के निर्देशानुसार इस अदालत में पक्षकार आपसी सुलह-समझौते के जरिए अपने वादों का त्वरित निस्तारण करा सकेंगे। नोडल अधिकारी अपर जिला जज अभिषेक कुमार श्रीवास्तव व सचिव वीरेन्द्र नाथ पांडेय ने बताया कि अदालत में यातायात व लघु आपराधिक प्रकरण,नगर पालिका व बिजली-पानी से जुड़ी शिकायतें, बैंक ऋण व चेक बाउंस (धारा 138 एनआई एक्ट), पारिवारिक, व्यवहारिक व उत्तराधिकार संबंधी वाद,राजस्व वाद एवं मनरेगा जैसी योजनाओं से जुड़े मामलों का निस्तारण किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने सभी वादकारियों से अपील की है कि वे 13 सितंबर को आयोजित लोक अदालत में भाग लें और आपसी सहमति से अपने मामलों का निस्तारण कराकर लाभ उठाएं।

सीडीओ ने रायपुर ग्रंट व गरथानिया का किया निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी । सीडिओ अभिषेक कुमार ने गुरुवार को विकासखंड कुंभी अंतर्गत ग्राम पंचायत रायपुर ग्रंट और गरथानिया का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कई अनियमितताएं उजागर हुईं, जिस पर सीडीओ ने संबंधित अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए।

गरथानिया : जल जीवन मिशन का काम महीनों से ठप

ग्राम पंचायत गरथानिया में सीडीओ ने जल जीवन मिशन की निर्माणाधीन परियोजना का जायजा लिया।निरीक्षण में पाया गया कि निर्माण कार्य पिछले कई महीनों से बंद पड़ा है, जिससे ग्रामीणों को नल से जल योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। इस पर सीडीओ ने गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए जल जीवन मिशन के अधिशासी अभियंता को निर्देशित किया कि कार्य को तत्काल पुनः प्रारंभ किया जाए और गुणवत्ता के

साथ समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए, ताकि ग्रामीणों को शीघ्र नल कनेक्शन की सुविधा उपलब्ध हो सके।

रायपुर ग्रंट : मनरेगा कार्यस्थल पर मजदूर गायब, मास्टर रोल में गड़बड़ी

सीडीओ ने ग्राम पंचायत रायपुर ग्रंट में मनरेगा कार्यों का निरीक्षण किया। कार्यस्थल पर मजदूर अनुपस्थित पाए गए, जबकि मास्टर रोल में पिछले कई दिनों की उपस्थिति दर्ज नहीं की गई थी। इससे गंभीर अनियमितता की आशंका जाहिर होती है। इस पर सीडीओ ने डीसी मनरेगा को जांच कर दोषियों के विरुद्ध रिकवरी की कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि मजदूरी भुगतान में पारदर्शिता और सटीक रिकॉर्ड रखना अनिवार्य है।

बाढ़ आपदा से निपटने के लिए योगी सरकार की पैनी नजर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निघासन-खीरी। बाढ़ आपदा से निपटने के लिए योगी सरकार की पैनी नजर है। क्षेत्रीय विधायक पटेल शंशाक वर्मा ने बिना देर किए मदनापुर पंचायत के बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री बांटी। लुधौरी स्थित टीन शेड में कैंप लगाकर 325 पीड़ितों को सामग्री बांटी गई।

इस दौरान राजीव निगम, तहसीलदार मुकेश वर्मा, राजस्व निरीक्षक लक्ष्मण यादव, लेखपाल श्वेता सिंह, नेता रवि सोनी ग्राम प्रधान कमलेश कुमार समेत प्रशासनिक अमला और पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे। विधायक पटेल शंशाक वर्मा ने कहा कि बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए सरकार पूरी तरह से तैयार है। इस दौरान प्रशासनिक अमला और पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे और उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री बांटने में मदद की। ट्रक्ख्र राजीव निगम ने कहा कि बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए प्रशासन पूरी तरह से तैयार है और उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए

हर संभव प्रयास किया जा रहा है। बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री मिलने से उन्हें काफी राहत मिली है। उन्होंने विधायक और प्रशासन का धन्यवाद किया और कहा कि उनकी मदद से उन्हें काफी सहारा मिला है।

निघासन-खीरी में बाढ़ आपदा से निपटने के लिए योगी सरकार की पैनी नजर है। क्षेत्रीय विधायक पटेल शंशाक वर्मा ने बिना देर किए मदनापुर पंचायत के बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री बांटी। प्रशासनिक अमला और पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे और उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री बांटने में मदद की। बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री मिलने से उन्हें काफी राहत मिली है।

मुख्यमंत्री योगी ने संभल में किया कई परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण

जनपद के बहजोई में 155.01 करोड़ धनराशि के अन्तर्गत जिलाधिकारी कार्यालय सम्भल और एकीकृत आवासीय भवन का शिलान्यास के साथ 503 करोड़ की 220 अन्य विकास परियोजनाओं का लोकार्पण/ शिलान्यास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सम्भल (बहजोई)। जनपद सम्भल के बहजोई में 155.01 करोड़ धनराशि के अन्तर्गत जिलाधिकारी कार्यालय सम्भल और एकीकृत आवासीय भवन का शिलान्यास के साथ 503 करोड़ की 220 अन्य विकास परियोजनाओं का लोकार्पण/ शिलान्यास (कुल 658.86 करोड़) एवं विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र एवं किट का वितरण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। विकासखण्ड बहजोई के ग्राम फतेहपुर शरीफ नगर एवं ग्राम आनंदपुर में मुख्यमंत्री का भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

सर्वप्रथम माननीय मुख्यमंत्री जी का हेलीपैड पर जिलाधिकारी डॉ राजेन्द्र पैंसिया द्वारा एक पुष्प एवं एक पुस्तक देकर स्वागत किया गया एवं मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा नवीन पुलिस लाइन पहुँच कर भौतिक निरीक्षण किया एवं पुलिस लाइन के मॉडल का अवलोकन किया। तथा उसके पश्चात विधि विधान से पूजा अर्चना करते हुए जिलाधिकारी कार्यालय सम्भल और एकीकृत आवासीय भवन का शिलान्यास किया।एक पेड़ माँ के नाम के अन्तर्गत कलक्ट्रेट स्थल पर हरी शंकरी वृक्षारोपण किया। मुख्यमंत्री जी द्वारा सम्भल कल्कि तीर्थ डॉक्यूमेंट प्रजेंटेशन एवं विकास कार्यों की प्रगति का अनुश्रवण किया गया। आकांक्षा हाट का भी अवलोकन किया तथा ओडीओपी के अन्तर्गत तैयार किये गये उत्पादों की स्टाल तथा श्री अन्न एवं कृषि विभाग से संबंधित जैविक प्राकृतिक खेती स्टाल तथा उसके पश्चात विकासखण्ड असमोली के वाद मुक्त ग्राम अखबंदपुर द्वारा ग्राम कुल को लेकर लगायी गयी स्टाल एवं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत समूहों की दीदियों द्वारा लगाये गये उत्पादों का भी अवलोकन किया। आईसीडीएस विभाग के अन्तर्गत मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा गोद भराई एवं अन्न प्राशन कार्यक्रम किया गया। जनपद सम्भल में उत्खनन के समय प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों के स्टालों का भी मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा निरीक्षण किया गया। माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा जिलाधिकारी कार्यालय के मॉडल का भी अवलोकन किया गया। भीख से सीख कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चों द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी को राखी बांधी गयीं।

जनसभा के मंच पर मुख्यमंत्री जी का जनप्रतिनिधियों द्वारा स्मृति चिन्ह् देकर स्वागत किया गया। मण्लायुक्त मुरादाबाद मण्डल आंजनेय कुमार सिंह द्वारा भगवान विष्णु जी के 10 वें अवतार भगवान कल्कि जी की मूर्ति देकर मा. मुख्यमंत्री जी को सम्मानित किया तथा जिलाधिकारी द्वारा भी जनपद के प्राचीन 68 तीर्थों तथा 19 महाकूप से संबंधित मानचित्र देकर माननीय मुख्यमंत्री जी को सम्मानित किया गया।

जिलाधिकारी द्वारा मुख्यमंत्री जी को कार्यक्रम के संबंध में जानकारी प्रदान की गयी। जिलाधिकारी ने कहा कि मा. मुख्यमंत्री जी के कर कमलों से आज जिलाधिकारी कार्यालय तथा एकीकृत आवासीय भवनों का शिलान्यास किया गया है। जनपद सम्भल में एकीकृत आवास होने से एकीकृत परिसर होने से राजस्व,पुलिस एवं विकास विभाग के अधिकारीगण, कर्मचारीगण को एक साथ सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी जिससे शासन के कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

मुख्यमंत्री द्वारा जनपद की 222 परियोजनाओं एवं एक परियोजना जनपद अमरोहा की तहसील हसनपुर के अनवासीय भवन के निर्माण कार्य का बटन दबाकर लोकार्पण एवं शिलान्यास किया गया। मुख्यमंत्री जी द्वारा सम्भल संवाद ऐप जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपनी समस्याओं को घर बैठे सीधे प्रशासन के मध्य रख सकता है तथा जनपद की प्रशासनिक सुविधा महत्वपूर्ण सूचनाओं को ऐप पर देख सकता है।

साफ्टवेयर इंजीनियर से बने मत्स्य पालक प्रदेश का नाम देश दुनियां में कर रहे रोशन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बदायूँ। पेशे से साफ्टवेयर इंजीनियर श्री सुजीत कुमार चौधरी ने उत्तर प्रदेश सरकार की मत्स्य पालकों के लिए संचालित योजनाओं का लाभ लेकर मत्स्य पालन के क्षेत्र में आज अपने प्रदेश का नाम देश-दुनिया में रोशन कर रहे है। सुजीत ने पहली बार रायबरेली में समुद्री झींगा की खेती करके खारे पानी से ग्रसित किसानो को एक नयी राह दिखाई है। श्री सुजीत आधुनिक एवं पर्यावरण सुरक्षित ढंग से प्रति एकड़ 2-3 गुना अधिक पंगेसियस मछली का उत्पादन प्रति वर्ष 1.5-2 कल्चर (फसल) कर रहे है। उनको नैशनल बेस्ट फिश फार्मर (इनलैंड) का अवार्ड वर्ष 2022 में मिला है।जनपद रायबरेली के ग्राम बावन बुजुर्ग बल्ला निवासी श्री सुजीत कुमार चौधरी ने श्री टेक (इंजीनियरिंग) 11 साल सॉफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर काम किया है। इनफोसिस में डेढ़ साल और इंडस वैली पार्टनर्स में 9 साल काम किया। इंडस वेली पार्टनर्स में बतौर एसोसिएट डायरेक्टर रहे लगभग 6 साल अमेरिका में काम किया। वर्ष 2016 में नौकरी छोड़ अपनी पहली सॉफ्टवेयर कंपनी इरेमेडियम शुरू की जो आज एक मानी जानी कंपनी बन चुकी है और सफलतापूर्वक नोएडा से चल रही है।श्री सुजीत कुमार चौधरी के माता पिता वर्ष 2020 कोरोना काल में जब बीमार हुए तो इकलौते लड़के होने के नाते उन्होंने अपने माता-पिता की देख रेख करने के लिए नोएडा से लखनऊ बसने का मन बनाया। यहाँ आकर इनकी मुलाकात मुख्य कार्यकारी अधिकारी मत्स्य, रायबरेली से हुई। उनसे श्री सुजीत का मत्स्य पालन में हो रहे प्रगति के बारे में पता चला। मत्स्य विभाग से प्रेरणा एवं जानकारी लेते हुए इन्होंने 2020 में ही 3 छोटे तालाब और 4 बायफ्लॉक टैंक से गांव बेहटा खुर्द, रायबरेली में रहमत के साथ ही मत्स्य पालन में कदम रखा।श्री सुजीत कुमार चौधरी ने तालाब के मापदण्डों को कंट्रोल करने हेतु साइंस और टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक रिमोट सेंसर का उपयोग करके ई-रिक्शा पर जिन्दा मछली विक्रय केंद्र बनाया है, जिसमे ऑक्सीजन, तापमान एवं फिल्टर की ययस्था है, इसको ये एकवा व्हील कहते हैं इससे ये जिन्दा मछलियों को सीधे उपभोगता तक पहुंचाते हैं। जिससे इनका मुनाफा बढ़ता है और उपभोक्ता को ताजा, स्वच्छ मछली मिलती है। अभी तक इन्होने ऐसे तीन ई-रिक्शा लांच किए है।श्री सुजीत कुमार चौधरी 1 एकड से 2 से 3 गुना का उत्पादन प्रति वर्ष हर तालाब से पंगेसियस प्रजाति की 1.5-2 फसल लेते हैं, जिससे प्रति वर्ष 1 एकड से औसतन 20 टन उत्पादन होता है। यह अपनी सीड रेअरिंग यूनिट नर्सरी में मछली के बच्चों को 150-200 ग्राम तक बड़ा करते हैं और फिर उन्हें ग्रो आउट तालाब में डालते हैं ये जीरो पॉइंट कल्वर करते हैं जिसमे इनके तालाब कभी भी खाली नही रहते।

संविलियन विद्यालय में करंट लगने से अध्यापिका की मौत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अनूपशहर । गांव रूढ़ बांगर के संविलियन विद्यालय में करंट लगने से अध्यापिका की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पीएम को भेजा।प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरुवार को गांव रूढ़ बांगर के संविलियन विद्यालय में कार्यरत शिक्षिका बबली कंवर बिजली के बोर्ड में ब्लूटूथ का प्लग लगा रही थी। तभी अचानक बबली करंट की चपेट में आकर प्लग से चिपक गई। बबली की चीख पुकार सुनकर विद्यालय में उपस्थित अध्यापकों ने बामुश्किल ब्लूटूथ के प्लग से चिपकी बबली को छुड़ाया। गंभीर हालत में साथी अध्यापक बबली को सीएचसी लेकर पहुंचे। वहां चिकित्सकों ने बबली को मृत घोषित कर दिया। बबली के पति सुनील कुमार मोदीनगर के एक डिग्री कालेज में बाबू है। बबली 2 वर्ष से अपनी मां विमलेश के साथ रुक्मणी विहार कालोनी अनूपशहर किराए के मकान में रहती थी। उनकी एक 3 वर्षीया बेटी स्वर्णिमा नगर के पीएसपीए विद्यालय में नर्सरी में पढ़ रही है। अचानक हुई घटना से वृद्ध मां विमलेश का रो-रो कर बुरा हाल है। मौके पर पहुंचे तहसीलदार संजय कुमार, खंड शिक्षा अधिकारी दीपक कुमार ने घटना की जानकारी ली। कोतवाली प्रभारी धर्मेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि घटना के संबंध में अभी तक कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। शव का पंचनामा भरकर पीएम के लिए भेज दिया है। घटना के बाद अनेक स्कूलों के शिक्षक मौके पर पहुंचकर शोक व्यक्त करने के साथ पीड़ित परिवार की सहायता में जुट गए।

संभल में सीएम से मिलने पहुंची महिला आंगनबाड़ी भर्ती में धांधली का लगाया आरोप

तमाम प्रयासों के बाद भी प्रशासन ने नहीं करने दिया मुलाकात

कैनविज टाइम्स संवाददाता

संभल। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संभल दौरे के दौरान एक महिला अपनी शिकायत लेकर उनसे मिलने पहुंची, लेकिन सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक रोक के चलते वह मुख्यमंत्री से मुलाकात नहीं कर सकी। महिला का आरोप है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता पद के लिए किए गए आवेदन में उसकी योग्यता पूरी होने के बावजूद उसे चयनित नहीं किया गया।महिला ने बताया कि वह कई बार जिलाधिकारी समेत अन्य संबंधित अधिकारियों से शिकायत कर चुकी है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। महिला ने आंगनबाड़ी भर्ती प्रक्रिया में धांधली का गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि चयन में पारदर्शिता नहीं बरती गई।कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर जब महिला ने मुख्यमंत्री से मिलने की कोशिश की, तो सुरक्षा कर्मियों और प्रशासनिक अधिकारियों ने उसे आगे नहीं जाने दिया। महिला का कहना है कि उसे न्याय दिलाने के लिए वह आखिरी उम्मीद के तौर पर मुख्यमंत्री से मिलना चाहती थी, लेकिन उसे निराशा हाथ लगी।

गंगा का बढ़ता जलस्तर बना चिंता का कारण ,अलर्ट

गुन्नौर के तटीय इलाकों में बाढ़ का खतरा मंडरायाप्रशासन और सिंचाई विभाग अलर्ट मोड पर, राहत-बचाव की तैयारियां शुरू

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बबराला। गंगा के जलस्तर में लगातार वृद्धि ने गुन्नौर क्षेत्र के गंगा तटीय इलाकों में बाढ़ की आशंका को गहरा दिया है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन और सिंचाई विभाग पूरी तरह से सतर्क हो गया है। बाढ़ सुरक्षा समितियों को सक्रिय कर निगरानी बढ़ा दी गई है।सिंचाई विभाग के अभियंता अंकित सिंह के अनुसार, बुधवार दोपहर 12 बजे हरिद्वार स्थित भीमगौड़ा बैराज से 3,52,000 क्यूसेक पानी गंगा में छोड़ा गया, जो अगले 24 घंटों में नरोरा स्थित राजघाट तक पहुंचने की संभावना है। वहीं नरोरा स्थित चौधरी चरण सिंह गंगा बैराज से डाउन स्ट्रीम में 1,35,000 क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ा जा रहा है। इससे निचले क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा और अधिक बढ़ गया है।बाढ़ की स्थिति पर नजर रखने के लिए सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता जितेंद्र अग्रवाल व अधिशासी अभियंता प्रदीप सिंह पटेल ने नरोरा बैराज सहित गंगा के तटबंधों का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सतर्कता बरतने और आवश्यक उपकरणों को तैयार रखने के निर्देश दिए। उधर, प्रशासन ने भी कमर कस ली है। गंगा किनारे बसे संभावित बाढ़ग्रस्त गांवों में सतर्कता बढ़ा दी गई है। ग्रामीणों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। आपदा प्रबंधन टीमों को अलर्ट मोड में रखा गया है।एसडीएम डॉ. वंदना मिश्रा ने बताया कि संभावित बाढ़ प्रभावित गांवों के लिए राहत व बचाव योजनाएं तैयार कर ली गई हैं। नावों की व्यवस्था, राहत सामग्री और अस्थायी आश्रय स्थलों की तैयारी कर ली गई है। किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है।

रक्षाबंधन के दृष्टिगत खाद्य सुरक्षा विभाग ने की छापेमारी की कार्यवाही

बदायूँ । आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन उत्तर-प्रदेश लखनऊ एवं जिलाधिकारी अवनीश राय के आदेश के क्रम में सहायक आयुक्त (खाद्य)-द्वितीय सी0एल0 यादव व मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नेतृत्व में आगामी रक्षाबन्धन त्यौहार के दृष्टिगत आम जनमानस को सुरक्षित एवं गुणवत्तायुक्त खाद्य पदार्थो की उपलब्धता हेतु जनपद-बदायूँ में मिलावटी खाद्य एवं पेय पदार्थो की बिक्री पर प्रभावी रोकथाम हेतु चलाये जाने वाले विशेष अभियान के क्रम में गुरुवार को जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से विशेष अभियान के दौरान विभिन्न खाद्य परिसरों से कुल 10 खाद्य पदार्थो के नमूने वास्ते जाँच हेतु संग्रहित किए गए एंव तहसील-बिल्सी पर एफ0एस0डब्लू0 द्वारा 15 खाद्य पदार्थों के नमूने मौके पर ही चेक किये गये। आमजनमानस को खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूक भी किया गया।सहायक आयुक्त (खाद्य)-द्वितीय सी0एल0 यादव ने बताया कि जिन दुकानों से नमूने लिए गए हैं उनमें गुप्ता मिष्ठान भण्डार बिल्सी के प्रतिष्ठान से बर्फी का नमूना,सुनील किराना स्टोर बिल्सी के प्रतिष्ठान से काजू का नमूना, अशोक मिष्ठान भण्डार बिल्सी के प्रतिष्ठान से खोया का नमूना,प्रेम किराना स्टोर बिल्सी के प्रतिष्ठान से धनिया पाउडर का नमूना, सुरेश किराना स्टोर ब्रहमखेड़ा बदायॅू के प्रतिष्ठान से सरसों तेल का नमूना,अर्जुन किराना स्टोर ब्रहमखेड़ा बदायॅू के प्रतिष्ठान से सरसों तेल व दलिया का नमूना, मो0 सलीम अलापुर के प्रतिष्ठान से खोया का नमूना, इरफान अलापुर के प्रतिष्ठान से पेड़ा का नमूना, सिसौदिया स्वीट्स म्यॉऊ के प्रतिष्ठान से सोहन पापड़ी का नमूना है।उन्होंने बताया कि संग्रहित किए गए कुल 10 नमूने को वास्ते जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला भेजा जा रहा है। जाँच रिपोर्ट प्राप्त होने के उपरान्त खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के अन्तर्गत अग्रिम विधिक कार्यवाही की जाएगी। निरीक्षण के दौरान समस्त खाद्य कारोबारकर्ताओं को खाद्य पदार्थो को ढककर रखने, दुकानों में साफ-सफाई रखने, शुद्व एवं गुणवत्ता पूर्वक खाद्य पदार्थो को बेंचने, बिना लाइसेंस के खाद्य कारोबार नही संचालित करने के कड़े निर्देश दिए गए। मौके पर उपस्थित आम जनमानस को अपमिश्रण से होने वाले दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक किया गया।टीम में मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी आर0पी0 सिंह एवं खाद्य सुरक्षा अधिकारीगण भगवत सिंह, राजेन्द्र नाथ मिश्रा, माता शंकर बिन्द, खुशीराम, प्रिया त्रिपाठी, एवं सीमा यादव मौजूद रहे।

आयोग की सदस्य ने सुनी महिलाओं की समस्याएं

बदायूँ । उ0प्र0 राज्य महिला आयोग की मा0 सदस्या अवनी सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को पीडब्लूडी गेस्ट हाउस में जनसुनवाई तथा ब्लॉक सालारपुर में जागरुकता चौपाल का आयोजन किया गया। जनसुनवाई के दौरान भूमि विवाद, अतिरिक्त विवाह, घरेलू हिंसा से सम्बन्धित सहित कुल 13 शिकायती पत्र प्राप्त हुये, जिसके गुणवत्तापरक व समयबद्ध निस्तारण के निर्देश मा0 सदस्या द्वारा अधिकारियों को दिए गए। जनचौपाल के दौरान उन्होंने महिलाओं का स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया।मा0 सदस्य ने कहा कि महिलाएं अपने ऊपर हो रहे किसी भी प्रकार के अत्याचार को बर्दाश्त न करें। महिलाओं की समस्याओं के निस्तारण के लिए महिला आयोग हर क्षण उनके साथ खड़ा है। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया कि महिलाओं से संबंधित शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनते हुए उनका गुणवत्तापरक व समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित कराएं।वहीं ब्लॉक सालारपुर के सभागार में जागरुकता चौपाल में आयी महिलाओं को मा0 सदस्या द्वारा महिला सुरक्षा पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी तथा सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर अपना आर्थिक व सामाजिक उन्नयन करते हुए स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया गया।उन्होंने बताया कि महिला संबंधी किसी भी शिकायत को महिला आयोग के टोल फ्री नंबर 18001805220 व्हाट्सएप नंबर 6306511708 पर भेजकर दर्ज कराया जा सकता है। आयोग सदस्या ने जनचौपाल के उपरान्त 05 गर्भवती महिलाओं की गोदभराई व 03 शिशुओं का अन्नप्राशन किया।इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख, उप जिलाधिकारी, जिला प्रोबेशन अधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी, प्रभारी जिला परियोजना अधिकारी , अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, जिला अल्पसंख्यक अधिकारी, संरक्षण अधिकारी, जिला मिशन समन्वयक, सेन्टर मैनेजर, परियोजना समन्वयक आदि उपस्थित रहे।

दो दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन

अनूपशहर। जेपी विद्या मंदिर विश्वविद्यालय परिसर में 2 दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। पुस्तक मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि जेपी विश्वविद्यालय के कुलपति डा.राजीव सक्सेना ने फीता काटकर किया। उन्होंने पुस्तकों के महत्व पर व्याख्यान देते हुए पुस्तकों के महत्व पर चर्चा की। विद्यालय एसएमसी सदस्य अजय गर्ग, सेवक चंद गुप्ता ने पुस्तक मेले का भ्रमण किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य राजीव शर्मा ने अपने व्याख्यान में बताया की पुस्तकें कैसे मनुष्य का जीवन बदल सकती है। पुस्तक मेले में विभिन्न विषयों सहित, हिंदी-अंग्रेजी साहित्य, कहानियां बच्चो के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाकलापों वाली गतिविधियों की पुस्तके सजाई गईं। डीपीबीएस पीजी कालेज के प्राचार्य डा. जी. के. सिंह, नीना चतुर्वेदी, एलडीएवी इंटर कालेज की प्रधानाचार्या शशिबाला पंत आदि ने पुस्तक मेले का भ्रमण कर अनेक विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें खरीदी। इस मौके पर संजय सिंह , सतीश कुमार बाजपेई , ब्रिज कुमारी, अजय चिकारा आदि उपस्थित रहे।

सीएम के योगी आदित्यनाथ का बहजोई आगमन, जिलाध्यक्ष चौधरी हरेंद्र सिंह ने किया भव्य स्वागत

संभल। उत्तर प्रदेशः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बहजोई आगमन पर संभल में उत्साह का माहौल देखने को मिला। मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए संभल के लोकप्रिय जिलाध्यक्ष चौधरी हरेंद्र सिंह ने भव्य तैयारियां की थीं। बहजोई में मुख्यमंत्री के पहुँचने पर चौधरी हरेंद्र सिंह ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।इस दौरान मुख्यमंत्री ने जिले में चल रही विकास परियोजनाओं और जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा की। चौधरी हरेंद्र सिंह ने मुख्यमंत्री को जिले की मौजूदा स्थिति और जनता की अपेक्षाओं से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने जिलाध्यक्ष के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि भाजपा सरकार जनता के हित में लगातार काम कर रही है और विकास की गति को और तेज किया जाएगा।इस अवसर पर बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और आम जनता उपस्थित थी, जिन्होंने मुख्यमंत्री और चौधरी हरेंद्र सिंह के समर्थन में नारे लगाए। मुख्यमंत्री का यह दौरा संभल में भाजपा की स्थिति को और मजबूत करने वाला माना जा रहा है।

नवांगत खण्ड विकास अधिकारी दीप शिखा वर्मा ने संभाला मियागंज ब्लॉक का कार्यभार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मियागंज, उन्नाव। गुरुवार को मियागंज ब्लॉक में नवांगत खण्ड विकास अधिकारी के आने की ख़बर मिलते ही ब्लॉक के समस्त ग्राम सचिव,व ऐई,जेई,सहित अन्य स्टॉप के कर्मचारियों में स्वागत सम्मान करने में होड़ लग गई। बताते चले कि दिनांक 05/08/2025 को उन्नाव की मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती कृति राज ने उन्नाव जनपद में कई विकास खण्ड अधिकारियों का स्थानांतरण किया था उसी क्रम में पूर्व में मियांगज ब्लॉक में तैनात व अतिरिक्त पद कार्य भार संभाल रहे हसनगंज खण्ड विकास अधिकारी अनिल कुमार सिंह का हसनगंज ब्लॉक से स्थानांतरण कर असोहा ब्लॉक में नवीन तैनाती दी गई थी। वहीं मियागंज खण्ड विकास अधिकारी का अतिरिक्त पद कार्य भार ब्लॉक औरास की खण्ड विकास अधिकारी श्रीमती दीप शिखा वर्मा को दिया गया था। आज दिनांक 07/08/2025 को मियागंज नवांगत खण्ड विकास अधिकारी की आने की ख़बर मिलते ही ब्लॉक कर्मचारियों में स्वागत सम्मान की तैयारियां जोरों शोरों से शुरू हो गई। वहीं शाम के समय क़रीब तीन बजे के आस पास मियागंज ब्लॉक में नवांगत खण्ड विकास अधिकारी श्रीमती दीप शिखा वर्मा अपने कार्यालय पहुंची जहां उनका ब्लॉक के समस्त कर्मचारियों ने पुष्प गुलदस्ता देकर स्वागत किया। वही नवांगत खण्ड विकास अधिकारी श्रीमती दीप शिखा वर्मा ने ब्लॉक के समस्त कर्मचारियों के साथ बैठक कर ब्लॉक की समस्त ग्राम पंचायतों में चल रहे विकास कार्यों पर चर्चा ग्राम पंचायत सहायक अधिकारी (एडीओ) प्रवीण दुबे व समस्त ग्राम सचिव के साथ की।

गीता सत्संग भवन सीता रोड, चंदौसी सवाल में चल रही श्रीमद्भागवत कथा

चंदौसी। सप्ताह के आठवें दिन कथाव्यास श्री पं. प्रशान्त कुमार मिश्र जी ने श्री कृष्ण के अन्य विवाहों की चर्चा, सुदामा चरित्र, नव योगेश्वर संवाद ,अवधूतोपाख्यान तथा परीक्षित मोक्ष की कथा सुनाई। व्यासजी ने भगवान के विवाहों की चर्चा करते समय बताया कि भगवान इस अवतार में सबके मनोरथ की पूर्ति करते हैं इसी क्रम में उन्होंने सोलह हजार एक सौ आठ विवाह रचाए। सबके साथ भगवान अलग अलग रूप में एक साथ ही विहार करते थे और सभी रानियों को यही लगता कि भगवान सबसे अधिक हमें ही प्रेम करते हैं।सुदामा चरित्र में व्यास जी ने यह बताया कि सुदामा भगवान के मित्र हैं, गरीब हैं।

सीडीओ की अध्यक्षता में डिजिटल क्रॉप सर्वे प्रशिक्षण की बैठक संपन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर के निर्देशानुसार डिजिटल क्रॉप सर्वे के लिए खण्ड विकास अधिकारियों एवं सहायक निकास अधिकारी पंचायत तथा वरिष्ठ प्राविधिक सहायक ग्रुप-बी को प्रशिक्षित करने के लिए एक अति आवश्यक बैठक मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय की अध्यक्षता में विकास भवन स्थित गांधी सभागार में आयोजित की गई, जिसमें कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ ही साथ समस्त खण्ड विकास अधिकारी तथा सहायक विकास अधिकारी पंचायत व कृषि विभाग के वर्ग-2 के समस्त कर्मचारी सम्मिलित हुए। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा समस्त प्रशिक्षार्थियों को निर्देशित किया गया कि वे शासनादेश में दी गई व्यवस्था के अनुसार समस्त ग्राम पंचायत सहायकों और रोजगार सेवकों का पंजीकरण के लिए आवश्यक सूचना सहित सूची तत्काल उप कृषि निदेशक को उपलब्ध करा दें और रणनीति बनाकर 16 अगस्त 2025 से पूर्व सर्वे कार्य की तैयारी पूर्ण कर लें, जिससे सर्वे का काम 16 अगस्त 2025 से प्रारम्भ हो जाये। उन्होंने कहा कि खण्ड विकास अधिकारियों को प्रतिदिन सायकाल सर्वेयरवार किये गये गाटा सर्वे कार्य की समीक्षा करेंगे तथा सर्वे रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप पर उप कृषि निदेशक को भेजेंगे। इस हेतु कृषि विभाग के वरिष्ठ प्राविधिक सहायक ग्रुप बी कृषि विभाग के कर्मचारियों तथा रोजगार सेवकों के सर्वे की रिपोर्ट खण्ड विकास अधिकारी को उपलब्ध करायेंगे तथा सहायक विकास अधिकारी पंचायत, पंचायत सहायकों की दैनिक प्रगति खण्ड विकास अधिकारी को उपलब्ध करायेंगे। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि प्रयास यह किया जाना है कि 10 दिन के अन्दर सर्वे का कार्य पूर्ण कर लिया जाये, साथ ही यह भी निर्देशित किया गया कि सर्वेक्षण के साथ ही साथ राजस्व निरीक्षक तथा अन्य सुपरवाइजर सर्वे कार्यों का अनुमोदन करते रहें। उप कृषि निदेशक विनोद कुमार द्वारा एप के माध्यम से सर्वे करने की विधि की जानकारी दी गई और यह भी बताया गया कि प्रत्येक गाटे के सर्वे के लिए सम्बन्धित सर्वेयर को 5 रू0 प्रति गाटा भुगतान किया जायेगा। जो सर्वेयर जितना अधिक काम करेगा उन्हें उतना अधिक धनराशि प्राप्त होगी।

हत्या की वारदातें बनी पुलिस के लिए चुनौती, आरोपित पकड़ से दूर

आरएसएस कार्यकर्ता अविनाश मिश्रा हत्या के राजफाश में पुलिस रूचि नहीं ले रही

गोण्डा। जिले के थाना क्षेत्रों में दो साल के भीतर हत्या की कई वारदातें हो चुकी हैं कई आरोपित पुलिस की पकड़ से अभी दूर हैं।यह वार दातें पुलिस के लिए चुनौती बन गई हैं।हत्या की कई वारदातों का अब तक राजफाश नहीं हो सका है।मोतीगंज थाना क्षेत्र के गरिबाजोत कपिसा गांव की शर्मावती 40 वर्ष पत्नी बलराम वर्मा की 13 सितंबर 2023 को उस समय हत्या कर दी गयी थी,जब वह अपने गन्ने के खेत में घास काटने गयी थी।23 महीने बीत जाने के बाद से पुलिस सिर्फ हत्याओं के राजफाश के बाबत पुलिस का सिर्फ यही जवाब है कि जल्द हत्या रोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे।

केस एक : मोतीगंज थाना क्षेत्र के गरिबाजोत कपिसा गांव की शर्मावती 40 वर्ष पत्नी बलरा म वर्मा की 13 सितंबर 2023 को उस समय हत्या कर दी गयी थी,जब वह अपने गन्ने के खेत में घास काटने गयी थी। उसी दिन मृतका शर्मावती का पति भी घर से रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था।इस घटना को 23 महीने बीत गए लेकिन आज तक न तो पुलिस और एसओजी की टीमें हत्या का राजफाश कर स कीं और न बलराम वर्मा को ही बरामद कर स कीं है।हालांकि, इस बहुचर्चित हत्याकांड के खुलासे और बलराम वर्मा की बरामदी के लिए तत्कालीन पुलिस अधीक्षक अंकित मित्तल के द्वारा मोतीगंज व धानेपुर थाने की पुलिस के साथ ही गोण्डा,बलरामपुर व बहराइच की एस ओजी टीमें भी लगाई गयी थीं। ऐसे में जहां मृत का के बच्चों में निराशा है,वहीं लोगों द्वारा पुलि स की कार्यशैली पर भी सवाल खड़े किए जा रहे हैं।

केस दो : इटियाथोक थाना क्षेत्र में आंगनबाड़ी कार्यकत्री की हत्या को एक साल 11 दिन बीत ने - के बाद भी गोण्डा पुलिस के हाथ खाली है। हत्या क्यों की गई,किसने की...? यह = सवाल लोगों के जहन में कौंध रहा है - लेकिन, पुलिस इन सवालों के जवाब - ढूंढ़ने में आगे बढ़ती नहीं दिख रही है।आशंका जताई जा रही है कि अब - शायद मामले की जांच भी बंद कर दी - गई है।हत्या के राजफाश के लिए पुलिस लग भग सैकड़ो से अधिक लोगों को उठाया और उनसे पूछताछ की लेकिन पूछताछ करने के बाद भी एक साल 11 दिन से नतीजा सिफर है।इटियाथोक के विशुनपुर तिवारी पंचायत के रामगढिया गांव में आंगनबाड़ी कार्यकत्री प्रमि ला तिवारी की 25 जुलाई 2024 को हत्या की गई थी।उनका शव घर से चार सौ मीटर दूर गन्ने के खेत में पड़ा मिला था।पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गला दबाकर हत्या किए जाने पुष्टि हुई।मृतका के पति देव प्रकाश तिवारी ने गांव के ही तीन लोगों पर कोटेदारी की रंजिश को लेकर हत्या किए जाने का मुकदमा दर्ज कराया था।लेकिनहत्या के एक वर्ष बीतने के बाद भी पुलिस खा ली हाथ है।शुरू आत में लगातार लोगों को हि रासत में लेकर पूछताछ किया गया,लेकिन अ भी नतीजा सिफर है।विभागीय सूत्र के अनुसार अभी तक सैकड़ो से अधिक लोगों से पूछताछ की जा चुकी है बावजूद इसके प्रकरण में कुछ हाथ नहीं लगा। कुल मिलाकर, यह राज अब तक नहीं खुल पाया है कि घटना क्यों और कि सने की है।उधर एक वर्ष के दौरान इटियाथोक में तीन थानाध्यक्ष भी बदले जा चुके हैं, लेकिन नतीजा सिफर ही है।थानाध्यक्ष कृष्ण गोपाल राय ने कहा कि हत्या के मामले में साक्ष्य संक लन की कार्रवाई की जा रही है जल्द ही खुला सा होगा।

केस तीन : धानेपुर थाना क्षेत्र में गाँव ख्वाजा जोत पांडेयपुर देवरहना निवासी आरएसएस कार्यकर्ता अविनाश मिश्र (23) 9 जुलाई को हत्या करके बाग में फेंक दिया था।आरएसएस कार्यकर्ता के हत्याकांड का खुलासा न होने से लोगों में आक्रोश पनप रहा है।अविनाश मिश्रा हत्याकांड का एक महीने बाद भी खुलासा नहीं किया गया। ऐसे में लोगों में दहशत है। जबकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गला दबाकर हत्या की पु ष्टि हो चुकी है।अविनाश के पिता कमला प्रसाद मिश्र ने आरोपियों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज करा चुके हैं।पुलिस का सिर्फ एक रटा-रटा या बयान आता है कि इस मामले के बेहद करी ब पहुंच चुके है।आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए जरूरी साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं।जल्द ही मामले में गिरफ्तारी कर कार्रवाई की जाएगी।

केस चार : देहात कोतवाली क्षेत्र में 14 जुलाई को टिकरिया निवासी विशाल 14 वर्ष की धार दार हथियार से हत्या कर दी गई थी।तीन दिनबाद विशाल का शव सोमवार को गन्ने के खेत में मिला,जिसका अधिकांश हिस्सा जानवरो ने नोंचकर खा गए थे।विशाल के पिता ने गांव के ही पांच लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई थी।वही मृतक के पिता ने पुलिस पर गं भीर आरोप लगाए थे की पुलिस उन्हें लोगों को ही पकड़ कर थाने पर लाती है और थर्ड डिग्री देकर टॉर्चर करती है और उल्टा जबरदस्ती जुर्म कबूलने की बात करती है जिसकी शिकायत मृ तक के पिता ने पुलिस अधिकारी के ऑफिस में आकर की थी। पुलिस अधीक्षक ने घटना को संज्ञान में लेते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के आदेश दिए थे पुलिस ने विशाल की हत्या में दो आरोपियों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया है लेकिन विशाल के हत्या 25 दिन बीत गए है अभी हत्या में नामजद तीन आरोपी पुलिस की पकड़ से दूर हैं वही विशाल की हत्याकांड का खुलासा करने के लिए एसओजी समेत पुलिसकि कई टीमें लगाई गई हैं साथ ही जरूरी दिशा निर्देश दिए गए हैं

लापता छात्र का तालाब में मिला शव,एक आँख गायब,हत्या की आशंका

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। जिले के इटियाथोक थाना क्षेत्र में 25 घंटेसे गायब होने के बाद एक दस वर्षीय छात्र का शव घर से 6 सौ दूर नवरैया तालाब में मिला है। मृतक छात्र की एक आंख भी गायब थी। बीते बुधवार से छात्र दोपहर करीब 12 बजे घर से बिना बताए लापता हों गया था।घटना की सूच ना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने तत्काल गोताखोरों को बुलवाकर तालाब में खोजबीन शुरू कर दी थी।तालाब मे काफी खोजबीन के बाद गोताखोरों ने बाहर निकाला।पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा दिया है।पोस्टमा र्टम रिपोर्ट आने के बाद छात्र के मौत के कार णों का पता चल पाएगा।घटना इटियाथोक था ना क्षेत्र के बेलवा गांव की है।मृतक की पहचान शिवम चौबे पिता राजेश चौबे के रूप में हुई है।परिजनों ने 6 अगस्त को गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी पिता राजेश चौबे ने बताया कि उनका बेटा शिवम 6 अगस्त को दोपहर करीब 12 बजे बिना बताए घर से कहीं चला गया था। शाम तक जब वह वापस नहीं लौटा,तो परिज नों ने उसकी खोजबीन शुरू की थी लेकिन देर शाम को इटियाथोक थाने में गुमशुदगी की रिपो र्ट दर्ज कराई गई थी।गुरुवार सुबह शिवम के क पड़े तालाब के किनारे मिले तो लोगों ने इसकी सूचना इटियाथोक पुलिस को दी पुलिस ने गो ताखोरों को बुलाया,जिन्होंने मात्र दस मिनट में तालाब से शव बरामद कर लिया है।

शिवम के माँ की पहले हो चुकी है मौत

छात्र शिवम की दादी शिवकुमारी ने बताया कि उनका पोता घर पर खाना खा रहा था।इसी दौ रान गांव का एक लड़का उसे बुलाने आया और वह अपने साथ लेकर चला गया।उसके बाद से शिवम वापस घर नहीं लौटा काफी खोजबीन की गई,वही दादी ने बताया कि शिवम जब मात्र तीन महीने का था,तभी उसकी मां उसे छोड़कर चली गई थी।तब से उन्होंने ही उसका पालन-पोषण हमने किया था।थानाध्यक्ष कृष्ण गोपाल राय ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का पता चल पाएगा। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में तिरंगा प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

रायबरेली। हर-घर तिरंगा कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद के सभी माध्यमिक विद्यालयों में तिरंगा प्रदर्शनी का आयोजन कराया गया जा रहा है। साथ ही टेलीविजन पर हर-घर तिरंगा कार्यक्रम के वीडियों छात्र-छात्राओं को दिखाया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा छात्र-छात्राओं को आजादी के नायकों के बारे में जानकारी दी गयी। इसके साथ राष्ट्र प्रेम के बारे में अध्यापकों द्वारा छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गयी।इस कार्यक्रम में पीएम राजकीय इण्टर कालेज, पीएम श्री राजकीय बालिका इण्टर कालेज, के0वी0 सिन्हा राजकीय बालिका इण्टर कालेज, आरआर सिंह बैदिक इण्टर कालेज, राजकीय हाईस्कूल, बेला-भेला, रायबरेली, राजकीय बालिका हाईस्कूल, जगतपुर, रायबरेली एवं राजकीय हाईस्कूल रोझैइयाभीखमशाह रायबरेली सहित सभी माध्यमिक विद्यालयों ने बढ़चढ़ कर प्रतिभाग किया। विद्यालयों में बच्चों के मध्य हर घर तिरंगा कार्यक्रम को लेकर संवाद किया गया।

बेटियों की सेहत और सम्मान के लिए एसएसबी की मुहिम

200 से अधिक छात्राएं हुई लाभान्वित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। एसएसबी 59वीं वाहिनी, नानपारा द्वारा सीमावर्ती कार्यक्षेत्र में सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए राजकीय इंटर कॉलेज, मधवापुर और श्री शिवशंकर सिंह इंटर कॉलेज, अमृतपुर में एक विशेष जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूल एवं ग्रामीण छात्राओं को व्यक्तिगत स्वच्छता और उत्तम स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए 1662 सैनिटरी पैड वितरित किए गए। इस पहल से लगभग 200 छात्राओं और महिलाओं को निःशुल्क सैनिटरी पैड प्रदान किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरियों में व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना और स्वच्छता उत्पादों की सुलभता के बारे में जानकारी देना था, जिससे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी सरकारी योजनाओं को मजबूती दी जा सके। यह आयोजन 59वीं वाहिनी के कमांडेंट कैलाश चंद रमोला के मार्गदर्शन में, सहायक कमांडेंट प्रशांत पोतभारे के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजकीय इंटर कॉलेज, मधवापुर की प्राचार्या शकुंतला देवी, श्री शिवशंकर सिंह इंटर कॉलेज, अमृतपुर के प्रधानाचार्य लाल बिहारी कुशवाहा और मधवापुर की प्रधान आशा देवी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। सहायक कमांडेंट प्रशांत पोतभारे ने कहा कि इस प्रकार की पहल छात्राओं को स्वच्छता के प्रति न केवल जागरूक करती है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी एक सार्थक कदम है। कार्यक्रम में दोनों कॉलेजों के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण, छात्राएं और बड़ी संख्या में ग्रामवासी शामिल रहे, जिससे यह आयोजन सफल और प्रेरणादायक बन सका। इस दौरान दोनों कॉलेजों के प्रधानाचार्य एवं ग्राम प्रधान ने अपने संबोधन में एसएसबी की इस सकारात्मक पहल की सराहना की और इसे अत्यंत लाभकारी बताया। 59वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल इस प्रकार के सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने हेतु निरंतर संकल्पबद्ध है।

आजम हसन शेख ने विनीत सिंह बनकर की शादी,बंगाल ले गया तो सामने आया सच

कैनविज टाइम्स संवाददाता

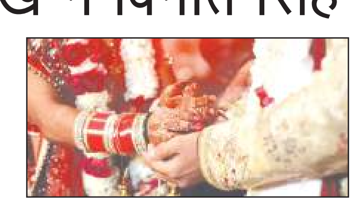

गोण्डा। जिले में लव जिहाद के मामला सामने आया है।यहां धर्म छिपाकर युवती से शादी कर ने जबरन धर्म परिवर्तन और गर्भपात करवाने के आरोप में चार अभियुक्तों के खिलाफ माम ला दर्ज किया गया है।पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने बुधवार को बताया कि जिले के कोतवाली नगर थाना क्षेत्र की निवासी एक युव ती की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया है।उन्होंने बताया कि शिकायत के अनुसार,वर्ष 2017 में सिटी लाइफ शॉपिंग मॉल के उद्घाटन के दौरान युवती की मुलाकात एक युवक से हुई जिसने अपना नाम विनीत सिंह बताया था।अ धिकारी ने कहा कि आपस में संपर्क बढ़ने पर दिसंबर 2017 में दोनों ने एक स्थानीय मंदिर में हिन्दू रीति-रिवाज से विवाह कर लिया और प ति -पत्नी के रूप में साथ रहने लगे।उन्होंने क हा कि बाद में पता चला कि युवक का असली नाम आजम हसन शेख है,जो मुस्लिम समुदाय से संबंधित है।युवती को यह पता चलने के बाद दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया।शिकायत में आरोप लगया गया है कि आरोपी व्यक्ति युवती को पश्चिम बंगाल में स्थित अपने घर ले गया और वहां उसके पिता अकबर अली,मां राशिदा और बहन मनुजा ने धर्म परिवर्तन कराने के लि ए दबाव बनाया।उन्होंने कहा कि शिकायत में कहा गया है कि युवती को मौलवी के पास ले जाकर धर्म परिवर्तन करवाते हुए मुस्लिम रीति-रिवाज से निकाह करवाया गया।शिकायत के अनुसार,निकाह के बाद परिजन को युवती के गर्भवती होने की जानकारी मिलने पर उन्होंने दबाव डालकर जबरन उसका गर्भपात भी कर वा दिया।एसपी ने बताया कि इस बीच युवती किसी तरह भागकर गोंडा आ गई और इलाज कराने के बाद अपने मायके में रहने लगी। युव ती ने आरोप लगाया है कि 29 जुलाई को आ जम ने उसे फोन पर ब्लैकमेल करते हुए प्राइ वेट फोटो वायरल करने की धमकी दी।युवती ने शिकायत में कहा कि उसकी सहेलियों को फो न कर उसके मुस्लिम धर्म स्वीकार किए जाने की बात बताई गई,जिससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा।कोतवाली नगर प्रभारी निरीक्षक विवेक त्रिवेदी ने बताया कि युवती की तहरीर के आधार पर नामजद आरो पियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता और उत्त र प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम, 2021 की धारा 3/5 (1) अंतर्गत प्राथमिकी दर्ज की गई और मामले की जांच जारी है।

जनपद मे कई सीओ के कार्य क्षेत्र में बदलाव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। अभिषेक दावाच्या, भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी,बैच 2023,का स्थानां तरण सहायक पुलिस अधीक्षक,जनपद गोण्डा के पद पर किया गया है।उनके आगमन के उप रांत जनपद में कानून एवं शांति व्यवस्था को प्र भावी रूप से बनाए रखने हेतु पुलिस उपाधी क्षकों के कार्यक्षेत्र का पुनः निर्धारण किया गया है।जिसमें अभिषेक दावाच्या को सहायक पुलिस अधीक्षक/क्षेत्राधिकारी कर्नलगंज के पद पर नियुक्त किया गया है।विनय कुमार सिंह पूर्व में क्षेत्राधिकारी कर्नलगंज,को क्षेत्राधिकारी सदर का दायित्व सौंपा गया है।साथ ही राजेश कुमार सिंह,पूर्व में क्षेत्राधिकारी सदर,को क्षेत्रा धिकारी यातायात का उत्तरदायित्व प्रदान किया गया है।बता दें कि अभिषेक दावाच्या,वर्ष 20 23 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं।इनका मूल निवास जयपुर, राजस्थान है तथा ये बी.टेक (इलेक्ट्रिकल इंजीनियर,आईआईटी भुवनेश्वर) उपाधि धारक हैं।

सीडीओ ने प्राथमिक विद्यालय देदौर का किया निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय द्वारा प्राथमिक विद्यालय देदौर प्रथम विकास क्षेत्र सतांव का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में शिक्षण कार्य, छात्र उपस्थिति, मध्याह्न भोजन योजना तथा मूलभूत सुविधाओं की स्थिति का जायजा लिया। निरीक्षण के समय कुल नामांकित छात्र संख्या 48 के सापेक्ष 40 छात्र उपस्थित थे। प्राथमिक विद्यालय देदौर प्रथम में प्राथमिक विद्यालय देदौर द्वितीय का युग्मन किया गया है। युग्मित विद्यालय के 19 बच्चों के सापेक्ष 17 बच्चों ने विद्यालय में नामांकन करवा लिया है। निरीक्षण में पाया गया कि शिक्षकगण समय पर उपस्थित थे तथा कक्षा में नियमित शिक्षण कार्य हो रहा था। मुख्य विकास अधिकारी ने शिक्षकों से संवाद कर शैक्षणिक गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। साथ ही, उन्होंने विद्यार्थियों से भी बातचीत कर उनकी शैक्षणिक स्थिति की जानकारी ली। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत भोजन की गुणवत्ता एवं स्वच्छता की भी जाँच की गई, जिसमें संतोषजनक स्थिति पाई गई। विद्यालय परिसर की साफ-सफाई और शौचालयों की स्थिति की सराहना की गई, किन्तु कुछ छोटे-मोटे सुधारों के लिए निर्देश दिए गए। मुख्य विकास अधिकारी ने विद्यालय प्रबंधन को शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा आधारभूत संरचना के सुधार हेतु आवश्यक कदम उठाने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चों को एक स्वच्छ, सुरक्षित एवं प्रेरणादायक शैक्षणिक वातावरण प्रदान करना प्रशासन की प्राथमिकता है।

नन्हें कदमों की तेज़ रफ्तार, अंजुमन इस्लामिया स्कूल में दौड़-कूद प्रतियोगिता का आयोजन

नानपारा, बहराइच। नगर के बेलदारन टोला स्थित अंजुमन इस्लामिया स्कूल में दौड़ और कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में 6 फीट और 8 फीट लंबी कूद सहित विभिन्न शारीरिक गतिविधियाँ शामिल रहीं। बच्चों ने अपनी फुर्ती और साहस का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में बच्चों ने जिस उत्साह और अनुशासन के साथ भाग लिया, उसकी सभी उपस्थित गणमान्यजनों ने सराहना की। कार्यक्रम का संचालन आसिफ़ ख़ान ने किया, जबकि अध्यक्षता मौलाना अफ़ज़ल नदवी ने की। इस दौरान मौलाना इब्राहीम, मास्टर सलीम, मोईन अहमद और कारी आमिर सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। दौड़ प्रतियोगिता में अबू हुरैरा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि मोहम्मद अनस द्वितीय और मोहम्मद यासिर तृतीय स्थान पर रहे। आयोजकों के अनुसार, प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों के लिए अगले सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन ने न केवल बच्चों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक भावना को बढ़ावा दिया, बल्कि उनके शारीरिक विकास और आत्मविश्वास में भी वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

नानपारा के शिवभक्तों ने बैजनाथ धाम में किया जलाभिषेक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। श्रावण मास में नानपारा के शिवभक्तों ने कांवड़ लेकर लम्बी पैदल यात्रा करते हुए अंतिम सोमवार को देवघर स्थित पवित्र ज्योतिर्लिंग श्री बैद्यनाथ धाम में जलाभिषेक कर मंगलकामना की। बताते चलें कि इस पावन अवसर पर कोतवाली नानपारा क्षेत्र के शिवभक्त निर्मल श्रीवास्तव, वेद प्रकाश श्रीवास्तव, मुरली मनोहर श्रीवास्तव, ध्यान प्रकाश श्रीवास्तव, मनोज श्रीवास्तव, जशवंत मिश्रा, संतोष पाठक व राजाराम करीब एक सप्ताह पूर्व जलाभिषेक व पूजन दर्शन के लिए सनातनी उत्साह के साथ भगवा धारण कर झारखण्ड के देवघर रवाना हुए। यात्रा में शिवभक्तों का जत्था सबसे पहले बिहार राज्य के सुल्तानगंज पहुंचा जहाँ श्री अजगैवीनाथ मंदिर में दर्शन करने के पश्चात उत्तरवाहिनी गंगाजल कांवड़ में भरकर बोलबम के नारों के साथ बाबा वैद्यनाथ धाम के लिए करीब सवा सौ किलोमीटर की भक्तिपूर्ण पैदल यात्रा शुरू की। समतल मार्ग, जंगल, पहाड़ व नदी जैसे कठिन परम्परागत रास्तों से होते हुए श्रावण मास के चौथे सोमवार को सकुशल पहुंचकर शिवभक्तों ने श्री बैद्यनाथ धाम में जलाभिषेक करके भव्य दर्शन किये। इसके पश्चात वहां से श्री वासुकीनाथ धाम स्थित शिवगँगा में स्नान व जलाभिषेक किया। शिवभक्तों ने अध्यात्मिक यात्रा के दौरान फोटो भेजते हुए अपने अनुभव भी साझा किये हैं।भक्ति, आस्था और उल्लास के साथ शिवभक्त ध्यान प्रकाश श्रीवास्तव ने बताया कि यह काँवड़ यात्रा केवल धार्मिल आस्था का प्रतीक नहीं, वरन मानसिक व शारीरिक रूप से भी बेहद लाभकारी है। निर्मल श्रीवास्तव ने कहा कि बाबा वैद्यनाथ अपने भक्तो की हर मंगल कामना पूर्ण करते हैं बस आस्था और समर्पण की भावना की आवश्यकता होती है। जशवंत मिश्रा ने लम्बी यात्रा पर कहा कि श्रद्धा जब क़दमों के जरिये समर्पण बनकर उतरती है तो कोई भी दूरी दूर नहीं लगती है।

राजकीय स्वर्ण जयन्ती पौधशाला बभनी में उपलब्ध हैं सभी प्रकार के पौध: जिला उद्यान अधिकारी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच । जिला उद्यान अधिकारी दिनेश चौधरी ने बताया कि जनपद बहराइच के राजकीय स्वर्ण जयन्ती पौधशाला, बभनी, बहराइच पर पौधशाला के अतिरिक्त मिनी सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स नर्सरी, एग्रो फॉरेस्ट्री एवं बनाना टिश्यू कल्चर लैब सहित 04 उत्पादन इकाईयॉ संचालित है। जहॉं पर बनाना टिश्यू कल्चर लैब में उत्पादित जी-9 प्रजाति के केले का पौध रू. 18/प्रति पौधा की दर से धनराशि जमा कर प्राप्त किया जा सकता है।''मिनी सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स'' का मुख्य उद्देश्य कृषकों को रोगमुक्त व स्वस्थ्य शाकभाजी पौध उपलब्ध कराना है। किसान भाई यहॉं पर उत्पादित बेहन पौध रू. 2/प्रति पौधा की दर से प्राप्त कर सकते है तथा बेमौसम शाकभाजी उत्पादित कर कृषि को अपनी मुख्य आय बना सकता है। एक्सीलेन्स नर्सरी में किसान अपना बीज देकर रू. 1/प्रति पौधा शुल्क जमा कर पौध उत्पादित करा सकते हैं। आगामी मौसम में सब्जी उत्पादन के लिए किसान भाई अपनी रूचि के अनुसार शाकभाजी बीज देकर रोपाई हेतु पौध तैयार करा सकते हैं। आगामी मौसम मसाला मिर्च, शिमला मिर्च, सेम, टमाटर, गोभी आदि के उपर्युक्त समय है।

पुलिस ने चोरी करने के आरोपी को किया गिरफ्तार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधी क्षक पश्चिमी राधेश्याम राय के पर्यवेक्षण व क्षे त्राधिकारी तरबगंज उमेश्वर प्रभात सिंह के नेतृ त्व में थाना तरबगंज पुलिस ने वांछित अभियु क्त करन कनौजिया पुत्र रोहन कनौजिया निवा सी चांई टोला थाना नवाबगंज को गिरफ्तार कि या है।25 मई को अवर अभियन्ता सुरेश कुमार ने 33/11 केवी सब स्टेशन तरबगंज द्वारा था ना तरबगंज में लिखित तहरीर दी गयी थी कि बीती रात्रि अज्ञात व्यक्तियों द्वारा इण्डियन बैंक के पास से 395 तार (150 मीटर) तथा ब्रह्मा कुमारी आश्रम के पास निर्माणाधीन डबल पोल से 25 के.वी.ए.प्रवर्तक चोरी कर लिया गया। वादी की लिखित तहरीर के आधार पर तरबगं ज थाने में सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजी कृत हुआ था।पुलिस ने वांछित आरोपी को सात अगस्त को करन कनौजिया पुत्र रोहन कनौजि या को गिरफ्तार कर लिया गया।गिरफ्तार अभि युक्त के विरूद्ध थाना तरबगंज पुलिस के द्वारा अग्रिम विधिक कार्यवाही कर न्यायालय रवाना किया गया।

व्यापार मण्डल और अधिवक्ता संघ ने अमेरिकी उत्पादों का किया विरोध प्रदर्शन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पूरनपुर। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल और अधिवक्ता संघ ने विरोध प्रदर्शन कर अमेरिकी उत्पादों का बायकॉट करने का कहा वही हंसराज गुलाटी ने अमेरिका के राष्ट्रपति को लताड़ाते हुऐ कहा डोनल्ड ट्रंप ने अगर ये टैरिफ वापस नही लिया तो उनके विदेशी उत्पाद भी भारत मे बिकने नही देंगे पूरे भारत से बायकॉट कर देंगे और उनकी भी भारी खामिजयाना भुगतना पड़ सकता और सारे उत्पादों का पूर्णता बहिष्कार करेंगे सभी ने मुर्दाबाद के नारे लगाते हुऐ कहा डोनल्ड ट्रंप खुद तो रूसी उत्पादों का उपयोग करता और भारत पर रोब जमाना चाहता है डोनल्ड सुन ले भारत किसी से कमजोर नही भारत पर गुंडागर्दी नहीं चलेगी डोनाल्ड ट्रंप होश मे आ और कहा कि एकतरफा टैरिफ लगाते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूसी तेल खरीदने की वजह से भारत पर अतिरिक्त 25% टैरिफ लगाया गया है अमेरिका के इस कदम से भारतीय निर्यातक, विशेष रूप से छोटे और मध्यम उद्योग प्रभावित हो सकते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर कुल 50 फीसदी टैरिफ लगाने की घोषणा है अब भारत के पास क्या विकल्प है। ये हर कोई जानना चाहता है. ट्रंप के टैरिफ के जवाब में भारत का भी बयान आ गया है, भारत ने कुल 50 फीसदी टैरिफ को अनुचित कदम बताया है साथ ही भारत का कहना है कि अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे भारत के पास कूटनीतिक वार्ता, ऊर्जा आयात विविधीकरण, जवाबी टैरिफ और घरेलू आर्थिक उपायों का विकल्प है आपको बता दूं, अमेरिका ने जो भारत पर अतिरिक्त 25 फीसदी टैरिफ लगाया है, वो 21 दिन के बाद लागू होगा यानी भारत के पास अभी 21 दिन का वक्त है और इस दौरान दोनों देशों के बीच बातचीत के जरिये कोई रास्ता निकल सकता फिलहाल भारत अपनी तेल आवश्यकताओं का करीब 85% आयात करता है। वर्तमान में रूस से करीब 40% तेल आयात करता है।अमेरिका की नाराजगी दूर करने के लिए भारत सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक और नाइजीरिया जैसे अन्य तेल निर्यातक देशों से आयात बढ़ा सकता है. हालांकि, रूसी तेल की तुलना में ये विकल्प महंगे हो सकते हैं, जिससे लागत बढ़ सकती है भारत विश्व व्यापार संगठन जैसे मंचों पर इस मुद्दे को उठा सकता है, यह तर्क देते हुए कि टैरिफ भेदभावपूर्ण है और विश्व व्यापार संगठन के सिद्धांतों का सीधा उल्लंघन करता है।भारत जी 20 जैसे मंचों पर भी समर्थन जुटा सकता है। भारत और अन्य क्षेत्रीय मंचों के माध्यम से रूस, चीन, और अन्य सहयोगियों के साथ संबंधों को मजबूत कर सकता है ताकि टैरिफ के प्रभाव को संतुलित किया जाए।अमेरिका के नहीं मानने पर भारत भारत दक्षिण अमेरिका जैसे वेनेजुएला या अफ्रीका के अन्य देशों से तेल आयात के नए स्रोत तलाश कर सकता है हालांकि यह लॉजिस्टिक्स और लागत के मामले में चुनौतीपूर्ण हो सकता है. भारत नवीकरणीय ऊर्ज़ा सौर, पवन।और घरेलू तेल व गैस उत्पादन को बढ़ावा दे सकता है अगर बातचीत से रास्ता नहीं निकलता है तो भारत भी पलटवार कर सकता है उदाहरण के लिए भारत पहले 2019 में अमेरिकी बादाम, सेब, और स्टील पर टैरिफ लगा चुका है अमेरिका टैरिफ से प्रभावित भारत अपने घरेलू उद्योगों (जैसे टेक्सटाइल, फार्मा, और आईटी) को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी या प्रोत्साहन दे सकता है. ताकि टैरिफ के प्रभाव को कम किया जाए भारत निर्यात के लिए अमेरिकी बाजार का विकल्प तलाश कर सकता है भारत का अमेरिका के साथ व्यापार घाटा 2024 में 45.8 अरब डॉलर था, और टैरिफ से यह और बढ़ सकता है विरोध करने वालो मे प्रदेश उपाध्यक्ष हंसराज गुलाटी, नगर पालिका अध्यक्ष शैलेन्द्र गुप्ता,अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संजय सक्सेना,सर्राफा संघ अध्यक्ष संजय गुप्ता, वरिष्ठ समाजसेवी अशोक खंडेलवाल,जाहिद खान, नवीन खंडेलवाल, विजय पाल सिंह विक्की, दीपक अग्रवाल, संजय पाण्डेय, हरगोविंद बाजपेई, तारिक कुरैशी, ब्रजेश गुप्ता, सुमित सचदेवा, सुरेन्द्र अग्रवाल, संजीव गुप्ता, राहुल जायसवाल, अनुज गुप्ता, बलजीत सिंह खैरा, अमन नागी, मनोज गुप्ता सोना, सुधाकर पाण्डेय, शाहजी खान, सलमान खान, हर्ष गुप्ता कपिल जायसवाल, सुशील सक्सेना, सचिन,आशीष रस्तोगी, राजेश गुप्ता, ब्रज खंडेलवाल सहित कई लोग मौजूद रहे।

कुकहा रामपुर में लाखों रुपये की लागत से निर्मित नलकूप भवन धंसा

कुकहा रामपुर में दो वर्ष पूर्व लाखों रुपये की लागत से निर्मित नलकूप भवन के निर्माण में घटिया सामग्री की गई थी इस्तेमाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी । विकास खण्ड सिंहपुर की ग्राम पंचायत कुकहा रामपुर में दो वर्ष पूर्व लाखों रुपये की लागत से निर्मित भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी आदर्श नलकूप भवन पहली ही बारिश में छत सहित जमीन में धंस गया।यह घटना ग्रामीणों के लिये हैरानी और चिंता का विषय बन गई है। नलकूप की पूरी संरचना मिट्टी में समा गई जिससे इसके निर्माण की गुणवत्ता पर गम्भीर सवाल खड़े हो गये हैं लेकिन विभागीय अधिकारी कुम्भकर्णी नींद में सो रहे हैं।ग्रामीणों की मानें तो यह नलकूप सरकारी योजना के अंतर्गत किसानों की सिंचाई सुविधा को ध्यान में रखकर बनाया गया था लेकिन पहली ही बरसात में इसका जमींदोज हो जाना यह दर्शाता है कि निर्माण कार्य में भारी अनियमितताएं बरती गईं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि ठेकेदार द्वारा घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया गया और जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा भी निर्माण के समय कोई निगरानी नही की गई है।घटना के बाद से ग्रामीणों में नाराजगी जाहिर की है। ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही किये जाने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते गुणवत्ता की जांच होती तो यह स्थिति उत्पन्न नही होती। इस मामले में अभी तक किसी भी विभागीय अधिकारी की ओर से प्रतिक्रिया नही आई है।अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस लापरवाही पर जनपद के आला अधिकारियों द्वारा क्या कदम उठाता जाता है और जिम्मेदारों को कब तक जवाबदेह बनाया जाता है यह भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है।

चकबन्दी की मांग को लेकर अधिकारियों ने बैठकर तैयार किया प्रस्ताव

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। जनपद के हजारा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव चंदिया हजारा में चकबन्दी की मांग को लेकर एक अहम बैठक आयोजित की गई। गांव के पूर्व प्रधान ने शिकायत की थी कि सैकड़ों एकड़ कृषि भूमि पर अवैध कब्जा हो चुका है, जिससे सरकारी भूमि की स्थिति स्पष्ट नहीं हो पा रही है। उन्होंने चकबन्दी कराकर सरकारी जमीन चिन्हित करने और पात्र लाभार्थियों को पट्टे आवंटित करने की मांग की थी। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए प्रशासनिक अधिकारियों की एक टीम गांव पहुंची और क्षेत्र पंचायत सदस्यों व ग्रामीणों के साथ बैठक की। बैठक में ग्रामीणों ने भी चकबन्दी की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि इससे गांव में जमीन संबंधी विवाद समाप्त होंगे और पारदर्शिता आएगी। अधिकारियों ने ग्रामीणों की मांग को उचित मानते हुए चकबन्दी के लिए प्रस्ताव तैयार किया, जिसे संबंधित विभाग को भेजा जाएगा। उम्मीद जताई जा रही है कि प्रस्ताव स्वीकृत होने के बाद गांव में जल्द ही चकबन्दी की प्रक्रिया शुरू की जाएगी, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पहुंच सकेगा। गुरुवार सुबह दस बजे पूर्व प्रधान कुमुद रंजन राय ने बताया कि टीम गांव में पहुंची और लोगों ने चकबन्दी की मांग पर सहमति दी है। जिससे कि सरकारी जमीन पर किए गए अवैध कब्जा हटेगा और पात्रों को लाभ मिलेगा।

कोटेदार के समर्थन में पहुंचे ग्रामीण 13 लोगों ने दिया शपथ पत्र

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। तहसील क्षेत्र के गांव कबीरपुर कसगंजा के रहने वाले एक दर्जन से ज्यादा ग्रामीण कोटेदार सुखपाल के समर्थन में तहसील परिसर में पहुंचे और एसडीएम को 13 लोगों ने शपथ पत्र देते हुए कहा कि कोटेदार हर माह राशनकार्ड धारकों समय से राशन वितरण करते हैं। कोटेदार से ग्रामीणों को किसी भी तरह की कोई समस्या नहीं है और कुछ लोग राजनीतिक रंजिश एवं दबाव बनाने के लिए। कोटेदार की झूठी शिकायतें कर उनको बदनाम कर अधिकारियों को गुमराह किया जा रहा है। इसी को लेकर ग्रामीणों ने तहसील परिसर में पहुंचकर एसडीएम को कोटेदार के समर्थन में शपथ पत्र दिए हैं।

उपनिवंधक कार्यालय में पति द्वारा संपत्ति के बैनामे को लेकर पत्नी ने किया विरोध

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। कोतवाली क्षेत्र के सिरसा रोड नरायनपुर निवासी नेहा देवी पत्नी ज्ञान प्रकाश बाजपेई ने गुरुवार दोपहर तीन बजे बताया कि उसके दो बच्चे है। पति ने बच्चों सहित पत्नी को घर से निकाल दिया है और पति के द्वारा तलाक का एवं संपत्ति का मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन है। बच्चों को हिस्सा न देने पड़े इसलिए पीड़िता का पति संपत्ति को बेच रहा है। जबकि पिता की संपत्ति पर नाबालिग बच्चों का भी अधिकार और बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी अकेले निभा रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि उप–निबंधक कार्यालय पूरनपुर में बिना उनकी सहमति के बैनामा किया जा सकता है, जिससे उन्हें और उनके बच्चों को भारी नुकसान होगा। नेहा देवी ने स्पष्ट किया कि यदि जबरन बैनामा किया गया, तो वह बच्चों सहित आत्मदाह को मजबूर होंगी, जिसकी जिम्मेदारी उनके पति ज्ञान प्रकाश और उनके भाई आदित्य प्रकाश व प्रशासन की होगी। पीड़िता ने जिलाधिकारी से शिकायतकर न्याय की गुहार लगाई है।

तहसील प्रशासन ने तीन दुकानों का रुकवाया निर्माण

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना हजारा क्षेत्र के गांव चंदिया हजारा की रहने वाली निर्मला दास ने गुरुवार सुबह 11 बजे एसडीएम को दिए शिकायती पत्र में बताया। कि वह मछली मार्केट के दक्षिण साइड में दुकान की जगह है। जिसपर महिला निर्मला दास और उसी के पड़ोस में पार्वती गाइन व शंकर राय भी अपनी दुकानों का निर्माण करा रहे थे। आरोप है कि तहसीलदार ने तीनों दुकानों के निर्माण कार्य को रुकवा दिया था। पर अब पार्वती गाइन और शंकर राय अपनी दुकानों का निर्माण करा रहे हैं और निर्माला दास को दुकान निर्माण नही कराने दिया जा रहा है। जिससे परेशान महिला ने उपजिलाधिकारी से शिकायत की है।

जनपद में यूरिया की लगेंगी तीन रैक

पीलीभीतकैनविज टाइम्स संवाददाता। जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि खरीफ फसलों के लिए पर्याप्त मात्रा में यूरिया की आपूर्ति के प्रयास निरन्तर किये जा रहे है। जिसके फलस्वरूप जनपद को 03 दिवस के अन्दर तीन रैक यूरिया प्राप्त होने जा रही है। दिनांक 07.08.2025 को इफको कम्पनी की कुल 2760 मै0टन यूरिया पीलीभीत रैक पाइण्ट पर लग चुकी है। यूरिया समस्त सहकारी समितियां पर भेजी जा रही है। दिनांक 08.08.2025 एवं 09.08.2025 को एन0एफ0एल0 कम्पनी की कुल 2626 मै0टन की रैक तथा दिनांक 09.08.2025 को आई0पी0एल0 कम्पनी की कुल 1250 मै0 टन यूरिया की रैक लगने जा रही है, जिसको सहकारी समितियों तथा निजी उर्वरक विक्रेताओं को भेजा जायेगा। इस प्रकार जनपद में यूरिया की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध हो जायेगी। अभी तक जनपद को 69904 मै0 टन यूरिया की आपूर्ति हुयी है, जिसके सापेक्ष 66225 मै0 टन यूरिया वितरण हो चुका है। कृषक भाईयों से अनुरोध कि अपनी जोत के आधार पर ही यूरिया क्रय करें।

मगरमच्छ ने पिता के सामने पुत्र को निगला

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। तहसील के राघवपुरी गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। गांव निवासी सुलहा सिंह उर्फ सुखविंदर सिंह ने बताया गया कि वह अपने पुत्र मोहन सिंह व पोते के साथ खेत पर जा रहा था, जहां बाढ़ का पानी भरा था। तभी अचानक एक विशाल मगरमच्छ ने मोहन पर हमला कर दिया और देखते ही देखते उसे पानी में खींच ले गया। यह दृश्य मोहन के पिता ने अपनी आंखों से देखा, लेकिन वे कुछ भी नहीं कर सके।घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीण मौके पर पहुंचे, पर मगरमच्छ तब तक वहां से जा चुका था। गुरुवार को भी खोजबीन का कार्य जारी रहा, लेकिन युवक का अब तक कोई सुराग नहीं मिला है। इस दर्दनाक हादसे ने पूरे गांव को झकझोर कर रख दिया है, और वृद्ध माता–पिता पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। गुरुवार शाम पाँच बजे एसडीएम ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है,युवक की तलशा की जा रही हैं। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया युवक गुमशुदगी दर्ज की गई हैं और तलाश की जा रही हैं। युवक के पिता ने बताया कि उनकी आंखों के सामने मगरमच्छ ने उनके पुत्र को निगल लिया है।

शहर के समग्र विकास एवं स्वच्छता व्यवस्था हेतु विद्यालय प्रबंधको के साथ सहयोग व सहभागिता बैठक आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। नगर पालिका अध्यक्ष डॉ आस्था अग्रवाल द्वारा शहर के समग्र विकास और स्वच्छता व्यवस्था हेतु विद्यालय के प्रधानाचार्य और प्रबंधकों के साथ सहयोग और सहभागिता की बैठक आयोजित की गई। इस संबंध में विद्यालयों के प्रबंधकों और प्रधानाचार्य से सुझाव लिए गए। बैठक की अध्यक्षता डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने की।शहर के सिल्वर लीफ होटल में आयोजित शहर के समग्र विकास एवं स्वच्छता व्यवस्था हेतु सहयोग और सहभागिता की बैठक में बोलते हुए डॉ आस्था अग्रवाल ने कहा कि स्कूल प्रबंधन के प्रयासों से स्कूली बच्चों में जागरूकता और उनको स्वच्छता अभियान में सम्मिलित करके शहर को स्वच्छ बनाया जा सकता है। बच्चे जब स्वच्छता अभियान में शामिल होंगे तो घर के बड़े भी इस अभियान में शामिल हो जाएंगे। कहा कि विद्यालय में शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ 11 लोगों का स्वच्छता सारथी क्लब के गठन किया जाना चाहिए। बच्चों को स्वच्छता से संबंधित और शहर के विकास से संबंधित मॉडल बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। नगर पालिका की ओर से प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा और उत्कृष्ट मॉडल बनाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाएगा। विद्यालयों में सुझाव पेटी रखवाएं, जिनमें बच्चे शहर को स्वच्छ बनाने के सुझाव देंगे।

डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने कहा कि हमें इसकी शुरुआत घर से करनी चाहिए। बच्चों की यदि जागरुकता आएगी तो घर के बड़े स्वच्छता की प्रति जागरूक होंगे और शहर को सुंदर बनाया जा सकेगा। बदलाव में समय लगता है, लेकिन बदलाव आता है। डीएम में डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन शत प्रतिशत किया जाएगा। कान्हा गौशाला बन रही है आने वाले समय में शहर में पशु घूमते हुए नहीं दिखाई देंगे। सड़क पर कूड़ा डालने वालों पर जुर्माना भी लगाया जाना चाहिए।सहयोग व सहभागिता बैठक में अधिशासी अधिकारी संजीव कुमार जिला विद्यालय निरीक्षक राजीव कुमार डॉ परविंदर सिंह सैहमी, चारु धवन, वसुंधरा अग्निहोत्री, जीजीआईसी प्रधानाचार्य अनीता रानी, मिथिलेश कश्यप, राधा अग्रवाल, शशि कला जायसवाल, प्रिया बाजपेई, नीना मेहरोत्रा, डॉ आरपी गंगवार, राकेश कुमार, मोहम्मद आजम, सिराज हमीद, पूजा छाबड़ा, डीएस छाबड़ा, सुरेश कौशल, इजहार मियां, डॉ बिलाल, कमालुद्दीन, सौम्या राजपूत, ममता वर्मा आदि विद्यालयों के प्रबंधक और प्रधानाचार्य मौजूद रहे।

सड़क का निरीक्षण करने पहुंची पंचायती राज विभाग की टीम, जल्द निर्माण का मिला भरोसा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

खबर का असर

बल्दीराय/सुल्तानपुर। बल्दीराय तहसील के ग्राम पूरे तुलाराम मजरे रैंचा गांव की मुख्य सड़क की बेहद खराब स्थिति को लेकर समाचार पत्र ने विगत दिनो खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया था खबर को संज्ञान के लेकर पंचायती राज विभाग की टीम ने बृहस्पतिवार को सड़क का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान गांववासियों ने विभागीय अधिकारियों के समक्ष सड़क की स्थिति से उत्पन्न हो रही समस्याओं से अवगत कराया सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे, जलभराव और कीचड़ के कारण ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणो ने बताया कि, ऌहमने कई बार प्रशासन और संबंधित अधिकारियों से शिकायत की लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। विभागीय अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि समस्या को गंभीरता से लिया गया है और जल्द ही मरम्मत/निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा।

अवैध तमंचा और कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

अमेठी । थाना कमरौली पुलिस ने एक अदद तमंचा व दो अदद जिन्दा कारतूस के साथ एक युवक को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक के निर्देश पर थाना कमरौली के थानाध्यक्ष मुकेश कुमार पटेल मय हमराह द्वारा तलाश वांछित देखभाल क्षेत्र व चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान हरिओम मिश्रा पुत्र अशोक मिश्रा निवासी ग्राम मछरिया थाना जगदीशपुर जनपद अमेठी उम्र करीब बाइस वर्ष को एक अदद तमंचा व दो अदद जिन्दा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बंध में थानाध्यक्ष मुकेश कुमार पटेल ने बताया कि पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्जकर जेल भेज दिया है।

बल्दीराय तहसील में भ्रष्टाचार चरम पर

सुलतानपुर। तहसील बल्दीराय के अधिकारी की कार्य शैली किसी न किसी मामले को लेकर हमेशा चर्चा में रहती है कई बार शिकायत होने के बावजूद भी जिम्मेदार अधिकारी निस्तारण करने के प्रति अपना मुख मोड़ लेते है ऐसे में अधिकारियों की कार्य शैली पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। अधिवक्ताओ द्वारा राजस्व परिषद उत्तर प्रदेश से की गई शिकायत में नायब तहसीलदार गुलाब सिंह, आरके सुरेश वर्मा व उनके प्राइवेट दलालों पर रिश्वतखोरी, फाइल दबाने, आदेश में देरी और रिकॉर्ड में हेराफ़ेरी के गंभीर आरोप लगे हैं। अधिवक्ताओं का कहना है कि बिना अवैध धन दिए न तो आदेश होते हैं और न ही खतौनी में अंकन। कई महत्वपूर्ण फाइलें रहस्यमय ढंग से गायब हो जाती है पट्टा आवंटन में हेराफ़ेरी और दलालों की खुली छूट का गंभीर आरोप लगा है अधिवक्ताओं ने राजस्व परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ को शिकायती पत्र भेजकर तहसील बल्दीराय में फैली भ्रष्टाचार की जड़ की तत्काल जांच और विधिक कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

सुरक्षा एवं संरक्षण के संकल्प के साथ मनाएं रक्षाबंधन पर्व

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ज्ञान कुंज विवेकानन्द नगर में रक्षा बन्धन उत्सव कार्यक्रम पारंपरिक ढंग से आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्या भारती काशी प्रान्त के प्रदेश निरीक्षक श्री शेषधर द्विवेदी ने कहा कि रक्षा बन्धन श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।यह सम्पूर्ण श्रावण मास भगवान शिव जी यानि प्रकृति को समर्पित है। सभी बहनें अपने छोटे बड़े भाइयों को रक्षा सूत्र बांधकर उनका आशीर्वाद लेकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ती हैं। इसी के साथ यह पर्व मनाने का दूसरा प्रमुख उद्देश्य प्रकृति की सुरक्षा एवं संरक्षण हैं। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित छात्रों और शिक्षकों से आग्रह किया कि सभी लोग एक एक वृक्ष को रक्षा सूत्र बांधकर उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण का संकल्प लें।

विद्यालय के प्रधानाचार्य राकेश मणि त्रिपाठी जी ने रक्षा बन्धन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सनातन संस्कृति के वैशिष्ट्य से युक्त ये पर्व हमारी धार्मिक धरोहर हैं। जिनके बल पर हमारे नैतिक मूल्य और परंपराएं आज भी जीवित हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनपद के प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ एवं सामाजिक कार्यकर्ता डॉ जे पी सिंह ने की । उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन की प्रशंसा करते हुए सबको आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि जिला प्रचारक श्रीमान्‌ आशीष जी, शिशु मन्दिर के प्रधानाचार्य ब्रह्मनारायण शुक्ल,प्रान्तीय कार्यालय प्रमुख श्रद्धानन्द जी एवं सभी अतिथियों एवं उपस्थित सभी भैयाजी को आचार्या दीदियों, एवं बहनों ने रक्षासूत्र बांधकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। विद्यालय की सभी बहनों ने राखी निर्माण प्रतियोगिता में भाग लिया।बहनों के द्वारा निर्मित रंग बिरंगी अनोखी राखियों की प्रदर्शनी की अतिथियों द्वारा भूरि भूरि प्रशंसा की गई। जूनियर वर्ग की बहनों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। उक्त कार्यक्रम का संयोजन आचार्या साक्षी सिंह एवं कंचन चतुर्वेदी द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम मेंअनिल पाण्डेय ,रंजना पाण्डेय, सरिता त्रिपाठी, प्रांजलि पाण्डेय, ज्योति मिश्रा, शशी द्विवेदी, पूजा शुक्ल,श्वेता पाण्डेय, यशी अग्रहरि, ज्योति उपाध्याय,उर्वशी मिश्रा , श्रद्धा शुक्ला, रागिनी मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

नवनिर्मित फीडर को दे प्रस्तावित नाम, नहीं तो कांग्रेस करेगी जन आंदोलन : अभिषेक सिंह राणा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। बल्दीराय विद्युत उपकेंद्र से जुड़े नवनिर्मित फीडर के नामकरण और तहसील क्षेत्र की अन्य जनसमस्याओं को लेकर गुरुवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के बाद कांग्रेस नेताओं ने उप जिलाधिकारी बल्दीराय को ज्ञापन सौंपकर मांगों से अवगत कराया।

प्रदर्शन का नेतृत्व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष इमरान मोनू ने किया, जबकि इस दौरान जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा व शहर अध्यक्ष शकील अंसारी भी मौजूद रहे। तहसील मुख्यालय पर हुए प्रदर्शन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए जनहित के मुद्दों को तत्काल हल किए जाने की मांग की।ज्ञापन में प्रमुख रूप से मांग की गई कि बल्दीराय विद्युत उपकेंद्र से जुड़े नवनिर्मित फीडर को शासन द्वारा प्रस्तावित नाम दिया जाए। साथ ही बल्दीराय नहर पुल से इसौली तक की सड़कें गड्ढों में तब्दील हो चुकी हैं, जिससे राहगीरों को भारी परेशानी हो रही है। इन सड़कों की मरम्मत कर उन्हें गड्ढामुक्त किया जाए।इसके अलावा पारा मंगल बाजार की सड़क वर्षों से जलभराव की समस्या से जूझ रही है। कांग्रेस नेताओं ने सड़क निर्माण कर दोनों ओर पक्की नाली निर्माण कराने की भी मांग की।कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने कहा कि कांग्रेस हमेशा जनहित के मुद्दों को लेकर सड़क पर संघर्ष करती रही है। यदि शासन-प्रशासन ने इन मांगों को नजरअंदाज किया तो कांग्रेस बड़ा जन आंदोलन छेड़ेगी। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी कि नवनिर्मित फीडर का नामकरण यदि शीघ्र नहीं किया गया तो कांग्रेस सड़क पर उतरकर आंदोलन करेगी।इस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता और स्थानीय नेता शामिल रहे। प्रमुख रूप से जिला पंचायत सदस्य निकलेश सरोज, शीला यादव, आवेश अहमद, मनोज कुमार तिवारी, इमरान खान, अंकित पाठक, हर्ष नारायण शुक्ला, देवेंद्र तिवारी, हाजी मो. इरफान, सोनू, समीम बीडीसी, हसीन खान, मो. दिलशाद, इबरार हुसैन, मो. शोएब, मेराज अहमद, बाबू, राजा, विजय, सरफराज, रोमान, सोवि सिद्दीकी, छोटू, ओसामा, अरशद पवार, हाशिम, मसरूफ, बब्बल, मोनू, अकिब, सैफी और अतिउल्ला अंसारी आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बीईओ को अमान्य स्कूलों के निरीक्षण में लटकता मिला ताला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अमेठी । जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के निर्देश पर खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा अमान्य विद्यालयों को बंद कराये जाने के लिये सघन निरीक्षण अभियान चलाया गया जिसमें कई अमान्य विद्यालयों में ताला लटकता पाया गया और अन्य मान्यता प्राप्त विद्यालयों को शासन द्वारा निर्धारित दिशा निर्देश के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया।सिंहपुर के खण्ड शिक्षा अधिकारी हरिओम तिवारी ने बताया कि ग्राम पंचायत जुगराजपुर के गांव पूरे कादिल में एस के अकादमी विद्यालय का आकस्मिक निरीक्षण किया गया जो कि निरीक्षण के समय बंद पाया गया और विद्यालय के प्रबंधक सुरजीत कुमार पुत्र रामसुख निवासी ग्राम पूरे कादिल मजरे जुगराजपुर द्वारा इकतीस जुलाई को विद्यालय बंद किये जाने का शपथ पत्र अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में प्राप्त कराया गया।खण्ड शिक्षा अधिकारी हरिओम तिवारी द्वारा सत्यता प्रमाणित करने हेतु पांच अगस्त को उक्त विद्यालय का निरीक्षण किया गया जिसमे विद्यालय बंद पाया गया। खण्ड शिक्षा अधिकारी हरिओम तिवारी ने बताया कि इसके अलावा क्षेत्र के अन्य कई स्कूलों का निरीक्षण किया गया जिसमें बच्चों के आवागमन हेतु वाहनों को चुस्त दुरुस्त रखने का निर्देश दिया गया और वाहन पर क्षमतानुसार ही बच्चों को बैठाने के लिये प्रेरित किया गया।

कुदरत का कोहराम

मानसून की दस्तक के साथ ही हिमाचल व उत्तराखंड में दरकते पहाड़ व रौद्र रूप दिखाती नदियां चिंता बढ़ाने वाली हैं। कुदरत के कहर के सामने इंसान बौना ही नजर आता है। तमाम मुख्य नदियां उफान पर हैं। जगह-जगह भूस्खलन से सड़कें ठप पड़ी हैं। हिमाचल में मूसलाधार बारिश के बीच मलबा व पत्थर गिरने से सैकड़ों सड़कें बंद हो गई हैं। सामान्य जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। पहले हम गर्मी से त्रस्त होकर बारिश की आस लगाए होते हैं, लेकिन जब बारिश आती है तो स्थितियां डराने वाली हो जाती हैं। निस्संदेह ग्लोबल वार्मिंग संकट के चलते बारिश के पैटर्न में बड़ा बदलाव आया है। बारिश कम समय में ज्यादा मात्रा में बरसती है। जिससे न केवल पहाड़ों में कटाव बढ़ जाता है बल्कि पानी के साथ भारी मात्रा में मलबा गिरकर रास्तों व पानी के प्राकृतिक मार्गों को अवरुद्ध कर देता है। यह संकट इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हमने पहाड़ों को विलसिता का केंद्र बना दिया है। तीर्थाटन अब पर्यटन जैसा हो गया है। पर्यटकों के वाहनों से छोटी सड़कें और पुल दबाव में हैं। नीति-नियंताओं ने पहाड़ों में सड़कों को फोर लेन-सिक्स लेन बनाने का जो उपक्रम किया है, उससे पहाड़ों का नैसर्गिक वातावरण खतरे में है। पहाड़ों के किनारे काटने से भूस्खलन की गति तेज हुई है। गाहे-बगाहे पहाड़ों का मलबा सड़कों पर गिरकर यातायात को अवरुद्ध कर देता है। यात्रियों के जीवन पर हर समय संकट बना रहता है। हिमाचल की ही तरह से कुदरत के कोहराम से उत्तराखंड भी बुरी तरह त्रस्त है। भागीरथी, अलकनंदा, मंदाकिनी व पिंडर आदि नदियां खतरे के निशान के ऊपर बह रही हैं। चारधाम यात्रा मार्ग पर मलबा गिरने की घटनाएं बढ़ने से यात्रा कुछ समय के लिये स्थगित की गई है। बार-बार भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया जा रहा है। जगह-जगह सड़कों के कटने से सैकड़ों यात्री फंसे हुए हैं। कई गांवों को जोड़ने वाली सड़कें बह गई हैं। बादल फटने की आशंका भी लगातार बनी रहती है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री जाने वाले मार्ग जगह-जगह बाधित हैं। भारी बारिश की आशंका को देखते हुए स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्रों में छुट्टियां घोषित की गई हैं। सामान्य जन-जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। कई मोटरमार्ग पूरी तरह अवरुद्ध हुए हैं। कई छोटे पुल बह गए हैं। कई निचले स्थानों से लोगों को हटाया गया है। कुल मिलाकर लाखों लोगों को अतिवृष्टि ने बंधक बना दिया है। निश्चित रूप से तेज बारिश और उसके प्रभाव इंसानी नियंत्रण से बाहर होते हैं। लेकिन इसके बावजूद पहाड़ी इलाकों में विकास के मॉडल पर नये सिरे से विचार करने की जरूरत है। पहाड़ अध्यात्म के केंद्र भी रहे हैं, उन्हें पर्यटकों की विलसिता का केंद्र नहीं बनाया जाना चाहिए। हमें अपेक्षाकृत नये हिमालयी पहाड़ों और उसके परिस्थितिकीय तंत्र के प्रति संवेदनशील व्यवहार करना चाहिए। ज्यादा मानवीय हस्तक्षेप से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और नदियों का बढ़ा जल संकट का कारण भी बन रहा है।

हिमाचल में मूसलाधार बारिश के बीच मलबा व पत्थर गिरने से सैकड़ों सड़कें बंद हो गई हैं। सामान्य जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। पहले हम गर्मी से त्रस्त होकर बारिश की आस लगाए होते हैं, लेकिन जब बारिश आती है तो स्थितियां डराने वाली हो जाती हैं। निस्संदेह ग्लोबल वार्मिंग संकट के चलते बारिश के पैटर्न में बड़ा बदलाव आया है।

संसद संवाद की बजाय संघर्ष का अखाड़ा कब तक?

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन पर संसद में गतिरोध जारी है, जिससे कामकाज बाधित हो रहा है। आज संसद का दृश्य सार्थक संवाद की बजाय किसी अखाड़े से कम नहीं लगता। बहस के स्थान पर बैनर, तख्तियां और नारों की गूंज सुनाई देती है। संसद जहां नीति निर्माण होना चाहिए, वहां प्रतिदिन कार्यवाही स्थगित हो रही है। यह विडंबना है कि जनप्रतिनिधि जिन मुद्दों को लेकर चुने जाते हैं, उन्हीं मुद्दों पर चर्चा की बजाय वे मेजें थपथपाने, वेल में उतरने और माइक बंद कराने में लगे हैं। संसद का हंगामा केवल दृश्य नहीं, एक राजनीतिक पतन की ओर संकेत करता है। जब एक ओर सरकार संवाद से बच रही है और दूसरी ओर विपक्ष केवल दिखावटी विरोध में लिप्त हंगामें बरपा रहा है, इन त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियों में देश की जनता के मुद्दे पीछे छूट रहे हैं। विपक्ष और सत्ता के बीच जारी इस टकराव में बहस के बजाय बहिष्कार और गतिरोध हावी हो चुका है। मानसून सत्र की शुरुआत उम्मीदों से भरी थी, नए विधेयकों, जनहित की बहसों और लोकतांत्रिक विमर्शों की। लेकिन यह सत्र भी पुराने ढर्रे पर चल पड़ा, विरोध, स्थगन, नारेबाजी और हंगामे की भेंट चढ़ता लोकतंत्र। विपक्ष बिहार में चल रहे वोटर लिस्ट रिवीजन पर चर्चा चाहता है। इसमें ईवीएम की पारदर्शिता, मतदाता सूची में गड़बड़ी और चुनाव आयोग की निष्पक्षता जैसे गंभीर मुद्दे शामिल हैं। इसके साथ ही मणिपुर की स्थिति, बेरोजगारी, महंगाई, पेगासस जासूसी, किसानों की समस्याएं और हाल ही में आई बाढ़ एवं आपदा राहत जैसे मुद्दे भी विपक्ष के एजेंडे में हैं। लेकिन विपक्ष इन और ऐसे जरूरी मुद्दों पर चर्चा का माहौल बनाने की बजाय सरकार को घेरने की मानसिकता से ग्रस्त है। संसद की प्रासंगिकता तभी है जब उसमें देश की सच्चाइयों की प्रतिध्वनि हो और विपक्ष इसमें सकारात्मक भूमिका निभाये। गतिरोध के कारण दर्जनों विधेयक लंबित हैं, डेटा प्रोटेक्शन बिल, महिला आरक्षण बिल, वन नेशन वन इलेक्शन पर चर्चा, कृषि कानूनों में संशोधन, आदि। ये सब विधेयक केवल कानून नहीं हैं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के जीवन से जुड़े ज्वलंत प्रश्न हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, विपक्ष सार्थक बहस से भाग रहा है या बहस में अड़ंगा डाल रहा है। सत्ता पक्ष भी कोई बीच का रास्ता निकालता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। दोनों की यह रस्साकशी देश के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य को कमजोर कर रही है। कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नहीं दिख रहा। लेकिन, इसका असर संसद के कामकाज पर पड़ रहा है। दोनों सदनों का कीमती वक्त हंगामे में जाया हो रहा है और यह कोई पहली बार नहीं हो रहा है। पिछले वर्षों में इस तरह की गतिविधियां आम हो गई हैं। विपक्ष चाहता है कि सरकार एसआईआर पर चर्चा कराए। लेकिन, सरकार नियमों का हवाला देकर कह रही है कि चुनाव आयोग स्वायत्त संस्था है और मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, इसलिए चर्चा नहीं हो सकती। जवाब में, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने भी 2023 की एक रूलिंग निकाल कर उपसभापति को पत्र लिख दिया है। दोनों पक्ष नियमों के सवाल पर अड़े हैं, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि ये नियम सदन की कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाए गए हैं, न कि कामकाज ठप्प कराने के लिए। मानसून सत्र शुरू होने के पहले ही अंदाजा था कि एसआईआर पर हंगामा होगा। इसके पीछे विपक्ष की अपनी आशंकाएं हैं। शुरुआत से ही यह प्रक्रिया विवादों में रही है। आधार और वोटर कार्ड को मान्य डॉक्युमेंट्स में शामिल न करने से लेकर बड़ी संख्या में लोगों को वोटर लिस्ट से बाहर निकालने तक, इसमें कई पेच फंसे हैं। चुनाव आयोग ने संशोधित वोटर लिस्ट का ड्राफ्ट जारी कर दिया है और इसमें 65 लाख नाम हटाए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन लोगों की पूरी जानकारी मांगी है। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पिछले दिनों कहा था कि अगर विपक्षी दलों का हंगामा जारी रहता है, तो देशहित में सरकार के सामने विधेयक पारित कराने की मजबूरी होगी। लेकिन, लोकतंत्र के लिए यही बेहतर होगा कि दोनों पक्ष सदन का इस्तेमाल रचनात्मक बहस के लिए करें। आम नागरिक संसद से समाधान की उम्मीद करता है, न कि शोरशराबा। जब लाखों युवा रोजगार की बाट जोह रहे हैं, किसान कर्ज में डूब रहे हैं, और आमजन महंगाई से त्रस्त है, तब संसद में ठहाके नहीं, तकलीफों की चर्चा जरूरी है। यह सवाल अब बार-बार उठ रहा है कि क्या संसद केवल दिखावटी बन गई है? अगर सरकार विपक्ष को केवल बाधा मानकर चलती है और विपक्ष केवल विरोध के लिए विरोध करता है, तो लोकतंत्र की आत्मा मरती है। जैसाकि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, ञ्संसद को ठप्प करना आसान है, लेकिन संसद को चलाकर देश की उम्मीदों को साधना ही असली लोकतंत्र है।ञ्चुनाव आयोग एसआईआर की जरूरत को बता चुका है और शीर्ष अदालत ने भी उसे माना है। यह जरूरी भी है, क्योंकि भ्रष्ट वोटरों से चुनी जाने वाली सरकारें भी भ्रष्ट ही होती है। इसलिये चुनाव की इस विसंगति की सफाई होना जरूरी है, इस पर चर्चा की मांग को लेकर सत्ता पक्ष-विपक्ष के बीच गतिरोध बना हुआ है तो बातचीत से इसका हल निकालना होगा ताकि संसद का कामकाज सुचारुरूप से चल सके। लोकतंत्र में सदन चलाने की जिम्मेदारी सरकार की होती है। लेकिन इसमें विपक्ष का सहयोग भी अपेक्षित होता है, दोनों को अपना यह दायित्व समझना चाहिए। संसद का हर सत्र, हर मिनट करदाताओं की गाढ़ी कमाई से चलता है। हर व्यवधान लाखों रुपये की बर्बादी है। यह नैतिक रूप से भी चिंताजनक है कि जनप्रतिनिधि बहस से अधिक हंगामे में समय गंवा रहे हैं। समाधान यही है कि सत्ता पक्ष विपक्ष की बात सुने, संवाद को प्राथमिकता दे। विपक्ष भी रचनात्मक विरोध करे, अनावश्यक बहिष्कार से बचे। लोकतंत्र बहस से ही मजबूत होता है, बहिष्कार से नहीं। वोटर लिस्ट रिवीजन पर चर्चा होनी चाहिए। जरूरी विधेयकों पर बहस होनी चाहिए। संसद को संकल्प का मंच बनना चाहिए, संग्राम का नहीं। जब तक संसद जनहित के सवालों पर गूंजेगी नहीं, तब तक लोकतंत्र अपंग ही रहेगा। जैसा कि डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था-संसद केवल कानून बनाने का स्थान नहीं, यह राष्ट्र के विवेक की आवाज है।' लेकिन जब यह विवेक ही हंगामे में दब जाए, तो संविधान की आत्मा कराह उठती है। आज जरूरत है कि संसद को नई दिशा, नया दृष्टिकोण और नई मर्यादा मिले। संसद की गरिमा केवल आसनों से नहीं, आचरण से बनती है। संसद में वही नेता दिशा दे सकते हैं, जो अपने निजी या दलगत हित से ऊपर उठकर राष्ट्रहित की सोच रखते हैं। जब तक संसद के सदस्य यह नहीं समझेंगे कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं, न कि अपने दल के प्रचारक, तब तक दिशा भटकती रहेगी। विपक्ष लोकतंत्र की आंख है। लेकिन जब यह आंख केवल अंधविरोध में अंधी हो जाए, तो लोकतंत्र की दृष्टि धुंधली हो जाती है। विपक्ष को सद्बुद्धि दे सकता है, जनता का दबाव। जब जनता यह स्पष्ट रूप से जताए कि उसे रचनात्मक, नीति आधारित विपक्ष चाहिए न कि नारेबाज नेता, तब विपक्ष को भी सुधरना पड़ेगा। विपक्ष को आत्मचिंतन करना चाहिए कि क्या वह जनता की लड़ाई लड़ रहा है या केवल सत्तालोलुप राजनीति कर रहा है? मीडिया को चाहिए कि वह हंगामे को महिमामंडित करने के बजाय, नीति और तर्क आधारित बहस को आगे बढ़ाए। संसद में विवाद होना लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन वही विवाद अगर दिशा विहीन हो जाए, तो वह कमजोरी बन जाता है। आज जरूरत है कि संसद की गरिमा को पुनर्स्थापित किया जाए, विपक्ष अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाए और सरकार भी अहंकार छोड़कर संवाद को अवसर दे।

विपक्ष बिहार में चल रहे वोटर लिस्ट रिवीजन पर चर्चा चाहता है। इसमें ईवीएम की पारदर्शिता, मतदाता सूची में गड़बड़ी और चुनाव आयोग की निष्पक्षता जैसे गंभीर मुद्दे शामिल हैं। इसके साथ ही मणिपुर की स्थिति, बेरोजगारी, महंगाई, पेगासस जासूसी, किसानों की समस्याएं और हाल ही में आई बाढ़ एवं आपदा राहत जैसे मुद्दे भी विपक्ष के एजेंडे में हैं। लेकिन विपक्ष इन और ऐसे जरूरी मुद्दों पर चर्चा का माहौल बनाने की बजाय सरकार को घेरने की मानसिकता से ग्रस्त है। संसद की प्रासंगिकता तभी है जब उसमें देश की सच्चाइयों की प्रतिध्वनि हो और विपक्ष इसमें सकारात्मक भूमिका निभाये। गतिरोध के कारण दर्जनों विधेयक लंबित हैं, डेटा प्रोटेक्शन बिल, महिला आरक्षण बिल, वन नेशन वन इलेक्शन पर चर्चा, कृषि कानूनों में संशोधन, आदि। ये सब विधेयक केवल कानून नहीं हैं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के जीवन से जुड़े ज्वलंत प्रश्न हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, विपक्ष सार्थक बहस से भाग रहा है या बहस में अड़ंगा डाल रहा है। सत्ता पक्ष भी कोई बीच का रास्ता निकालता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। दोनों की यह रस्साकशी देश के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य को कमजोर कर रही है। कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नहीं दिख रहा। लेकिन, इसका असर संसद के कामकाज पर पड़ रहा है। दोनों सदनों का कीमती वक्त हंगामे में जाया हो रहा है और यह कोई पहली बार नहीं हो रहा है। पिछले वर्षों में इस तरह की गतिविधियां आम हो गई हैं। विपक्ष चाहता है कि सरकार एसआईआर पर चर्चा कराए। लेकिन, सरकार नियमों का हवाला देकर कह रही है कि चुनाव आयोग स्वायत्त संस्था है और मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, इसलिए चर्चा नहीं हो सकती। जवाब में, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने भी 2023 की एक रूलिंग निकाल कर उपसभापति को पत्र लिख दिया है।

स्मार्ट मीटर मध्य प्रदेश में बन सकता है सरकार का सिरदर्द

पवन वर्मा

गुलाबगंज में विधवा महिला और पांच बच्चे, एक कमरे का कच्चा कबेलू और पन्नी का घर। सरकार के राशन पर निर्भर परिवार। बिजली बिल पहले सौ-डेढ़ सौ रुपए आता था। स्मार्ट मीटर लगने के बाद सात हजार तीन सौ का बिल आया। सरकार विद्युत मंडल में सुधार करो...। यह लिखा है विदिशा भाजपा के वरिष्ठ नेता मनोज कटारे ने अपनी फ़ेसबुक वॉल पर। विदिशा कांग्रेस के प्रवक्ता अरुण अवस्थी राजू कहते हैं कि यह सरकार की खुली लूट है। स्मार्ट मीटर ने लोगों की आर्थिक स्थिति पर बड़ा प्रहार किया है। लोग बिजली के बड़े हुए बिल भरे या अपने यहां दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करें। बहुत कठिन स्थिति में भाजपा सरकार की स्मार्ट मीटर लगाने की योजना गरीबों को ले आई है, जिनके यहां पर सौ-दो सौ रुपए के बिल आ रहे थे, अब उनके यहां पर पांच-दस हजार रुपए के बिल भेजे जा रहे। शिकायतों पर कोई सुनवाई नहीं हैं। विदिशा वह जिला है, जिसका प्रतिनिधित्व लोकसभा में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान करते हैं। स्मार्ट मीटर लगने के बाद बिजली बिल की यह परेशानी सिर्फ विदिशा अकेले शहर की नहीं है, बल्कि प्रदेश में जहां-जहां बिजली के स्मार्ट मीटर लगे हैं वहां पर यह समस्या है। बिजली के बड़े हुए बिल आ रहे हैं। हर दिन कहीं न कहीं इसके विरोध में धरने-प्रदर्शन किए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में विदिशा अकेला ऐसा शहर नहीं हैं, जहां स्मार्ट मीटर को लेकर विरोध हो रहा है, बल्कि राजधानी भोपाल में भी इसका लगातार विरोध हो रहा है। हालात यह हो गए हैं कि इन मीटरों को अब लोग अपने घर पर लगाने नहीं दे रहे हैं। वहीं सिवनी में स्मार्ट मीटर के विरोध को लेकर बंद हो चुका है। प्रदेश में जहां-जहां स्मार्ट मीटर लगाए गए हैं, वहां विरोध हो रहा है। इसमें इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, सागर, सतना, रीवा जैसे मध्य प्रदेश के बड़े शहर शामिल हैं तो विदिशा, सीहोर, बुरहानपुर जैसे छोटे शहरों में भी इसका विरोध तेजी से हो रहा है। भोपाल में कांग्रेस का दावा है कि 508 उपभोक्ताओं को 1.5 करोड़ रुपए के बिल थमाए जा चुके हैं। इसे लेकर कांग्रेस ने धरना भी दिया था। पहले के मीटर में बिजली की जो खपत आती थी, उसके मुकाबले स्मार्ट मीटर दोगुना और तीन गुना खपत बता रहे हैं। बिजली घर के दफ्तरों में हर जगह इन मीटर को लेकर शिकायतों का अंबार लग गया है, अफसर भी इन शिकायतों पर ज्यादा काम नहीं कर रहे, नतीजे में चाहे ऑन लाइन शिकायतें हों या ऑफ लाइन शिकायत, या टोल फ्री नंबर 1912 किसी का कोई निराकरण ही नहीं किया जा रहा है। यानि मध्य प्रदेश का बिजली विभाग एक तरफा चल रहा है। शिकायतों का निपटारा होने तक उपभोक्ता बिल भरने से गुरेज करते हैं, इसी बीच बिना पूर्व सूचना या चेतावनी के बिजली काट दी जाती है। मजबूरी में शिकायत का निपटारा हो या न हो उपभोक्ता को बिजली का बिल भरना ही पड़ता है। मध्य प्रदेश में गैर राजनीतिक तरीके से विरोध अमूमन नहीं होते हैं, लेकिन बिजली के इन मीटरों के प्रदेश के अधिकांश शहरों में ऐसे विरोध शुरू हो गए हैं, जो बिना किसी राजनीतिक दल के झंड़े के हो रहे हैं। इसके चलते भाजपा और कांग्रेस दोनों के नेता ही उपभोक्ताओं के साथ दिखाई दे रहे हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र में स्मार्ट मीटर को लेकर उज्जैन जिले के कांग्रेस विधायक महेश परमार ने सदन में नियम 142 क के तहत 'किसानों पर विद्युत प्रकरण बनाकर पेनाल्टी लगाने' पर हुई चर्चा में कहा कि जहाँ जहाँ स्मार्ट मीटर लग रहे हैं वहां वहां प्रदर्शन हो रहे है। हेल्पलाइन नम्बर लगता नहीं और सरकार ने ऑनलाइन शिकायत की व्यवस्था की नहीं। कुछ शहरों में कांग्रेस इसके विरोध में उतरी है। फिलहाल सरकार का ध्यान इस ओर नहीं हैं, नतीजे में बिजली विभाग लगातार स्मार्ट मीटर लगाने के काम में जुटा हुआ है। दरअसल देश भर में 25 करोड़ पुराने मीटर बदलकर उनकी जगह स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं, सरकार का दावा है कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने से 2031-32 तक करीब 11 लाख करोड़ रुपए के राजस्व घाटे की बचत होगी। देश में अब तक साढ़े ग्यारह करोड़ स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं। नए मीटरों की कथित तेजी के साथ राज्य की राजनीति गरमाने की संभावना थी, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। मध्य प्रदेश में कांग्रेस इसे राज्य स्तरीय मुद्दा बनाने में अब तक सफल नहीं हो सकी है, उसके बड़े नेता इस मामले में सिर्फ बयान देने तक तक सिमट कर रहे गए हैं। जबकि प्रदेश में जनता जिस तरह से इसका विरोध कर रही है, उसे देखकर यह लगता है कि यह मुद्दा मध्य प्रदेश में कांग्रेस को जनता के बीच मजबूती दे सकता है, लेकिन कांग्रेस के नेता इसे अब तक नहीं समझ सके हैं। कुल मिलाकर जिस तरह से प्रदेश के लगभग हर शहर में जनता का विरोध स्मार्ट मीटर को लेकर हो रहा है,यह भविष्य में सरकार के लिए सिरदर्द साबित हो सकता है।

सेहत मंत्र

बारिश के मौसम में बचें कान के इन्फ़ेक्शन से

बारिश में संक्रमण फैलने की संभावना सबसे ज्यादा होती है। संक्रमण के कारण ही बारिश में कान के रोग भी पनपते हैं, जो फैलने पर आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। आइए जानें विस्तार से... मनुष्य के कान महत्वपूर्ण ज्ञानेंद्रिय हैं, जो मुख्यतः दो कार्य करते हैं : 1. सुनना या शब्द श्रवण 2. शरीर को बैलेंस करना। कान के शरीर रचना की दृष्टि से तीन भाग हैं : (1) बाह्य कर्ण, (2) मध्य कर्ण व (3) अंतःकर्ण। अंतःकर्ण की रचनाओं में विकार आने पर प्रमुखतः चक्कर आना, चलने में परेशानी एवं उल्टी होना या उल्टी होने की इच्छा होना तथा विभिन्न प्रकार की आवाजें कान में आना जैसे लक्षण सामने आते हैं। कान के प्रत्येक अंग की सामूहिक ठीक क्रिया के द्वारा मनुष्य ठीक प्रकार से सुनता है। इन अंगों में से कान के पर्दे से लेकर मध्य कर्ण एवं अंतःकर्ण के अंगों में विकार होने पर विभिन्न प्रकार की श्रवणहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है। सामान्यतः कान से मवाद आने को मरीज गंभीरता से नहीं लेता, इसे अत्यंत गंभीरता से लेकर विशेषज्ञ चिकित्सक से परामर्श एवं चिकित्सा अवश्य लेना चाहिए अन्यथा यह कभी-कभी गंभीर व्याधियों जैसे मेनिनजाइटिस एवं मस्तिष्क के एक विशेष प्रकार के कैंसर को उत्पन्न कर सकता है। कान में मवाद किसी भी उम्र में आ सकता है, किंतु प्रायः यह एक वर्ष से छोटे बच्चों या ऐसे बच्चों में ज्यादा होता है जो मां की गोद में ही रहते हैं। तात्पर्य स्पष्ट है जो बैठ नहीं सकते या करवट नहीं ले सकते। कान से मवाद आने का स्थान मध्य कर्ण का संक्रमण है। मध्य कर्ण में सूजन होकर, पककर पर्दा फटकर मवाद आने लगता है। मध्य कान में संक्रमण पहुंचने के तीन रास्ते हैं, जिसमें 80-90 प्रतिशत कारण गले से कान जोड़ने वाली नली है। इसके द्वारा नाक एवं गले की सामान्य सर्दी-जुकाम, टांसिलाइटिस, खांसी आदि कारणों से मध्य कर्ण में संक्रमण पहुंचता है। बच्चों की गले से कान को जोड़ने वाली नली चूंकि छोटी एवं चौड़ी होती है, अतः दूध पिलाने वाली माताओं को हमेशा बच्चे को गोद में लेकर सिर के नीचे हाथ लगाकर, सिर को थोड़ा ऊपर उठाकर ही बच्चे को दूध पिलाना चाहिए। ऐसी माताएं जो लेटे-लेटे बच्चों को दूध पिलाती हैं उन बच्चों में भी कान बहने की समस्या उत्पन्न होने की ज्यादा आशंका रहती है।

धर्म मंत्र

एक मंत्र बोलकर शिवलिंग पर चढ़ा दें शमी की पत्तियां

ज्योतिष में कुल नौ ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और राहु-केतु बताए गए हैं। इन नौ ग्रहों में शनि, राहु-केतु को क्रूर ग्रह माना गया है। इनकी वजह से कुंडली के सभी शुभ योगों का असर खत्म हो सकता है। इन ग्रहों के दोष दूर करने के लिए शिवजी की पूजा सबसे सरल और कारगर उपाय है। शिवपुराण के अनुसार शिव पूजा में फूल-पत्तियां चढ़ाने का विशेष महत्व है। शिवलिंग पर बिल्व पत्र तो सभी चढ़ाते हैं, लेकिन इसके साथ ही शमी के पत्ते भी शिवलिंग पर अर्पित करना चाहिए। उज्जैन के इंद्रेश्वर महादेव मंदिर के पुजारी पं. सुनील नागर के अनुसार शमी पत्तों का काफी अधिक महत्व है। ये पेड़ पूजनीय और पवित्र है। घर में शमी का वृक्ष लगाने से शनि के सभी दोषों से मुक्ति मिल सकती है। साथ ही, शमी के पत्ते शिवलिंग पर चढ़ाने से धन और सौभाग्य की इच्छा पूरी होती है। ऐसे चढ़ाएं शमी के पत्तेः ▶▶रोज सुबह शिव मंदिर जाएं और तांबे के लोटे में गंगाजल या साफ जल में थोड़ा सा गंगाजल मिला लें। ▶▶इसके बाद चावल, सफ़ेद चंदन भी पानी में मिला लें। ऊँ नमः शिवाय मंत्र बोलते हुए ये जल शिवलिंग पर अर्पित करें। ▶▶तांबे के लोटे से जल चढ़ाने के बाद शिवलिंग पर चावल, बिल्वपत्र, सफ़ेद वस्त्र, जनेऊ, मिठाई भी चढ़ाएं। ▶▶इसके बाद शमी के पत्ते भी चढ़ाएं। शमी पत्ते चढ़ाते समय ये मंत्र बोलें- अमंगलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्रनाशिनीं धन्यां प्रपद्येहं शमीं शुभाम्।। ▶▶शमी पत्र चढ़ाने के बाद शिवजी की धूप, दीप और कर्पूर से आरती कर प्रसाद ग्रहण करें।

पर्यटन

राजसी ठाट-बाट का आनंद लेने के लिए 'उम्मेद भवन' की करें यात्रा

जब आप किसी राजसी किले की ऊंची दीवारों, बुर्ज और उसकी जटिल बनावट से रूबरू होते हैं, उसके झरोखों से बाहर दूर तक झांकते हैं और यह सुनते हैं कि राज्य की आन-बान-शान के लिए यहां के सैनिक दुश्मन सैनिकों से लड़ते हुए अपनी जान की कुर्बानी देने में जरा भी नहीं हिचके, तो आप निश्चित रूप से अपनी उस विरासत से मुलाकात करते हैं जो इतिहास के पन्नों में आज भी गर्व से जीवित है। इसके अलावा, जब आपको राजा-महाराजाओं के महल में उनके समय के जैसे ठाठ-बाट के साथ लगभग उसी माहौल में रहने का अवसर मिलता है, तो एकबारगी आपको ऐसा लग सकता है जैसे आप खुद वहां के महाराजा या फिर राजपरिवार के सदस्य हों। यह एहसास आपके लिए ताउम्र न भूलने वाला हो सकता है। और अगर मन में कहीं उनकी शानो-शौकत को महसूस करने की इच्छा है, तो महलों में रात गुजारिए। भले ही अब राजा-महाराजा और उनकी शानो-शौकत बरकरार न हो, लेकिन उनके रुतबे और शाही ठाट-बाट का अनुभव आज के समय में आप भी किलों और महलों में जाकर काफी हद तक हासिल कर सकते हैं।दरअसल, राजसी गौरव के प्रतीक कई किले और महल आज लक्जरी होटलों में तब्दील हो चुके हैं, जहां आधुनिक युग की तमाम सुख-सुविधाओं के साथ हेरिटेज फील को भी काफी हद तक संजोया गया है। पर्यटन के लिहाज से इन किलों और महलों की सैर काफी रोमांचकारी साबित हो सकती है। यहां पर रुकना एक राजसी एहसास और इतिहास के उन पलों में लौटने जैसा है। वैभव का गवाह उम्मेद भवनः शाही समृद्ध विरासत और संस्कृति के धनी राजस्थान में राजसी महलों की शान अद्भुत है। जोधपुर का शाही महल उम्मेद भवन पैलेस हर राजसी परंपरा से आपका परिचय कराता है। इसके मालिक हैं महाराजा गज सिंह। उनके पिता महाराजा उम्मेद सिंह ने इसे बनवाया था। इसके संग्रहालय में राजसी हवाई जहाज के मॉडलों, हथियारों, प्राचीन वस्तुओं, घड़ियों, बॉब घड़ियों, बर्तनों, कटलरी, तस्वीरों और शिकार की ट्रॉफियां तक संजोयी गई हैं। आज यह महल बड़े बिजनेस घरानों की शाही शादियों और बॉलीवुड फिल्मों के लिए रॉयल डेस्टिनेशन है।

समयावधि में लक्ष्य के सापेक्षा राजस्व वसूली पूर्ण हो : डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

राजस्व व प्रवर्तन कार्यों की समीक्षा बैठक संपन्न, रक्षाबंधन पर महिलाओं की निःशुल्क यात्रा के निर्देश

बाराबंकी । जिलाधिकारी श्री शशांक त्रिपाठी की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट स्थित लोक सभागार में कर-करेत्तर एवं प्रवर्तन कार्यों से संबंधित विभागों की एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक का उद्देश्य राजस्व वसूली की प्रगति, प्रवर्तन गतिविधियों की स्थिति तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की समीक्षा करना था। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों से विभागवार राजस्व वसूली की अद्यतन स्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि कर वसूली एवं प्रवर्तन से जुड़े समस्त कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किया जाए, जिससे लक्ष्यों की पूर्ति शत-प्रतिशत सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है, अतः इसमें किसी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने आगामी रक्षाबंधन पर्व को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक (ए.आर.एम.) रोडवेज को निर्देशित किया कि मा. मुख्यमंत्री जी की घोषणा के अनुरूप 08 अगस्त से 10 अगस्त 2025 तक महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए रोडवेज बसों में निःशुल्क यात्रा की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था के सफल क्रियान्वयन हेतु समस्त आवश्यक तैयारियां पूर्व से सुनिश्चित कर ली जाएं, ताकि महिलाओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही, डग्गामार वाहनों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही के निर्देश देते हुए जिलाधिकारी ने ए.आर.एम. को परिवहन विभाग के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सघन प्रवर्तन अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अवैध वाहनों पर नियंत्रण एवं सुरक्षित यात्रा व्यवस्था सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है। समीक्षा बैठक में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) श्री अरुण कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) श्री इंद्रसेन, अपर पुलिस अधीक्षक श्री विकास चंद्र त्रिपाठी सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों को अपने-अपने विभागीय दायित्वों का गंभीरतापूर्वक निर्वहन करते हुए शासन की प्राथमिकताओं के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए गए।यह बैठक प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिसमें जिले के विकास एवं जनकल्याण से जुड़े कई अहम विषयों पर चर्चा एवं दिशा-निर्देश जारी किए गए।

नोटिसों की बौछार में भीगे विभिन्न विभाग, ईओ बंकी की सैलरी भी गई बह

विकास तिवारी

बाराबंकी । सोमवारः जिले में कल आयोजित 'विशेष समीक्षा बैठक' ने धीरे-धीरे रूप ले लिया 'नोटिस वितरण महाकुंभ' का । जिन अफसरों ने अब तक किसी भी महोत्सव में हिस्सा नहीं लिया था, उन्हें भी आज मंच मिला और मंच पर मिला कारण बताओ नोटिस का सम्मान पत्र। जनता ने इसे ल्लकाम नहीं, तो दाम नहींङ्क अभियान की औपचारिक शुरुआत माना है। बैठक की शुरुआत श्रम विभाग से हुई, जहाँ सहायक श्रम आयुक्त महोदय की निष्क्रियता ने सबका ध्यान खींचा। उनकी ओर से प्रवर्तन और अन्य कार्यों में जिस प्रकार की ल्लगहरी तंद्राङ्क दिखाई गई, उससे जिलाधिकारी महोदय इतने प्रभावित हुए कि तत्काल उन्हें ल्लकारण बताओ नोटिसङ्क के योग्य पाया । सूत्रों के अनुसार, यह नोटिस इस बात का प्रमाण है कि कुछ ना करने पर भी कुछ मिल सकता है , कम से कम नोटिस तो पक्का है ! इसी क्रम में कृषि रक्षा विभाग ने भी पीछे रहने से इनकार किया। जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने न्यायालय में लंबित मामलों को इतने प्रेम से लिपटा कर रखा कि वे सालों से जस के तस पड़े हैं। इस सच्ची लगन और 'कुछ न करने' की परंपरा को आगे बढ़ाने पर उन्हें भी प्रेरणा स्वरूप नोटिस सौंपा गया। फिर आया विनियमित क्षेत्र का नंबर, जहाँ अवर अभियंता महोदय की प्रवर्तन कार्यवाही की समीक्षा की गई और पाई गई ल्लकल्पनातीतङ्क! जिलाधिकारी ने उनके कार्यों को अदृश्य मानते हुए उन्हें भी नोटिस सम्मान देने का निर्णय सुनाया। लेकिन सबसे अधिक तालियाँ बटोरीं बंकी नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी ईओ ने। पिछले महीने सिंगल यूज़ प्लास्टिक के खिलाफ उन्होंने ऐसा मौन व्रत धारण किया कि पूरा नगर प्लास्टिक में लिपट गया और ईओ साहब ध्यान मुद्रा में रहे। जिलाधिकारी ने इस ल्लशांत तपस्याङ्क को साधारण न मानते हुए ईओ साहब का वेतन ही रोक दिया। साथ ही एक विशेष श्रेणी का कारण बताओ नोटिस उनके नाम भेजा गया, जिसे कुछ लोग ल्लसैलरी-स्टॉप समनङ्क कहकर प्रचारित कर रहे हैं। जिलाधिकारी ने कहा ''कार्रवाई न करना भी एक कला है, लेकिन अब हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। हर अधिकारी अपने क्षेत्र में सिंगल यूज़ प्लास्टिक के लिए ऐसा अभियान चलाए, जो ज़मीन पर दिखे और फाइलों में न सिले।'' प्रशासनिक गलियारों में चर्चा है कि अगली समीक्षा बैठक में ल्लनोटिस के डिज़ाइनङ्क पर विशेष सत्र रखा जाएगा ताकि हर विभाग को उसकी गतिविधियों के अनुसार कस्टमाइज्ड नोटिस दिया जा सके। उधर अफसरों में हलचल है कुछ ने तो प्रिंटर बदलने की योजना बना ली है ।

पैंतालिस कृषकों को ई लाटरी के माध्यम से कृषि यंत्रों हेतु किया गया चयनित

अमेठी । जनपद में किसानों को कृषि यंत्रीकरण की दिशा में बढ़ावा देने हेतु सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन तथा सीआरएम (काप रेज्ड्यू मैनेजमेंट) योजनान्तर्गत कृषि यंत्रों का चयन ई-लॉटरी के माध्यम से किया गया। यह प्रक्रिया आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी द्वारा गठित कार्यकारी समिति की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। ई लाटरी प्रक्रिया के अंतर्गत कम्बाइन हार्वेस्टर विद सुपर स्ट्रा मैनेजमेंट, कल्टीवेटर, हैरो, लेजर लैण्ड लेवलर, मिनी राइस मिल, मल्टीकॉप थ्रेशर, आयल मिल विद फिल्टर प्रेस, रोटावेटर, स्ट्रारीपर, बेलिंग मशीन, काप रीपर ट्रैक्टर माउंटेड, स्ट्रा रैक, सुपर सीडर एवं स्मॉल गोदाम जैसे आधुनिक कृषि उपकरणों हेतु किसानों का चयन किया गया। प्रक्रिया के दौरान पैंतालिस कृषकों का चयन किया गया, जिनमें विकासखंड गौरीगंज के भानुप्रताप सिंह को ऑयल मिल विद फिल्टर प्रेस, नंद किशोर पाण्डेय को स्ट्रारीपर, तथा विकासखंड सिंहपुर के हंसराज को लेजर लैण्ड लेवलर हेतु चयनित किया गया।

भव्य समारोह,न्यायालय कर्मचारी संघ का शपथ ग्रहण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी।दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ की नव-निर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आज न्यायालय परिसर स्थित अभिलेखागार भवन में अत्यंत गरिमापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह में बताओ और मुख्य अतिथि जनपद न्यायाधीश श्रीमती प्रतिमा श्रीवास्तव व विशिष्ट अतिथियों में प्रधान न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय सत्य देव गुप्ता, मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण की पीठासीन अधिकारी श्रीमती अल्पना सक्सेना प्रान्तीय महासचिव नरेंद्र विक्रम सिंह व भागवत शुक्ला उपस्थित रहे। प्रमुख पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ प्रान्तीय महासचिव श्री नरेन्द्र विक्रम सिंह एवं श्री भागवत शुक्ला की गरिमामयी उपस्थिति में दिलाई गई। शपथ लेने वालों में अध्यक्ष श्री कर्मेन्द्र विक्रम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अरुण कुमार वर्मा, उपाध्यक्ष श्री रजनीश सोनी, सचिव श्री राहुल वर्मा, संयुक्त सचिवगण श्री नावेंद्र सिंह एवं श्री आलोक वर्मा, संगठन सचिव श्री हैसियत सिंह वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रभात सिंह तथा सांस्कृतिक सचिव श्रीमती शिखा पाण्डेय सम्मिलित रहे। इस अवसर पर न्यायिक अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं संघ के समस्त सदस्यों की उपस्थिति ने समारोह को अत्यंत प्रेरणादायी एवं सौहार्दपूर्ण बना दिया। सभी उपस्थितजनों ने नवगठित कार्यकारिणी को अपनी शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया। नव-निर्वाचित अध्यक्ष कमेन्द्र विक्रम ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए संगठन की गरिमा एवं कर्मचारियों के हित में निष्पक्ष, पारदर्शी व सक्रिय कार्य करने का संकल्प दोहराया।

यह समारोह न केवल संगठनात्मक प्रतिबद्धता का प्रतीक रहा, बल्कि न्यायिक प्रशासन में कर्मचारियों की सहभागिता और समर्पण को भी पुष्ट करता है।

नवीन सभागार का पुलिस अधीक्षक ने किया भव्य उद्घाटन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

जैदपुर बाराबंकी थाना जैदपुर परिसर में आज एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जहां नवनिर्मित मीटिंग हॉल (सभागार) का उद्घाटन पुलिस अधीक्षक बाराबंकी श्री अर्पित विजयवर्गीय ने विधिवत रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना कर उद्घाटन संपन्न हुआ।पुलिस अधीक्षक ने उद्घाटन के पश्चात मीटिंग हॉल का अवलोकन किया और इसके निर्माण कार्य की सराहना की। उन्होंने इसे पुलिस बल के प्रशिक्षण, बैठकों और प्रशासनिक योजनाओं के संचालन के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।इस शुभ अवसर पर पुलिस अधीक्षक द्वारा ग्राम प्रहरियों (चौकीदारों) को सम्मानित करते हुए उन्हें अंग वस्त्र (गमछा/शॉल) तथा वर्षा ऋतु को ध्यान में रखते हुए छाता प्रदान किए गए। यह द्द्रपफ्न्द्ग ग्रामीण सुरक्षा व्यवस्था में लगे चौकीदारों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान का प्रतीक रहा।कार्यक्रम के दौरान कोतवाली प्रभारी निरीक्षक श्री संतोष कुमार सिंह द्वारा पुलिस अधीक्षक श्री अर्पित विजयवर्गीय, अपर पुलिस अधीक्षक श्री रितेश मिश्रा, तथा क्षेत्राधिकारी महोदय को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर थाने के समस्त अधिकारी, कर्मचारीगण, ग्राम प्रहरीगण तथा स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभागार का निर्माण पुलिस विभाग की कार्यक्षमता में वृद्धि और आंतरिक संवाद को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

सरस्वती शिशु मंदिर की नई इमारत के भूमि पूजन कार्यक्रम का भव्य आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

शिक्षा में संस्कृति के समावेश पर दिया गया ज़ोर

हैदरगढ़, बाराबंकी। हैदरगढ़ कस्बे के सब्जी मंडी वार्ड में सरस्वती शिशु मंदिर की नवीन भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और भी बढ़ा दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रांत प्रचारक कौशल जी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में भारतीय शिक्षा पद्धति की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ल्लसरस्वती शिशु मंदिर केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि एक ऐसा संस्कार केंद्र है, जहां बालकों के भीतर राष्ट्रीयता, अनुशासन और संस्कारों का सिंचन किया जाता है।ङ्क विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री श्री सतीश चंद्र शर्मा मौजूद रहे। उन्होंने विद्यालय की भावी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में इस प्रकार के शैक्षणिक संस्थान का निर्माण एक महत्वपूर्ण पहल है, जिससे आने वाली पीढ़ियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा भी प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में विधान परिषद सदस्य श्री अंगद सिंह, एससी/एसटी आयोग के चेयरमैन श्री बैजनाथ रावत, स्थानीय विधायक श्री दिनेश रावत तथा नगर पंचायत अध्यक्ष श्री आलोक तिवारी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि – ल्लआज के समय में शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित रखना उचित नहीं है। हमें आधुनिक तकनीकी के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा।ङ्क कार्यक्रम में सहभागिता करने में मुख्य रूप से राम शरन साहू, राजेंद्र साहू, अभिषेक चौरसिया, शिव ओम सोनी, धर्मपाल सिंह, संतोष श्रीवास्तव सहित अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, नगरवासी एवं शिक्षा प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।कार्यक्रम का समापन वैदिक मंत्रोच्चार और सामूहिक संकल्प के साथ हुआ, जिसमें सभी ने इस नए शैक्षणिक केंद्र को आदर्श विद्यालय के रूप में स्थापित करने का संकल्प लिया।

आजादपुर की ग्राम प्रधान स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय परेड मे होंगी शामिल

अमेठी । पंचायती राज मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली ने पत्र जारी कर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में लाल किले की प्राचीर से आयोजित ध्वजारोहण समारोह एवं उसके पश्चात आयोजित सम्मान समारोह में विशेष अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश से पच्चीस विशिष्ट अतिथियों (ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधि उनके साथी पति/पत्नी सहित पचास प्रतिभागी) के प्रतिभाग किये जाने का आमंत्रण पत्र प्रदान किया गया है। पंचायत प्रतिनिधियों को यह सम्मान ग्राम पंचायतों में संचालित योजनाओं में से कम से कम छह योजनाओं में संतृप्त ग्राम पंचायत अथवा राष्ट्रीय, राज्य पुरस्कार प्राप्त पंचायतें, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल एवं स्वच्छता, जलवायु परिवर्तन आदि विकासात्मक विषयों,क्षेत्रों में अनुकरणीय प्रदर्शन करने वाले विविध सामाजिक-आर्थिक वर्गों, लिंग आधारित प्रतिनिधित्व तथा स्वतंत्रता सेनानी से जुड़े पंचायत प्रतिनिधियों तथा उनके जीवनसाथी, अभिभावक के लिए दिया जा रहा है।उत्तर प्रदेश से उक्त कार्यक्रम के नोडल अधिकारी के रूप में अमरजीत सिंह, मण्डलीय उपनिदेशक पंचायत मेरठ मण्डल अमरजीत सिंह को नामित किया गया है।

71 लाख लागत परियोजना का विधायक ने किया शिलान्यास

फतेहपुर बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। विधायक साकेन्द्र प्रताप वर्मा ने वैश्विक नगरोदय योजना के तहत तीन करोड़ 71 लाख 10 हजार लागत से बारात घर व बहुउद्देशीय हॉल महत्वाकांक्षी परियोजना का सरदार पटेलपार्क में मंत्रोच्चारण के मध्य शिलान्यास किया। कार्यक्रम में विधायक वर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार जनकल्याण को समर्पित है। इस अवसर पर नपअध्यक्ष इरशादअहमद कमर, पत्रकार नीरज शर्मा, रंजीत रावत, भाजपा जिला मंत्री मंडल अध्यक्ष रंजीत लोधी, डा0 अंजू चन्द्रा अरुणसिंह, लिपिक नदीमअहमद, आफताबआलम, मो. जीशान सहित अनेक गणमान्य नागरिक और आमजन उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा अभियान, उपेन्द्र की बैठक

जैदपुर बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। नगर पंचायत के सभागार में गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी मंडल अध्यक्ष प्रेम प्रकाश द्विवेदी के नेतृत्व में हर घर तिरंगा अभियान के तहत बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व सांसद उपेंद्र सिंह रावत उपस्थित हुए। इस दौरान उन्होंने सभी नवागत पदाधिकारियो को फूल माला पहनाकर व अंग वस्त्र देकर स्वागत किया तथा हर घर तिरंगा अभियान के कार्यक्रम को सफल बनाने के निर्देश दिए गए।

करंट से महिला की दर्दनाक मौत

बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना क्षेत्र में बीती रात फर्राटा पंखा में करंट की चपेट में आने से एक महिला की दर्दनाक मौत हुई । थाना क्षेत्र के जरौली गांव की श्यामा देवी पत्नी स्व.अयोध्या प्रसाद उम्र 50 वर्ष देर रात अपने कमरे में पंखा चलाने लगी ।तभी पंखे में करंट आने से वह गंभीर रूप से झुलस गई परिजन एक निजी अस्पताल ले गए जहां पर डॉक्टरों ने उनको मृत घोषित कर दिया।सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। श्यामा देवी अपने पीछे एक बेटी और तीन पुत्र छोड़ गई।

रक्षाबंधन पर उमड़ा बाजारों में जनसैलाब, परंपरा और आधुनिकता का दिखा संगम

निंदूरा बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। रक्षाबंधन पर्व की तैयारियों को लेकर गुरुवार को क्षेत्र के बाजारों में जबरदस्त चहल-पहल देखने को मिली। निंदूरा, टिकैतगंज, कुर्सी, बाबागंज, रीवासीवा, बड्डूपुर, खिंझना और घुंघटेर समेत आसपास के कस्बों की राखी, मिठाई और कपड़ों की दुकानों पर दिनभर खरीदारों की भीड़ उमड़ती रही। बहनों ने अपने भाइयों के लिए उत्साहपूर्वक राखियों की खरीदारी की, जिससे बाजारों की रौनक देखते ही बन रही थी। इस बार बाजारों में राखियों के रूप में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर मेल देखने को मिला। डोरेमोन, छोटा भीम, घड़ी वाली, ब्रेसलेट राखियों से लेकर इलेक्ट्रॉनिक और चांदी की राखियों तक विभिन्न प्रकार की आकर्षक राखियां उपलब्ध रहीं। दुकानदारों के अनुसार, राखियों की कीमत ?5 से शुरू होकर ?400 तक रही, जबकि चांदी और सोने की राखियों की कीमत ?400 से लेकर 20,000 तक पहुंच गई। विशेष ऑर्डर पर मंगाई जा रहीं कीमती राखियां टिकैतगंज के एक आभूषण विक्रेता के अनुसार, कई ग्राहक विशेष ऑर्डर पर सोने-चांदी की राखियां बनवाकर खरीद रहे हैं। वहीं राखी विक्रेता प्रकाश गुप्ता और अनिल ने बताया कि कई बहनों ने अपने भाइयों को डाक और कूरियर से राखी भेजने के लिए पहले ही खरीदारी कर ली है, क्योंकि उनके भाई नौकरी या अन्य कारणों से बाहर रहते हैं। 'अंदर्शा' मिठाई बनी पहली पसंद रक्षाबंधन को लेकर मिठाई की दुकानों पर भी तैयारियां जोरों पर हैं। कारीगर रात-रात भर जागकर विभिन्न प्रकार की मिठाइयां तैयार कर रहे हैं। इस क्षेत्र में खासतौर पर चावल और शक्कर से बनने वाली पारंपरिक मिठाई 'अंदर्शा' की भारी मांग रहती है। दुकानदारों के अनुसार, इस मिठाई को एक-एक कर तलना पड़ता है, जिसमें अधिक समय लगता है। इसी कारण इसकी तैयारी कई दिन पहले से ही शुरू हो गई है।रक्षाबंधन का यह पर्व भाई-बहन के रिश्ते की मिठास और आत्मीयता का प्रतीक बनकर बाजारों में जीवंतता भर रहा है। पारंपरिक संस्कृति, आधुनिक राखियों और खास मिठाइयों के साथ यह त्योहार लोगों के जीवन में उमंग और उल्लास का संचार कर रहा है।

सरयू की उफान से तराई में तबाही: कई गांवों में पानी घुसा, फसलें बर्बाद, स्कूल बंद

एसडीएम अनुराग सिंह ने किया बाढ़ क्षेत्रों का भ्रमण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। नेपाल से छोड़े गए पानी और लगातार हो रही बारिश के कारण सरयू (घाघरा) नदी उफान पर है। नदी का जलस्तर एल्गिन ब्रिज पर खतरे के निशान से 47 सेंटीमीटर ऊपर पहुंच गया है, जिससे तराई क्षेत्र के दर्जनों गांवों में बाढ़ का पानी घुस चुका है। फसलें जलमग्न हो चुकी हैं और कई मकानों व स्कूलों में पानी भरने से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है।नेपाल द्वारा छोड़े गए अतिरिक्त पानी के कारण बाराबंकी जिले के दुर्गापुर, तपेसिपाह, सिसौंडा, लहड़रा, बलिदानपुरवा, पंडित पुरवा, हरिनारायणपुर, केसियापुर, लोहटी जई और मथुरापुरवा गांवों में बाढ़ का पानी फैल गया है। इन गांवों में ग्रामीण अपने मवेशियों और जरूरी सामान को ऊंचे स्थानों पर ले जाने में जुटे हैं। प्रशासन ने हाई अलर्ट जारी किया है।एसडीएम ज्वाइंट मजिस्ट्रेट रामनगर गुंजिता अग्रवाल ने बताया कि राजस्व विभाग और आपदा प्रबंधन की टीमें प्रभावित गांवों में लगातार निगरानी कर रही हैं। ग्रामीणों को सतर्क रहने और प्रशासन से संपर्क में रहने की सलाह दी गई है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि बाढ़ की यह समस्या हर वर्ष आती है, लेकिन अब तक कोई स्थायी उपाय नहीं किया गया है। कोरिन पुरवा और दुर्गापुर में लोगों के घरों में पानी घुस गया है। ग्रामीणों ने सरकार से ऊंचे स्थानों पर राहत शिविर और स्थायी बांध जैसी संरचनाएं बनाने की मांग की है। सिरौलीगौसपुर तहसील के तेलवारी गांव का प्राथमिक विद्यालय भी बाढ़ की चपेट में आ गया है। विद्यालय परिसर में पानी भरने के कारण पढ़ाई बाधित हो गई है। खंड शिक्षा अधिकारी फिजा मिर्ज़ा ने बताया कि तेलवारी स्कूल के बच्चों को दो किलोमीटर दूर गिदरापुर स्कूल में स्थानांतरित किया गया है। रामसनेहीघाट के एसडीएम अनुराग सिंह ने आज डलई ब्लॉक के बाढ़ प्रभावित इलाकों का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को राहत और बचाव कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा, ''प्रशासन पूरी तरह से सतर्क है और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार है।'' केंद्रीय जल आयोग ने आशंका जताई है कि आगामी दिनों में नेपाल से और पानी छोड़े जाने की संभावना है, जिससे नदी का जलस्तर और बढ़ सकता है।

इससे तटीय गांवों में स्थिति और गंभीर हो सकती है।

ग्रामीणों की व्यथा: 'मवेशी बचा लिए, लेकिन घर की चिंता है'

टेपरा गांव निवासी 50 वर्षीय जगजीवन ने बताया, ''सरयू का पानी लगातार बढ़ रहा है। हमने मवेशियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया है, लेकिन घर की चिंता अब भी बनी हुई है।''बाढ़ से जूझ रहे तराई क्षेत्र के हालात हर साल एक जैसे होते हैं। प्रशासन की तात्कालिक तैयारी सराहनीय है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या अब समय नहीं आ गया है कि इस संकट का दीर्घकालिक समाधान तलाशा जाए?

सिराज को वह सम्मान नहीं मिलता जो मिलना चाहिए : तेंदुलकर

एजेंसी

नयी दिल्ली। लीजेंड बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने उन कुछ भारतीय खिलाड़ियों की सराहना की है, जिन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में अहम भूमिका निभाई। यह सीरीज, आखिरी दिन के दिल थाम देने वाले अंत के बाद 2-2 से बराबरी पर खत्म हुई। तेंदुलकर ने 'अविश्वसनीय' मोहम्मद सिराज की तारीफ की, केएल राहुल के ऑफ स्टंप के आसपास अपने खेल को 'सटीक फुटवर्क' के साथ कसने की बात कही, यशस्वी जायसवाल के दोहरे शतकों, जज्बा और परिपक्वता की चर्चा की और शुभमन गिल के कप्तान के रूप में 'शांत और संयमित' रहने की भी तारीफ की। इस सीरीज में कई मोड़, जोरदार टकराव और कुछ असाधारण व्यक्तिगत प्रदर्शन हुए, जैसे ऋषभ पंत और क्रिस वोक्स का चोटिल होने के बावजूद बल्लेबाजी करने आना। पंत ने पांच में से चार टेस्ट खेले और दो शतक व तीन अर्धशतक लगाए, जिनमें आखिरी पारी उन्होंने दाहिने पैर में फ्रैक्चर के साथ खेली। उन्होंने 68.42 की औसत और 77.63 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए। तेंदुलकर ने रेडिट पर कहा, ''जो स्वीप शॉट उन्होंने खेला, उसमें वह गेंद के नीचे आना पसंद करते हैं ताकि उसे ऊंचाई के साथ स्कूप कर सकें। लोग सोचते हैं कि वह गिर गए हैं, लेकिन यह जानबूझकर किया गया है ताकि वह गेंद के नीचे आ सकें। ऐसे शॉट खेलने का राज यही है कि आप गेंद के नीचे आ सकें। यह एक योजना के तहत गिरना होता है, वह असंतुलित नहीं होते हैं। यह सब गेंद की लेंथ पर निर्भर करता है। पंत के शॉट खेलने के तरीके और उनमें जो 'पंच' होता है, उसे 'ईश्वर का वरदान' बताते हुए तेंदुलकर ने कहा, ''कई बार लोग सोचते हैं कि उन्हें यह शॉट नहीं खेलना चाहिए, यह सही समय नहीं है। लेकिन ऋषभ जैसे खिलाड़ी को अकेला छोड़ देना चाहिए। जब वह मैच बचाने की सोच रहे हो, तो उन्हें एक अलग तरीका अपनाना होगा। लेकिन उन्होंने यह समझ लिया है कि पारी को कैसे खेलना है, यह मैच की स्थिति पर निर्भर करता है। इस सीरीज में भारत के दो प्रमुख बल्लेबाज़ गिल और राहुल रहे, जिन्होंने क्रमशः 754 और 532 रन बनाए और मिलकर छह शतक लगाए। तेंदुलकर ने बताया कि दोनों बल्लेबाजों का 'सटीक फुटवर्क' इंग्लैंड की कठिन परिस्थितियों में देखने लायक था। कप्तान के रूप में गिल का रन योग डॉन ब्रैडमैन के 1936 में बनाए गए 810 रनों के बाद दूसरा सबसे अधिक था। उन्होंने गिल के बारे में कहा, ''वह अपने सोचने के तरीक़े में बेहद निरंतर थे क्योंकि यह आपके फुटवर्क में भी झलकता है। अगर आप दिमाग में स्पष्ट नहीं हैं, तो आपका शरीर भी वैसे ही प्रतिक्रिया नहीं करता है।

कनेडियन ओपन 2025: ओसाका ने टॉसन को हराकर फाइनल में बनाई जगह

एजेंसी

मॉन्ट्रियल। चार बार की ग्रैंड स्लैम विजेता जापान की नाओमी ओसाका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बुधवार (भारतीय समयानुसार गुरुवार) को क्लारा टॉसन को हराकर कनेडियन ओपन 2025 के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। फाइनल मुकाबले में अब उनका सामना कनाडा की 18 वर्षीय टेनिस सनसनी विक्टोरिया मोबोको से होगा। ओसाका ने डेनमार्क की टॉसन को 6-2, 7-6 (9/7) से हराकर फाइनल में जगह बनाई। ये ओसाका का 2022 मियामी ओपन के बाद पहला डब्ल्यूटीए 1000 फाइनल होगा और 2021 ऑस्ट्रेलियन ओपन के बाद उनकी पहली टूर-लेवल खिताबी कोशिश होगी। मैच के पहले सेट में ओसाका ने पूरी तरह दबदबा बनाया, लेकिन दूसरे सेट में टॉसन ने वापसी की कोशिश की और दो बार ब्रेक लेकर मुकाबले को टाईब्रेक तक खींचा। टाईब्रेक में भी टॉसन को 6-4 की बढ़त के साथ दो सेट प्वाइंट मिले, लेकिन वह उन्हें भुना नहीं सकीं। ओसाका ने एक मैच प्वाइंट गंवाने के बाद लगातार दो अंक जीतकर जीत सुनिश्चित की। दूसरे सेमीफाइनल में विक्टोरिया मोबोको ने विंबलडन चैंपियन एलेना रायबाकिना के खिलाफ 1-6, 7-5, 7-6 (7/4) की रोमांचक जीत दर्ज की। इस मुकाबले में उन्होंने एक मैच प्वाइंट भी बचाया, जो उनके मानसिक मजबूती का बड़ा प्रमाण है। फाइनल मुकाबले को लेकर ओसाका ने कहा, ''मैं बहुत खुश हूं और लंबे समय बाद हार्ड कोर्ट फाइनल खेलने को लेकर उत्साहित हूं। मैंने मोबोको का मैच देखा, वह शांत बनी रहीं और मैच प्वाइंट से वापसी करना वाकई एक 18 साल की खिलाड़ी के लिए बेहद प्रभावशाली है। ओसाका इस सप्ताह की अपनी शानदार परफॉर्मेंस के दम पर अब विश्व रैंकिंग में ऊंचाई पर पहुंच जाएंगी, जिससे यूएस ओपन 2025 में उन्हें सीडेड प्लेयर के रूप में जगह मिलना लगभग तय है।

कनेडियन ओपन 2025: खाचानोव ने ज्वेरेव को हराकर फाइनल में बनाई जगह

एजेंसी

मॉन्ट्रियल। रूस के 11वीं वरीयता प्राप्त टेनिस खिलाड़ी कारेन खाचानोव ने कनेडियन ओपन 2025 के फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। उन्होंने बुधवार को एक रोमांचक मुकाबले में शीर्ष वरीय अलेक्जेंडर ज्वेरेव को 6-3, 4-6, 7-6 (7/4) से हराया। खाचानोव ने तीसरे सेट के टाईब्रेक में 1-3 से पीछे होने के बावजूद शानदार वापसी की और जीत हासिल की। इस जीत के साथ खाचानोव अपने करियर के 11वें एटीपी फाइनल में पहुंच गए हैं, जहां उनका मुकाबला टेलर फ्रिट्ज या बेन शेल्टन से होगा। दोनों के बीच होने वाला ऑल-अमेरिकन सेमीफाइनल एक तकनीकी खामी की वजह से शुरू होने से पहले ही रोक दिया गया था। इलेक्ट्रॉनिक लाइन-कॉलिंग सिस्टम में समस्या आने के कारण मैच को टालना पड़ा। मैच के दौरान खाचानोव ने एक महत्वपूर्ण मैच प्वाइंट बचाया, जब तीसरे सेट में स्कोर 6-6 था और ज्वेरेव का बैकहैंड नेट में चला गया। लगभग तीन घंटे तक चले इस मुकाबले में ज्वेरेव ने 44 अनफोर्स्ड एरर किए, जबकि खाचानोव ने 29 विनर्स और 34 अनफोर्स्ड एरर के साथ संतुलित खेल दिखाया। जीत के बाद खाचानोव ने कहा, ''यह एक मानसिक और शारीरिक रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण मैच था। मैंने खुद से कहा कि चाहे जो हो जाए, कोशिश करनी है और हार नहीं माननी है।

बेहतर फिटनेस, घटे हुए वजन और रफ्तार के साथ एशिया कप के लिये तैयार मनप्रीत

एजेंसी

नयी दिल्ली। चौदह साल से अंतरराष्ट्रीय हॉकी खेल रहे मनप्रीत सिंह ने पिछले एक साल में फिटनेस के लिये कड़ी मेहनत की। मीठा और जंक फूड खाना लगभग बंद कर दिया ताकि इस महीने के आखिर में हो रहे एशिया कप से लेकर अगले साल एशियाई खेलों तक टीम को अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकें। भारत के लिये दिलीप टिर्की (412) के बाद सबसे ज्यादा 402 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाले मनप्रीत ने भाषा को दिये इंटरव्यू में कहा ,''पिछले साल पेरिस ओलंपिक और एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद से मुझे लगा कि अगर कैरियर को विस्तार देना है तो फिटनेस पर काम करना होगा। तोक्यो ओलंपिक 2020 में 41 साल बाद भारत को अपनी कप्तानी में कांस्य पदक दिलाने वाले 32 वर्ष के इस मिडफील्डर ने कहा ,'' मैं 30 पार हो चुका हूं और अब टीम के युवा खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा के लिये उनके स्तर पर फिटनेस रखनी होगी। सिर्फ अनुभव से काम नहीं चलता। उन्होंने बताया कि किस तरह से उन्होंने अपने खानपान में बदलाव करके कई पसंदीदा चीजों को खाना लगभग बंद कर दिया। पंजाब के मीठापुर से निकलकर 2011 में 19 वर्ष की उम्र में भारत के लिये पदार्पण करने वाले इस खिलाड़ी ने कहा ,'' मैने मीठा और जंक फूड लगभग बंद कर दिया है। हफ्ते में एक दिन ही ऐसा कुछ खाता हूं लेकिन बहुत कम मात्रा में। जिम के अलावा भी कोर वर्कआउट, स्पीड पर काम करना शुरू किया और सात किलो वजन कम कर लिया। उन्होंने बताया ,'' कम वजन के साथ मैदान पर रफ्तार बेहतर हुई। योयो और स्पीड टेस्ट में भी बहुत अच्छे नतीजे मिले। मुझे खुद को बहुत अच्छा लग रहा है। मनप्रीत फिलहाल लॉस एंजिलिस में 2028 में होने वाले ओलंपिक के बारे में नहीं सोच रहे और उन्होंने कहा कि वह एशियाई खेलों के बाद ही आगे के लिये फैसला लेंगे। उन्होंने कहा ,''मेरा पहला लक्ष्य अगले साल होने वाले एशियाई खेल हैं और मैं जानता हूं कि मेरी फिटनेस उस स्तर की है। उसके बाद फिटनेस का आकलन करूंगा और अगर सही नहीं रही तो किसी दूसरे खिलाड़ी के लिये जगह खाली कर दूंगा। वैसे मैं क्रिस्टियानो रोनाल्डो को आदर्श मानता हूं जो 40 वर्ष की उम्र में भी इतना फिट है। मनप्रीत ने यह भी कहा कि भारतीय टीम फिटनेस के मामले में आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, जर्मनी जैसी बड़ी टीमों से कमतर नहीं है और फर्क सिर्फ हाथ आये मौके भुनाने का है। उन्होंने कहा कि तोक्यो ओलंपिक से पहले ही टीम में बड़ी टीमों को हराने का आत्मविश्वास आ गया था। फिटनेस और कौशल के मामले में हम किसी से कम नहीं। फर्क सिर्फ रणनीति पर अमल का है और मैच के दिन जो अच्छा कर पाता है , वही जीतता है। तेज रफ्तार अंतरराष्ट्रीय हॉकी खेलते हुए इतने लंबे कैरियर में कार्यभार प्रबंधन कैसे किया, यह पूछने पर उन्होंने कहा, हमारे पास खिलाड़ियों का बड़ा पूल है और भारत ए टीम भी है।

भारतीय निशानेबाजी लीग इस खेल के लिए एक ऐतिहासिक क्षण होगा: रोंजन सोढ़ी

नई दिल्ली। पूर्व विश्व नंबर एक और ओलंपियन रोंजन सोढ़ी भारतीय निशानेबाजी लीग (एसएलआई) का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं और उन्होंने इसे खेल के लिए एक ऐतिहासिक क्षण बताया है। भारत के सबसे प्रतिष्ठित ट्रैप निशानेबाजों में से एक, सोढ़ी ने कहा, लीग प्रारूप एक ऐसी चीज है जिस पर हम लंबे समय से चर्चा कर रहे थे। भारतीय निशानेबाजी में अब जिस तरह की गहराई है, उसे देखते हुए यह सही कदम है। उन्होंने आगे कहा, ''यह प्रशंसकों के लिए रोमांचक, युवा निशानेबाजों के लिए बेहतरीन और खेल के लिए बेहद जरूरी होगा। सोढ़ी ने आगे कहा, ''इस लीग में भारतीय निशानेबाजी को बदलने की क्षमता है। अब यह केवल पदकों के बारे में नहीं है। यह एक संस्कृति के निर्माण के बारे में है। सोढ़ी का मानना है कि युवा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतिभाओं के लिए एक बेहतरीन मंच होने के अलावा, यह लीग खेल की लोकप्रियता को भी बढ़ाएगी।

मैंने भारत के खिलाफ बल्लेबाजी नहीं करने के बारे में कभी नहीं सोचा था: क्रिस वोक्स

एजेंसी

लंदन। इंग्लैंड के ऑलराउंडर क्रिस वोक्स का कहना है कि उन्होंने भारत के खिलाफ पांचवें टेस्ट मैच के आखिरी दिन कंधे की हड्डी खिसकने के कारण बल्लेबाजी नहीं करने के बारे में कभी नहीं सोचा था। उन्होंने हालांकि कहा कि जब उन्हें यह चोट लगी थी तब उन्हें लगा था कि क्या उनका करियर खतरे में है। वोक्स पांचवें टेस्ट मैच के अंतिम दिन अंतिम बल्लेबाज के रूप में उतरे तो उनका बायां हाथ पट्टे से बंधा हुआ था और उन्होंने इसे स्वेटर के अंदर डाला हुआ था। भारत ने यह मैच छह रन से जीता। वोक्स ने कहा कि उन्हें लगा कि ऐसा करना सभी के लिए उनका कर्तव्य है और उन्हें अब भी इस बात का दुख है कि इंग्लैंड मैच हार गया। इस तेज गेंदबाज को अभी अपने स्कैन के नतीजों को इंतजार है। वोक्स ने 'द गार्जियन' से कहा, ''मुझे नहीं पता कि यह क्या है। आप बस इतना जानते हैं कि आप किसी बड़ी चीज का हिस्सा हैं। आप सिर्फ अपने लिए ही नहीं खेल रहे हैं। उन्होंने कहा, ''यह आपकी टीम और आपके साथियों की मेहनत और उनके द्वारा किए गए त्याग, घर पर और मैदान पर देखने वाले लोगों की मेहनत है। आप बस सबके लिए ऐसा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। वोक्स ने कहा, ''मैं अब भी बहुत निराश हूं, सचमुच बहुत निराश हूं कि हम वह परीकथा नहीं बना पाए। लेकिन मैंने कभी मैदान पर नहीं जाने के बारे में नहीं सोचा, चाहे जीत के लिए 100 रन ही क्यों ना होते। वोक्स ने कहा कि दर्शकों के खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मैदान पर उतरना अच्छा लगा लेकिन वह अपने इस साहसिक कार्य को अधिक तवज्जो नहीं देते। उन्होंने कहा, ''तालियां बजना अच्छा लगा और कुछ भारतीय खिलाड़ी अपना सम्मान दिखाने आए। लेकिन कोई अन्य खिलाड़ी भी ऐसा ही करता। आप नौ विकेट गिरने के बाद मैच खत्म नहीं कर सकते थे। वोक्स ने खुलासा किया कि उन्होंने चौथे दिन से इंग्लैंड के सहायक कोच मार्कस ट्रेस्कोथिक के साथ एक हाथ से बल्लेबाजी का अभ्यास शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा, ''मैंने सामान्य रूप से एक गेंद खेली और यह बहुत पीड़ादायक था। वोक्स ने कहा, ''हमें जल्द ही समझ आ गया कि बाएं हाथ के बल्लेबाज की तरह खेलने से कंधे को सुरक्षा मिलेगी और कम से कम मुझे अपने ऊपरी हाथ को नियंत्रण में रखते हुए गेंद को रोकने में मदद करेगा। मैंने कुछ गेंद खेली, कुछ चूक गया लेकिन ऐसा लगा कि बचने का यही एकमात्र तरीका है।

भारत ए के खिलाफ चार दिवसीय मैच के लिए कोन्सटास और मैकस्वीनी ऑस्ट्रेलिया ए टीम में

सिडनी। भारत के खिलाफ पिछली बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट पदार्पण करने वाले सलामी बल्लेबाज सैम कोन्सटास और नाथन मैकस्वीनी को बृहस्पतिवार को ऑस्ट्रेलिया 'ए' टीम में शामिल किया गया जो अगले महीने लखनऊ में भारत 'ए' टीम के खिलाफ चार दिवसीय दो मैच खेलेगी। कोन्सटास ने पिछली भारत-ऑस्ट्रेलिया श्रृंखला के दौरान मैकस्वीनी की जगह ली थी लेकिन शीर्ष क्रम में अपनी जगह पक्की नहीं कर पाए। कैरेबियाई दौरे में उनका प्रदर्शन निराशाजनक रहा जबकि उनकी टीम ने वेस्टइंडीज पर पूरी तरह से दबदबा बनाया। उन्नीस वर्षीय कोंस्टास 'ए' टीम में चुने गए मौजूदा टेस्ट टीम के एकमात्र खिलाड़ी हैं जबकि अन्य अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों में मैकस्वीनी, कूपर कोनोली और स्पिनर टॉड मर्फी शामिल हैं। कोन्स्टास ने मेलबर्न टेस्ट में अपने पदार्पण पर काफी प्रभाव डाला था। उन्होंने आक्रामक अर्धशतक बनाया और भारतीय सुपरस्टार विराट कोहली ने उन्हें कंधे से धक्का दिया था। बाद में उनकी अन्य भारतीय खिलाड़ियों के साथ बहस भी हुई लेकिन वह शुरुआती उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके। एकादश में जगह नहीं बना पाने के कारण उन्हें श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैच की श्रृंखला से शेफील्ड शील्ड में खेलने के लिए वापस भेज दिया गया था। अब तक सात टेस्ट मैच खेलने वाले मर्फी ने 2022-23 में भारत दौरे के दौरान बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के चारों मैच खेले और उस श्रृंखला में 14 विकेट लिए जिसमें ऑस्ट्रेलिया 1-2 से हार गया। ऑस्ट्रेलिया के चयनकर्ताओं के अध्यक्ष जॉर्ज बेली के हवाले से 'क्रिकेट.कॉम.एयू' ने कहा, उपमहाद्वीप का दौरा कई अनूठी चुनौतियां और बल्ले और गेंद से विभिन्न कौशल का उपयोग करने का अवसर प्रदान करता। उन्होंने कहा, ''हमें उम्मीद है कि इन परिस्थितियों का बार-बार अनुभव प्राप्त करने से खिलाड़ियों को भविष्य के उपमहाद्वीपीय दौरों के लिए अपने खेल की एक प्रभावी पद्धति और समझ विकसित करने में मदद मिलेगी।

संक्षिप्त समाचार

वेलाम्मल विद्यालय ने विश्व स्कूल टीम चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता

नयी दिल्ली। चेन्नई के वेलाम्मल विद्यालय ने अमेरिका के वर्जीनिया में आयोजित विश्व स्कूल टीम चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी उपलब्धियों में और इजाफा किया है। सबसे युवा विश्व चैंपियन डी गुकेश और ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने इसी स्कूल से पढ़ाई की है। चेन्नई के मोगाप्पैर इलाके में स्थित वेलाम्मल विद्यालय शतरंज क्रांति के पीछे एक बड़ी ताकत रहा है क्योंकि यह सैकड़ों उभरते हुए शतरंज खिलाड़ियों को विशेषज्ञ प्रशिक्षण प्रदान करता है। शतरंज की वैश्विक संचालन संस्था फिडे ने बृहस्पतिवार को लिखा, ''आठ रोमांचक दौर के बाद 2025 विश्व स्कूल टीम चैंपियनशिप आज वर्जीनिया के अलेक्जेंड्रिया में संपन्न हुई।'' उन्होंने कहा, ''एपिस्कोपल हाई स्कूल के खूबसूरत परिसर में आयोजित इस प्रतियोगिता में दुनिया भर के कुछ सबसे प्रतिभाशाली युवा शतरंज खिलाड़ियों ने चुनौती पेश की। परफ़ेक्ट स्कोर के साथ बाकियों से आगे निकलते हुए भारत के वेलाम्मल एमएचएस स्कूल ने अपने सभी आठ मैच जीतकर स्वर्ण पदक जीता। फिडे ने कहा कि वेलाम्मल स्कूल की जीत शतरंज में भारत के बढ़ते खिताबों में एक और अध्याय जोड़ती है। फिडे ने कहा, ''भारत शतरंज के सभी स्तरों और प्रारूपों में लगातार सफलता हासिल कर रहा है और इस जीत से देश के बढ़ते खिताबों में एक और खिताब जुड़ गया है। उन्होंने कहा, ''वेलाम्मल एमएचएस के लिए सफलता नई नहीं है– इसके पूर्व छात्रों में ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा और लियोन मेंडोंका शामिल हैं। इसलिए जब टीम पहले से ही शीर्ष स्थान हासिल करके अंतिम दौर में पहुंची तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। वेलाम्मल स्कूल ने 2005 के बाद से कई ग्रैंडमास्टर दिए हैं जिनमें एसपी सेतुरमन, मेंडोंका, के प्रियदर्शन, बी अधिबान, विष्णु प्रसन्ना, विशाख एनआर, विग्नेश एनआर, एम कार्तिकेयन, सी अरविंद, कार्तिक वेंकटरमन, वी प्रणव, एस भरत, अर्जुन कल्याण, पी कार्तिकेयन और एन श्रीनाथ शामिल हैं।

अकासा एयर के तीन साल पूरे, कुछ वर्षों में दक्षेस और आसियान क्षेत्रों के लिए उड़ान की योजना

नयी दिल्ली। तीन साल पुरानी अकासा एयर ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह अगले कुछ वर्षों में दक्षेस और आसियान क्षेत्रों के लिए उड़ानें शुरू करेगी। इसके अलावा एयरलाइन नवी मुंबई और नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों का लाभ उठाकर एक व्यापक नेटवर्क विकसित करेगी। अकासा एयर ने सात अगस्त, 2022 को परिचालन शुरू किया था और उसे उम्मीद है कि इस साल के अंत तक उसके बेड़े में 30 से ज्यादा विमान होंगे। इस समय एयरलाइन के पास 30 विमान हैं। अकासा एयर ने बृहस्पतिवार को बयान में कहा, एयरलाइन दिल्ली जैसे प्रमुख बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ाएगी और एक व्यापक नेटवर्क बनाने के लिए नवी मुंबई और नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के बनने का लाभ उठाएगी। अकासा एयर ने यह भी कहा कि वह अगले कुछ वर्षों में सार्क और आसियान सहित नए क्षेत्रों में प्रवेश करके अपनी वैश्विक उपस्थिति का विस्तार करेगी। भारत सहित आठ देश दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) का हिस्सा हैं। इनमें अन्य देश अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका हैं। दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) में 10 देश ऽ इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपीन, सिंगापुर, थाइलैंड, ब्रुनेई दारुस्सलाम, वियतनाम, लाओ पीडीआर, म्यांमा और कंबोडिया शामिल हैं। बयान में कहा गया कि केवल 36 महीनों में, अकासा एयर ने 1.9 करोड़ से ज्यादा यात्रियों को सेवाएं दी हैं।

13 प्रमुख शहरों का आवास मूल्य सूचकांक मार्च में सालाना आधार पर आठ अंक बढ़ा: रिपोर्ट

नयी दिल्ली। आवासीय संपत्तियों की मजबूत मांग के कारण इस साल मार्च में 13 प्रमुख शहरों का आवास मूल्य सूचकांक सालाना आधार पर आठ अंक बढ़कर 132 हो गया। आरईए इंडिया और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। आवास मूल्य सूचकांक (एचपीआई), आरईए इंडिया के रियल एस्टेट मंच हाउसिंग डॉट कॉम और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) की एक संयुक्त पहल है, जो 13 शहरों में कीमतों पर नजर रखता है। ये शहर अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, फरीदाबाद, गांधीनगर, गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, नोएडा और पुणे हैं। इस सूचकांक ने इस साल मार्च में आठ अंकों की मामूली वृद्धि दर्ज की और 132 पर पहुंच गया। आरईए इंडिया (हाउसिंग डॉट कॉम) के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) प्रवीण शर्मा ने कहा, ''भारतीय आवास बाजार इस समय स्वस्थ समेकन के दौर से गुजर रहा है।

मुकेश अंबानी को पांचवें साल कोई वेतन नहीं, उनके प्रवर्तक समूह को 3,600 करोड़ रुपये का लाभांश मिला

नयी दिल्ली। एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी ने अपने समूह रिलायंस इंडस्ट्रीज से लगातार पांचवें साल कोई वेतन नहीं लिया और लाभांश उनकी आय का मुख्य स्रोत बना हुआ है। रिलायंस इंडस्ट्रीज का कारोबार तेल से लेकर दूरसंचार और खुदरा क्षेत्र तक फैला हुआ है। अंबानी (68) ने वित्त वर्ष 2008-09 से 2019-20 तक अपने वार्षिक पारिश्रमिक को 15 करोड़ रुपये तक सीमित रखा था। उन्होंने कोविड-19 महामारी के बाद वित्त वर्ष 2020-21 से तब तक अपना वेतन छोड़ने का फैसला चुना, जब तक कि कंपनी और उसके सभी कारोबार पूरी तरह से अपनी आय क्षमता पर वापस नहीं आ जाते। कंपनी की ताजा वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 2024-25 में उन्हें वेतन, भत्ते और सेवानिवृत्ति लाभ के रूप में कोई राशि नहीं मिली। दुनिया के 18वें सबसे अमीर व्यक्ति, जिनकी कुल संपत्ति लगभग 100 अरब अमेरिकी डॉलर है, के लिए लाभांश आय ही आमदनी का स्रोत है। रिलायंस में उनके सीधे 1.61 करोड़ शेयर हैं। कंपनी द्वारा वित्त वर्ष 2024-25 के लिए घोषित 5.50 रुपये प्रति शेयर लाभांश के आधार पर उन्हें 8.85 करोड़ रुपये की लाभांश आय मिलती है। जिन प्रवर्तक समूह की कंपनियों पर अंबानी का नियंत्रण है, उनमें उनके पास 664.5 करोड़ शेयर या 50.07 प्रतिशत शेयर हैं, जो 3,655 करोड़ रुपये की लाभांश आय देते हैं। अंबानी के चचेरे भाई निखिल और हितल मेसवानी का पारिश्रमिक 2023-24 में क्रमशः 25.31 करोड़ रुपये और 25.42 करोड़ रुपये था, जो 2024-25 में थोड़ा कम होकर 25 करोड़ रुपये रह गया। कार्यकारी निदेशक पी एम एस प्रसाद का पारिश्रमिक 2024-25 में बढ़कर 19.96 करोड़ रुपये हो गया, जो इससे पिछले वर्ष 17.93 करोड़ रुपये था।

सर्राफा बाजार में लगातार तीसरे दिन तेजी का रुख, सोना और चांदी की बढ़ी चमक

एजेंसी

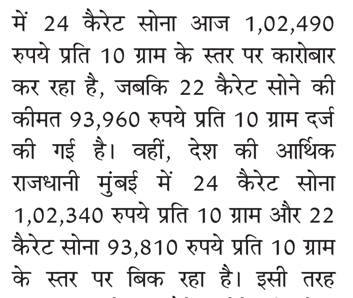

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार तीसरे दिन तेजी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 100 रुपये से 110 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। सोने की तरह चांदी के भाव में भी आज 1,000 रुपये प्रति किलोग्राम की तेजी दर्ज की गई है। कीमत में उछाल आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 1,02,340 रुपये से लेकर 1,02,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 93,810 रुपये से लेकर 93,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में तेजी आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज 1,16,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 1,02,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 93,960 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,02,340 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 93,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,02,390 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 93,860 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 1,02,340 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 93,810 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 1,02,340 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 93,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 1,02,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 93,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,02,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 93,860 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,02,490 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 93,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

ईडी बदमाशों की तरह काम नहीं कर सकता, कानून के दायरे में रहना होगा : सुप्रीम कोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सख्त लहजे में कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) बदमाशों की तरह काम नहीं कर सकता और उसे कानून के दायरे में ही रहना होगा। टिप्पणी केंद्रीय एजेंसी की ओर से जांचे गए मामलों में दोषसिद्धि की कम दरों पर चिंता जताते हुए की गई। जस्टिस सूर्यकांत, न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुयान और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा, 'हम प्रवर्तन निदेशालय की छवि को लेकर भी चिंतित हैं।' शीर्ष अदालत 2022 के उस फैसले की समीक्षा की मांग वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है, जिसमें धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की गिरफ्तारी की शक्तियों को बरकरार रखा गया था।

केंद्र और ईडी की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने समीक्षा याचिकाओं पर सवाल उठाया। उन्होंने कम दोषसिद्धि दर के लिए प्रभावशाली आरोपियों की टालमटोल की रणनीति को जिम्मेदार ठहराया। राजू ने

कहा, 'प्रभावशाली बदमाशों के पास बहुत साधन होते हैं। वे कार्यवाही को लंबा खींचने के लिए अलग-अलग चरणों में आवेदन दायर करने के लिए वकीलों की फौज रखते हैं। मामले का जांच अधिकारी जांच में समय लगाने के बजाय किसी न किसी आवेदन के लिए अदालत के चक्कर लगाता रहता है।'

न्यायमूर्ति भुयान ने अपने एक फैसले का हवाला देते हुए कहा कि पिछले पांच वर्षों में प्रवर्तन निदेशालय की ओर से दर्ज किए गए 5,000 मामलों में से 10 प्रतिशत से भी कम मामलों में दोषसिद्धि हुई है। न्यायमूर्ति भुयान ने कहा, 'आप बदमाश की तरह काम नहीं कर सकते, आपको कानून के दायरे में रहकर काम करना होगा। मैंने अपने एक फैसले में कहा था कि प्रवर्तन निदेशालय ने पिछले पांच वर्षों में लगभग 5,000 ईसीआईआर दर्ज की हैं, लेकिन दोषसिद्धि की दर 10 प्रतिशत से भी कम है। इसलिए हम इस बात पर जोर दे रहे हैं कि आप अपनी जांच में सुधार करें, क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़ा मामला है।' जज ने आगे कहा, 'हमें ईडी की छवि की भी चिंता है। 5-6 साल की न्यायिक हिरासत के बाद अगर लोग बरी हो जाते हैं, तो इसकी कीमत कौन चुकाएगा?'

जस्टिस कांत ने कहा कि सभी समस्याओं का समाधान टाडा और पोटा अदालतों जैसी समर्पित अदालतें हैं। पीएमएलए अदालतें दिन-प्रतिदिन की कार्यवाही कर सकती हैं, जिससे मामलों का शीघ्र निपटारा हो सकता है। उन्होंने कहा, 'हां, प्रभावशाली आरोपी अभी भी कई आवेदन दायर करेंगे, लेकिन इन आरोपियों और उनके वकीलों को पता होगा कि चूंकि यह दिन-प्रतिदिन की सुनवाई है और उनके आवेदन पर अगले ही दिन फैसला सुनाया जाएगा। अब उन पर कड़ी कार्रवाई करने का समय आ गया है। हम उनके प्रति सहानुभूति नहीं रख सकते। मैं एक मजिस्ट्रेट को जानता हूं, जिसे एक दिन में 49 आवेदनों पर फैसला करना पड़ता है। उनमें से प्रत्येक पर 10-20 पेजों का आदेश पारित करना पड़ता है। ऐसा नहीं चल सकता।' राजू ने आगे कहा कि ईडी अक्षम हो रहा है, क्योंकि प्रभावशाली आरोपी क्रिप्टो-करेंसी और अन्य तरीकों का कारोबार करने के अलावा केमैन द्वीप जैसे विभिन्न देशों में भाग जाते हैं और जांच में बाधा डालते हैं। क्रिप्टो-करेंसी के मुद्दे पर न्यायमूर्ति कांत ने कहा कि सरकार को इसे विनियमित करने के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए, क्योंकि लोग विभिन्न एप और क्रिप्टो स्टॉक एक्सचेंज चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि शीर्ष अदालत के न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची ने हाल ही में एक मामले में कहा था कि वह दिन दूर नहीं, जब रिश्वत लेने वाले क्रिप्टो-करेंसी में रिश्वत लेंगे, जिसकी जांच करना एजेंसियों के लिए बहुत मुश्किल होगा। राजू ने पुनर्विचार याचिकाओं की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हुए कहा कि ये 2022 के फैसले के खिलाफ पुनर्विचार के नाम पर अपील के अलावा कुछ नहीं हैं। उन्होंने कहा, 'पुनर्विचार के लिए आपको 2022 के फैसले में रिकॉर्ड के आधार पर साफ-साफ गड़बड़ी का मामला बनाना होगा, लेकिन उन्होंने कहीं भी यह नहीं बताया है कि स्पष्ट त्रुटि क्या है। अगर इन पुनर्विचारों को स्वीकार कर लिया जाता है तो यह 2022 के फैसले को फिर से लिखने के समान होगा।' राजू ने तर्क दिया कि पीएमएलए की संवैधानिक वैधता उनके पक्ष में है, क्योंकि 2019 में रोजर मैथ्यू मामले में संविधान पीठ ने कानून की वैधता को बरकरार रखा था।

सुप्रीम कोर्ट ने न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा की रिट याचिका खारिज की

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने कथित नगदी बरामदगी के आरोपों से घिरे न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा की रिट याचिका गुरुवार को खारिज कर दी। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ए जी मसीह की पीठ ने यह फैसला सुनाया। पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि घटना की जांच के लिए आंतरिक जांच समिति का गठन और उसके द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया गैरकानूनी नहीं थी। पीठ ने कहा, ''हमने माना है कि मुख्य न्यायाधीश और आंतरिक समिति ने तस्वीरें और वीडियो अपलोड (शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर) करने के अलावा पूरी प्रक्रिया का पूरी ईमानदारी से पालन किया था। अदालत ने आगे कहा, 'मुख्य न्यायाधीश द्वारा प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को पत्र भेजना (पद से हटाने के बारे में) असंवैधानिक नहीं था। पीठ ने यह भी कहा, ''भविष्य में जरूरत पड़ने पर आपके (न्यायमूर्ति वर्मा) लिए कार्यवाही शुरू करने का विकल्प खुला है। पीठ ने कहा कि आंतरिक प्रक्रिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है।

राजग ने मोदी, नड्डा को सौंपी उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के चयन की जिम्मेदारी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को सत्तारूढ़ गठबंधन का उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुनने की जिम्मेदारी सौंपी है। संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने गुरुवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में बताया कि लोकसभा और राज्यसभा में राजग के नेताओं ने श्री मोदी और श्री नड्डा को सत्तारूढ़ गठबंधन का उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुनने का अधिकार दिया है। संसद परिसर में भाजपा और उनके सहयोगियों के प्रमुख नेताओं की एक बैठक हुई, जिसमें यह फैसला सर्वसम्मति से लिया गया। बैठक में श्री नड्डा के अलावा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, जदयू के राजीव रंजन सिंह उर्फ लल्लन सिंह, शिवसेना के श्रीकांत शिंदे, तेलुगु देशम पार्टी के एल श्रीकृष्ण देवरायलु और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के चिराग पासवान शामिल हुए।

राहुल गांधी ने चुनावों में वोटर लिस्ट में गड़बड़ी और नतीजों में हेरफ़ेर का लगाया आरोप

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को चुनाव आयोग और भारतीय जनता पार्टी पर मिलीभगत से वोटर लिस्ट में फर्जी वोटर शामिल करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि दोनों की मिलीभगत से देश के लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा है। वोटर लिस्ट में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हुई है और इससे चुनावों के नतीजों में हेरफेर हुआ है।

राहुल गांधी ने यहां कांग्रेस मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस में कर्नाटक की बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट और महादेवपुरा विधानसभा सीट के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर आरोप लगाया कि इन इलाकों में करीब एक लाख वोटों की चोरी हुई है। उन्होंने दावा किया कि सिर्फ इन दो क्षेत्रों की 6.26 लाख वोटर लिस्ट में 1,00,250 वोट संदिग्ध पाए गए हैं। उन्होंने इस डेटा के विश्लेषण से 6 लाख 25 हजार कुल वोटरों में 1,00,250 वोटर फर्जी होने का दावा किया। उन्होंने कहा कि 11,965 डुप्लीकेट वोटर, 40,009 फर्जी या अमान्य पते मिले, 10,452 एक ही पते पर असामान्य संख्या में वोटर पाए गए, 4,132 लोगों की अमान्य या गायब तस्वीरें मिलीं और 33,692 फॉर्म 6 का दुरुपयोग के मामले सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि इस जांच को पूरा करने में छह महीने लगे और इस दौरान चुनाव आयोग ने किसी तरह की मदद नहीं की, बल्कि जरूरी डेटा देने से इनकार करता रहा। हमें पहले से संदेह था कि देश में चुनावी प्रक्रिया में कुछ गड़बड़ चल रही है। हरियाणा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में बार-बार भाजपा की जीत के पीछे झूठे नैरेटिव गढ़े जाते रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर हो या पुलवामा हमला, 'लाडली बहना' योजना हो या कोई और भावनात्मक मुद्दा, हर चुनाव में माहौल भाजपा के पक्ष में बनाया गया। इसके बाद चुनाव आयोग का शेड्यूल ऐसा तय होता है जिससे भाजपा को फायदा मिले। पहले जब कागज के बैलेट होते थे, तो देश एक दिन में मतदान कर लेता था। अब इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन होने के बावजूद मतदान महीनों तक चलता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में पांच चरण, महाराष्ट्र में तीन-चार चरण और असम, हरियाणा जैसे राज्यों के मतदान समय में बदलाव को लेकर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस ने चुनाव आयोग से डिजिटल वोटर लिस्ट मांगी तो आयोग ने इनकार कर दिया। बार-बार डेलीगेशन भेजे गए, पत्र लिखे गए, लेकिन कोई मदद नहीं मिली। जब महाराष्ट्र में साढ़े पांच बजे की सीसीटीवी फुटेज मांगी गई तो चुनाव आयोग ने कहा कि उसे 45 दिन में नष्ट कर दिया जाएगा। राहुल ने सवाल उठाया कि 21वीं सदी में, जब अनलिमिटेड डेटा एक हार्ड ड्राइव में स्टोर किया जा सकता है, तो सीसीटीवी फुटेज या अन्य सूची क्यों नष्ट की जा रही है? उन्होंने बताया कि कांग्रेस ने जांच की शुरुआत कर्नाटक से की। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने उन्हें भारी मात्रा में कागजी दस्तावेज दिए। करीब दो से तीन सौ किलो। इस डेटा को डिजिटल करने और विश्लेषण करने में छह महीने लग गए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि फॉर्म 6, जो नए वोटरों के लिए होता है, उसका जबरदस्त दुरुपयोग किया गया। 70 साल की महिला को 'फर्स्ट टाइम वोटर' दिखाकर दो बार फॉर्म भरे गए और दोनों बार वोटिंग दर्ज की गई।

राहुल गांधी के आरोपों पर चुनाव आयोग ने मांगा शपथ-पत्र

नई दिल्ली। कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मतदाता सूची में गड़बड़ी के दावे पर साक्ष्य सहित शपथ-पत्र मांगा है। उनसे कहा गया है कि वे लगाए गए अपने आरोपों को प्रमाणित करें। कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने आज राहुल गांधी को पत्र भेजा है। पत्र में उल्लेख है कि कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल कल (8 अगस्त) दोपहर 1 से 3 बजे के बीच मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिलकर एक ज्ञापन सौंपने जा रहा है। पत्र में कहा गया है कि मतदाता सूचियां जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और मतदाताओं का पंजीकरण नियम, 1960 के अनुसार पारदर्शी रूप से तैयार की गई हैं। कांग्रेस को ड्राफ्ट सूची नवंबर 2024 और अंतिम सूची जनवरी 2025 में उपलब्ध कराई गई थी। कांग्रेस ने इस मसौदा सूची पर पहली और दूसरी अपील दायर नहीं की। पत्र में उल्लेख किया गया है कि राहुल गांधी ने अपनी पत्रकार वार्ता में अवैध नामों की मौजूदगी और योग्य मतदाताओं के नाम गायब होने का आरोप लगाया है। इसी आधार पर उनसे कहा गया है कि संबद्ध व्यक्ति का नाम, भाग संख्या और क्रमांक के साथ घोषणा-पत्र भरकर भेजें।

सड़क दुर्घटना में सीआरपीएफ के तीन जवानों की मौत, कई घायल

जम्मू। जम्मू- कश्मीर में उधमपुर जिले के बसंतगढ़ इलाके में गुरुवार को एक वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के तीन जवानों की मौत हो गयी और कई अन्य घायल हो गए। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक सीआरपीएफ जवानों को ले जा रहा वाहन कंडवा के पास एक खाई में गिर गया। मौके पर पहुंचे पुलिस और स्थानीय लोगों ने तुरंत बचाव अभियान शुरू किया। उन्होंने कहा, दो जवान शहीद हो गए हैं और कई अन्य घायल हुए हैं। बचाव अभियान जारी है। विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है। कठुआ-उधमपुर से सांसद एवं केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने एक्स पर पोस्ट किया, कंडवा-बसंतगढ़ इलाके में सीआरपीएफ के वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर सुनकर व्यथित हूं। वाहन में सीआरपीएफ के कई बहादुर जवान सवार थे। उन्होंने कहा, मैंने अभी-अभी उपायुक्त सलोनी राय से बात की है। वह व्यक्तिगत रूप से स्थिति पर नजर रख रही हैं और मुझे अपडेट दे रही हैं। बचाव कार्य तुरंत शुरू कर दिए गए हैं। स्थानीय लोग स्वेच्छा से मदद के लिए आगे आए हैं। हर संभव मदद सुनिश्चित की जा रही है।

उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए कार्यक्रम अधिसूचित

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग ने उपराष्ट्रपति पद के लिए नौ सितंबर को होने वाले चुनाव की अधिसूचना गुरुवार को जारी की। आयोग चुनाव कार्यक्रम पहले ही घोषित कर चुका है। इसके तहत नामांकन की अंतिम तिथि 21 अगस्त निर्धारित की गयी है। नामांकन पत्रों की जांच 22 अगस्त को की जाएगी और नाम 25 अगस्त तक वापस लिए जा सकेंगे। आवश्यकता पड़ने पर मतदान नौ सितंबर को दिन में 10 से पांच बजे तक कराया जाएगा और उसी दिन मतों की गिनती की जाएगी। इस चुनाव के लिए राज्यसभा के महासचिव पीसी मोदी को चुनाव अधिकारी बनाया गया है। राज्यसभा सचिवालय में संयुक्त सचिव गरिमा जैन और निदेशक विजय कुमार सहायक रिटर्निंग अधिकारी बनाये गये हैं। आयोग ने कहा है कि इस चुनाव प्रक्रिया के संबंध में किसी भी तरह की पूछताछ राज्यसभा महासचिव के कार्यालय (कमरा नं. राज्यसभा 08, ग्राउंड फ्लोर, संसद भवन) में 3.30 से 4.30 के बीच सोमवार से शनिवार को की जा सकती है (सार्वजनिक अवकाश को छोड़कर)।

निसार उपग्रह प्रतिदिन 14 बार करेगा पृथ्वी की परिक्रमा

चेन्नई। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी (नासा) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित उपग्रह निसार प्रतिदिन 14 बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा और प्रत्येक 12 दिन में दो बार पृथ्वी की स्थलीय और बर्फीली सतहों को स्कैन करेगा। इसे 30 जुलाई को भारतीय अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से जीएसएलवी-एफ16 रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित किया गया था।

निसार न केवल नासा और इसरो के बीच पृथ्वी मिशन का पहला हार्डवेयर सहयोग है बल्कि यह एक अंतरिक्ष यान पर एल-बैंड और एस-बैंड रडार को एक साथ लाने वाला पहला उपग्रह भी है। यह उपग्रह रूप से शक्तिशाली सिंथेटिक एपर्चर रडार बनाता है जो उच्च-रिजॉल्यूशन डेटा प्रदान करेगा जिससे वैज्ञानिकों को पृथ्वी की भूमि एवं बर्फ की सतहों पर व्यापक रूप से निगरानी करने में मदद मिलेगी और समय के साथ उनमें होने वाले परिवर्तनों का विस्तृत रिकॉर्ड तैयार किया जा सकेगा।

भूस्खलन ट्रीटमेंट के प्रस्तावित्त कार्यों में आधे से अधिक पूर्ण : गडकरी

एजेंसी

नयी दिल्ली/देहरादून। उत्तराखंड में रूद्रप्रयाग केदारनाथ मार्ग पर भूस्खलन और भू-धंसाव ट्रीटमेंट के प्रस्तावित 357 करोड़ के कार्यों में आधे से अधिक पूर्ण हो गए हैं। उत्तराखंड के राज्यसभा सांसद और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट की ओर से सदन में पूछे सवाल के जवाब में केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्रालय ने यह जानकारी दी। इसी तरह एम्स ऋषिकेश को केंद्र ने जानकारी दी कि वहां आधुनिक जैव सुरक्षा प्रयोगशाला-3 की स्थापना का अनुमोदन दिया गया है। श्री भट्ट द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार राज्यसभा में उनके द्वारा अतारांकित प्रश्न 2040 में रुद्रप्रयाग केदारनाथ मार्ग पर केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे भूस्खलन और भू धंसाव ट्रीटमेंट की जानकारी मांगी। इसके जवाब में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बताया गया कि उत्तराखंड राज्य में रुद्रप्रयाग से केदारनाथ के निकट गौरीकुंड तक राष्ट्रीय राजमार्ग-107 पर 17 स्थानों के लिए 357 करोड़ रुपये की लागत से भूस्खलन और भू-धंसाव प्रबंध (ट्रीटमेंट) कार्यों को मंजूरी दे दी है। लगभग 172.56 करोड़ रुपये की लागत से आठ स्थानों पर कार्य पूरे हो चुके हैं। लगभग 39.25 करोड़ रुपये की लागत से तीन स्थानों पर कार्य के लिए बोली प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। लगभग 145.22 करोड़ रुपये की लागत से छह स्थानों पर शुरू किए गए कार्यों का क्रियान्वहन किया जा रहा है।

विज्ञप्ति के अनुसार इसके अलावा अतारांकित प्रश्न संख्या 1879 में एम्स, ऋषिकेश में केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी मांगी गई थी।

तटीय पोत परिवहन विधेयक पर लगी संसद की मुहर

एजेंसी

नयी दिल्ली। राज्य सभा ने गुरुवार को विपक्ष के हंगामे के बीच तटीय पोत परिवहन विधेयक 2025 को पारित कर दिया जिसमें तटीय क्षेत्र में नौवहन सेवाओं के विस्तार के लिए एक समग्र कानूनी व्यवस्था का प्रावधान है।

इसके साथ ही इस पर संसद की मुहर लग गयी। लोकसभा इसे पहले ही पारित कर चुकी है।

पीठासीन उप सभापति घनश्याम तिवाड़ी ने विधेयक के पारित होने पर विपक्षी सदस्यों के हंगामे को देखते हुए सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी। इससे पहले विपक्ष के हंगामे के कारण पूर्वाह्न शून्य काल में भी सदन की कार्यवाही दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गयी थी।

इससे पहले पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानन्द सोनोवाल ने विधेयक पर हंगामे के बीच हुई संक्षिप्त चर्चा का जवाब देते हुए इसे एक महत्वपूर्ण सुधारवादी कदम बताया। विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बीच उन्होंने कहा कि इस विधेयक में तटीय पोत परिवहन के लिए एक डाटाबेस बनाने का प्रस्ताव है जिससे भारतीय समुद्री सीमा क्षेत्र में सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा, निवेशकों को सूचना आधारित निर्णय लेने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि इसमें अंतर्गत समुद्री पोतों को तटीय क्षेत्र में चलाने का लाइसेंस देने और विदेशी पातों के पंजीकरण के बारे में भी प्रावधान किये गए हैं। पोत परिवहन मंत्री ने कहा कि इस विधेयक के लागू होने से तटीय क्षेत्र में निवेश और रोजगार बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि विधेयक में भारतीय तटीय जलक्षेत्र में व्यापार में लगे जहाजों को विनियमित करने की नयी व्यवस्थाओं का प्रावधान है।

इस विधेयक के अनुसार तटीय जलक्षेत्र का तात्पर्य भारत के प्रादेशिक जलक्षेत्र और उसके आसपास के समुद्री क्षेत्रों से है। प्रादेशिक जलक्षेत्र तट से 12 समुद्री मील (लगभग 22 किमी) तक फैला हुआ माना जाएगा जबकि निकटवर्ती समुद्री क्षेत्र 200 समुद्री मील (लगभग 370 किमी) तक होगा। इस कानून के लागू होने पर मर्चेंट शिपिंग अधिनियम, 1958 का भाग 14 निरसन हो जाएगा। राज्य सभा में सुबह के स्थगन के बाद आज अपराह्न दो बजे सदन की कार्यवाही शुरू होने पर विपक्ष के सदस्यों का हंगामा जारी रहा। हंगामे के बीच पीठासीन उप सभापति घनश्याम तिवाड़ी ने पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानन्द सोनोवाल को लोक सभा में पारित इस विधेयक को यथा रूप चर्चा और पारित कराने के लिए प्रस्तुत करने को कहा। विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बीच संक्षिप्त बहस और उस पर मंत्री के जवाब के बाद विधेयक को ध्वनिमत से मंजूरी दे दी गयी।

पेज एक का शेष

किसानों-पशुपालकों...

आसानी हुई है। पीएम किसान संपदा योजना ने नई फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स, भंडारण के अभियान को भी गति दी है। मोदी की स्कीम की 3 बड़ी बातें, कहा- हमने किसानों को आत्मबल दिया स्वामीनाथन ने देश की खाद्य सुरक्षा को जीवन का ध्येय बनायाः कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनका योगदान किसी एक युग या किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं होता। प्रो एमएस स्वामीनाथन ऐसे ही एक महान वैज्ञानिक थे। उन्होंने विज्ञान को जनसेवा का माध्यम बनाया। स्वामीनाथन ने देश की खाद्य सुरक्षा को अपने जीवन का ध्येय बनाया। उन्होंने एक ऐसी चेतना जागृत की जो आने वाली अनेक शताब्दियों तक भारत की नीतियों और प्राथमिकताओं का मार्गदर्शन करती रहेगी। स्वामीनाथन ने मार्गदर्शन किया: स्वामीनाथन के साथ मेरा जुड़ाव कई सालों पुराना है। बहुत से लोग गुजरात की पुरानी परिस्थितियों से परिचित हैं। पहले सूखे और चक्रवातों के कारण कृषि को काफी संकट का सामना करना पड़ता था और कच्छ में रेगिस्तान का विस्तार हो रहा था। जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था, तब हमने मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर काम शुरू किया था। प्रो. स्वामीनाथन ने इसमें काफी रुचि दिखाई, उन्होंने खुलकर हमें सुझाव दिए और हमारा मार्गदर्शन किया। उनके योगदान के कारण, इस पहल को जबरदस्त सफलता मिली।

अटल बिहारी वाजपेयी...

मथुरा की स्थापना के सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित किया गया जबकि उत्तर प्रदेश में निजी क्षेत्र के अन्तर्गत बोधिसत्व विश्वविद्यालय, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश की स्थापना के सम्बन्ध में आये प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में शामिल अन्य विभागों के प्रस्ताव प्रदेश राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबन्ध अधिनियम (यथा संशोधित), 2004 में संशोधन शामिल है। इसके अलावा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण (जीनीडा) में भूमि अर्जन एवं परिसम्पत्तियों के आवंटन पर प्रतिवेदन उत्तर प्रदेश सरकार वर्ष 2023 का प्रतिवेदन संख्या-4 को विधान मण्डल के समक्ष प्रस्तुत करने से पूर्व मा0 राज्यपाल की अनुमति/अनुज्ञा प्राप्त संबंधी प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। छठा राज्य वित्त आयोग (पंचायती राज और स्थानीय निकाय), उत्तर प्रदेश की अन्तरिम रिपोर्ट (वर्ष 2025-26 व 2026-27 के लिये) व राज्य सरकार की कार्यवाही ज्ञापन (एटीआर) को विधान मण्डल के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रस्ताव लाया गया। अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के जीर्णोद्धार, मरम्मत, पुनर्निर्माण, निर्माण एवं अवस्थापना सुविधाओं हेतु सहयोगी अनुदान योजना के सम्बन्ध में गाइड-लाइन्स विषयक शासनादेश दिनांक 12 जून, 2023 में कतिपय संशोधन के सम्बन्ध में प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। आकाश चिन्ह और विज्ञापन की अनुज्ञा एवं नवीकरण अवधि के संबंध में उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959 की धारा-305 (1) में संशोधन किये जाने के प्रस्ताव पर मा0 मंत्रि-परिषद के अनुमोदन के संबंध में प्रस्ताव पारित किया गया है। स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर ''हर घर तिरंगा'' कार्यक्रम हेतु राज्य वित्त आयोग की धनराशि से आवश्यक धनराशि की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। प्रदेश के विभिन्न जनपदों में 1.5 क्यूसेक क्षमता के 1750 असफल राजकीय नलकूपों के पुनःनिर्माण की परियोजना (नाबार्ड पोषित) लागत 56120.69 लाख रुपये के व्यय प्रस्ताव का अनुमोदन प्रदान किया गया।

सांसद-विधायक...

जाने की शर्त यह है कि पहले एडेड स्कूल प्रबन्धन संबंधित मद के लिए अपने हिस्से की 25 फीसदी राशि जारी करें। 12 जून 2023 को जारी शासनादेश के अनुसार विद्यालयों के हिस्से की 25 फीसदी राशि सांसद या विधायक निधि से भी लिए जाने का प्रावधान किया गया। इस प्रावधान के बावजूद दूसरी एक और समस्या सामने आ गई। सांसद या विधायक निधि का भुगतान कार्य पूरा होने के बाद ही जारी किया जाता है। ऐसे में शासन की ओर से आवंटित राशि के भुगतान में फिर से अड़चन आ गई। माध्यमिक शिक्षा विभाग ने इस समस्या को देखते हुए सांसद या विधायक निधि की राशि को अग्रिम जारी कराने का प्रस्ताव कैबिनेट को भेजा, जिसे कैबिनेट ने वाजिब मानते हुए सांसद और विधायक निधि से केवल स्कूलों के निर्माण के लिए अग्रिम राशि जारी किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान कर दी।

आईएएस अभिषेक...

कब्जे में लिया। बताया जाता है कि इस होटल में लगी रकम पता करने के लिए भी पूछताछ की गई। राजेन्द्र अयोध्या रोड स्थित गोल्डन ब्लॉसम रिसार्ट में साझीदार भी है। यह था मामला इस प्रकरण में 20 मार्च को गोमती नगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। इसमें सोलर संयंत्र लगाने वाली कम्पनी के विश्वजीत दत्ता ने आरोप लगाया था कि उससे यूपी में अपने इस उद्यम को लगाने के लिए पांच प्रतिशत कमीशन निकांत जैन ने कहा था। चार्जशीट के मुताबिक, विश्वजीत ने बयान में कहा है कि निकांत ने इन्वेस्ट यूपी के तत्कालीन सीईओ अभिषेक प्रकाश के कहने पर कमीशन मांगा गया था। एफआईआर होते ही अभिषेक प्रकाश को निलम्बित कर दिया गया था। विजिलेंस अभिषेक प्रकाश की सम्पत्ति की भी जांच कर रही है। इसके अलावा इस प्रकरण में जांच के लिए एसपी बाराबंकी विकास चन्द्र त्रिपाठी के नेतृत्व में एसआईटी बनाई गई है। इस एसआईटी में एसपी विभूतिखंड विनय द्विवेदी और इंस्पेक्टर आलोक राय है। एसआईटी अपनी एक चार्जशीट पेश कर चुकी है।

सनातन धर्म के पवित्र...

कलियुग में भगवान कल्कि के अवतार का केंद्र होगा। सीएम योगी ने कहा कि कुछ लोगों को ये विवादित विषय लगता होगा, क्योंकि जिनकी पृष्ठभूमि ही विवादित है, उन्हें हिंदू परंपरा में विवाद नजर आता है। मगर ये विवाद का विषय नहीं हो सकता। उन्होंने स्पष्ट रूप से उन लोगों पर निशाना साधा जो हिंदू विरासत को विवादित बनाने की कोशिश करते हैं और चेतावनी दी कि ऐसे कुत्सित प्रयासों को ध्वस्त किया जाएगा। काशी और अयोध्या का जिक्र करते हुए योगी ने अपनी सरकार की उपलब्धियों को गिनाया और पूछा कि अगर काशी और अयोध्या का पुनरोद्धार हो सकता है तो संभल का क्यों नहीं। उन्होंने भगवान कल्कि और हरिहर धाम के पुनरोद्धार के लिए सरकार की संकल्पबद्धता जताई। उन्होंने कांग्रेस और सपा पर निशाना साधते हुए कहा, 'याद करना संभल के साथ सपा और कांग्रेस ने कौन-कौन से पाप यहां किए हैं। कांग्रेस ने यहां सामूहिक हत्याएं कराईं और उसके चेले के रूप में सपा ने हत्यारों को बचाने का कार्य किया। आजादी के बाद जो कत्लेआम हुए, उसकी सच्चाई सामने आ जाती तो उनके वोट बैंक खिसकने का भय था। मुख्यमंत्री ने चेतावनी भरे लहजे में कहा, ह्न हम वोटबैंक के लिए नहीं, विरासत के संरक्षण के लिए यहां आए हैं। जो भारत और भारतीयता को कलंकित करने का कार्य करेंगे, उन्हें ऐसा सबक सिखाएंगे कि उनकी आने वाली पीढ़ियां याद करेंगी कि किन लोगों से टकराए हैं। योगी कहा कि पिछली सरकारों में दंगे होते थे, अराजकता फैलती थी, शोषण होता था। न बेटी सुरक्षित होती थी, न व्यापारी। लेकिन अब हर यूपी वासी सुरक्षित है, केवल दंगाई नहीं। उनके ऊपर महाकाल अपना असर दिखा रहे हैं। अब वह अपनी गति को दुर्गति में बदल रहा है। अपनी सरकार की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि पिछले आठ साल में साढ़े आठ लाख नौकरियां दी गईं, जिसमें हाल ही में 60 हजार 200 युवाओं को पुलिस में भर्ती किया गया। उन्होंने पिछली सरकारों पर हमला बोलते हुए कहा कि वे एक जिले में एक माफिया पालती थीं, जबकि उनकी सरकार 'एक जिला एक उत्पाद' योजना चला रही है। उन्होंने गरीबों को आवास, फ्री राशन, बेटियों की शादी के लिए अनुदान और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने आगामी पर्वों का जिक्र करते हुए कहा कि 9 अगस्त को रक्षा बंधन और काकोरी ट्रेन एक्शन का स्मृति दिवस है, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 16 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान का समर्थन करते हुए तिरंगा फहराने की अपील की। योगी ने संभलवासियों की सराहना की कि उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में दंगों को झेला लेकिन कभी नहीं झुके। उन्होंने आश्वासन दिया कि डबल इंजन सरकार विरासत के संरक्षण और विकास के लिए प्रतिबद्ध है। योगी ने कहा कि आज लोकार्पित और शिलान्यास होने वाली योजनाएं केवल छोटी सी झलक हैं। उन्होंने संभल में ?659 करोड़ की 222 परियोजनाओं का विवरण दिया, जिसमें शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, पेयजल, सड़कें, आंगनवाड़ी केंद्र और कम्पोजिट विद्यालयों की सुविधाएं शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने नवजात बच्चों का अन्नप्राशन संस्कार संपन्न कराया, कार्यक्रम स्थल पर लगी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसके साथ उन्होंने संभल में जिलाधिकारी कार्यालय और एकीकृत आवासीय भवनों का विधि-विधान से शिलान्यास किया। इस अवसर उन्होंने संभल में उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए पुरातात्विक वस्तुओं का भी अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने संभल में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। साथ ही उन्होंने संभल संवाद ऐप का उद्घाटन किया और विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को सम्मानित करते हुए चेक, मकान की चाबी और प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी, मंत्री गुलाब देवी, धर्मवीर प्रजापति, राज्यमंत्री सरदार बलदेव सिंह ओलख, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया, दुर्विजय सिंह शाक्य, भाजपा जिलाध्यक्ष हरेंद्र सिंह, जिला प्रभारी हेमंत राजपूत, जिला पंचायत अध्यक्ष अनामिका यादव, एमएलसी जयपाल सिंह व्यस्त आदि मौजूद रहे।

सेना ने धराली में राहत व बचाव अभियान किया तेज, 70 लोगों को किया रेस्क्यू

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड के जिले उत्तरकाशी के धराली-हर्षिल में प्राकृतिक आपदा प्रभावित क्षेत्र में भारतीय सेना के जवान जिला प्रशासन के समन्वय बनाकर योजनाबद्ध तरीके से बचाव व राहत अभियान चला रहे हैं। आपदा क्षेत्र में 225 से अधिक सेना के जवान बचाव कार्य में जुटे हैं। सेना ने अब तक 70 लोगों को रेस्क्यू किया है। सेना ने यहां एक बयान जारी कर गुरुवार को बताया कि मानवीय सहायता और आपदा राहत अभियान तेज़ कर दिया है। सेना के जवान अन्य लोगों के साथ मिलकर वहां फंसे लोगों को बचाने, राहत पहुंचाने और संपर्क बहाल करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं। कई जगह भूस्खलनों और सड़कों के टूटने के कारण यह क्षेत्र अभी भी कटा हुआ है। भटवाड़ी, लिंचीगाड, हरसिल के पास गंगरानी और धराली में क्षतिग्रस्त सड़क को दुरुस्त किया जा रहा है। हर्षिल व नेलांग में सैना के हेलीपैड चालू है। नेलांग गंगोत्री से सड़क मार्ग से जुड़ा है, जिससे पर्यटकों की सुविधाजनक आवाजाही संभव हो रही है। धराली में सिविल हेलीपैड भूस्खलन के कारण बंद पड़ा है। सेना ने जानकारी दी कि यहां पर 225 से ज़्यादा सैनिक तैनात हैं, जिनमें इंजीनियर, चिकित्सा दल और बचाव विशेषज्ञ शामिल हैं। इसके अलावा तेखला में एक रीको रडार टीम तैनात है। आगे की तैनाती के लिए एक और रीको रडार शामिल किया जा रहा है। खोज एवं बचाव में दो कुत्ते भी तैनात किए गये हैं। सेना के बयान के अनुसार अब तक 70 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। सेना ने तीन नागरिकों की मौत की पुष्टि है, जबकि 50 से ज़्यादा नागरिकों के साथ ही एक जेसीओ और 8 जवान लापता हैं। यहां से निकाले गए नौ सैन्य कर्मियों और तीन नागरिकों को हेलीकॉप्टर से देहरादून पहुंचाया गया है। गंभीर घायल तीन नागरिकों को एम्बुलेंस से एम्स ऋषिकेश पहुंचाया गया और आठ नागरिकों को उत्तरकाशी के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। इसके अलावा गंगोत्री में फंसे लगभग 180-200 पर्यटकों को भारतीय सेना और आईटीबीपी भोजन, आश्रय और चिकित्सा सहायता उपलब्ध करा रही है। मध्य कमान के सेना कमांडर और यूबी क्षेत्र के जीओसी अभियानों की निगरानी कर रहे हैं। चिनूक हेलीकॉप्टरों के माध्यम से अर्धसैनिक बलों और चिकित्सा दलों को हर्षिल पहुंचाने और एमआई-17 हेलीकॉप्टरों से एनडीआरएफ कर्मियों और चिकित्सकों को नेलांग की तैयारी चल रही है। वापसी की उड़ानों में पर्यटकों को नेलांग हेलीपैड से निकाला जाएगा। उत्तरकाशी और टेकला से आगे सड़क खोलने के प्रयास जारी हैं।

सरकारी स्कूलों के नन्हे बच्चों ने मुख्यमंत्री को बांधी राखी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को सरकारी स्कूलों के नन्हे बच्चों ने मुख्यमंत्री जनसेवा सदन में गुरुवार को राखी बांधी। मुख्यमंत्री जनसेवा सदन आज कुछ अलग ही रंग में रहा और पूरा सदन बच्चों की खिलखिलाती हंसी से गूंज उठा।

मुख्यमंत्री ने एक्स पोस्ट में कहा कि सरकारी स्कूलों के नन्हे बच्चे जब रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में राखियां लेकर आए तो यह रस्म हमारे रिश्ते की नई परिभाषा रही। उनके छोटे-छोटे हाथों से बांधे गए धागे एक ऐसे कल का वादा थे, जहां हर बच्चा बिना डर, बिना भेद, अपने सपनों की उड़ान भर सके। उन्होंने कहा कि बच्चों की खिलखिलाती हंसी, मासूम आंखों की चमक यही तो है हमारे हर निर्णय का मूल, हमारी हर नीति का आधार। मुख्यमंत्री ने सभी बच्चों को ढेर सारा प्यार देते हुए कहा कि उस भरोसे को मेरा प्रणाम जिसे आपने आज मेरी कलाई पर बांधा दिया। उल्लेखनीय है कि देशभर में नौ अगस्त को रक्षाबंधन मनाया जाएगा।

बॉलीवुड सिंगर हनी सिंह व करण औजला को पंजाब महिला आयोग ने भेजा नोटिस

■ अपने गीतों के माध्यम से महिलाओं के बारे में गलत टिप्पणी करने का आरोप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। पंजाब महिला आयोग ने बालीवुड सिंगर एवं पंजाबी कलाकार यो-यो हनी सिंह तथा करण औजला को नोटिस जारी किया है। दोनों कलाकारों पर अपने गीतों के माध्यम से महिलाओं के बारे में गलत टिप्पणी करने का आरोप है। महिला आयोग ने इस संबंध में पंजाब पुलिस महानिदेशक को भी पत्र लिखकर इस मामले में कार्रवाई के लिए कहा है। महिला आयोग की चेयरपर्सन ने गुरुवार को राज्य पुलिस महानिदेशक को लिखे गए दो अलग-अलग पत्रों में कार्रवाई करते हुए 11 अगस्त की सुबह आयोग को रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए हैं। पंजाब महिला आयोग की अध्यक्ष राज लाली गिल ने डीजीपी को लिखे पहले पत्र में कहा है कि यो यो हनी सिंह का गाना 'मिलेनियर' सोशल मीडिया पर चल रहा है। गाने में उन्होंने महिलाओं के प्रति बहुत ही आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग किया है। दूसरे पत्र में आयोग ने करन औजला के गाने 'एमएफ गबरू' का जिक्र किया है। आयोग ने कहा कि इसमें भी महिलाओं के लिए गलत शब्दावली का प्रयोग हुआ है, जो पूरी तरह से एतराज योग्य है। आयोग ने अपने पत्र में डीजीपी को आदेश दिया है कि चंडीगढ़ स्थित पंजाब पुलिस के एक अधिकारी को इस संबंध में कानून अनुसार जांच व कार्रवाई करने के आदेश जारी किए जाएं। इस संबंध में दोनों सिंगरों पर क्या कार्रवाई की गई, उसकी रिपोर्ट 11 अगस्त को सुबह 11 बजे उनके दफ्तर में पेश की जाए। मीडिया से बातचीत में महिला आयोग की चेयरपर्सन राज लाली गिल ने कहा कि महिलाओं के प्रति इनकी भाषा को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए मैंने दोनों को तलब किया है। इन गानों को बैन करवाया जाएगा। सिंगर समाज की आवाज होते हैं। एक तरफ यह कहते है कि इन्हें अपनी मां से बहुत प्यार है। दूसरी तरफ यह गानों में मां की गालियां निकाल रहे हैं। पता चला है कि दोनों ही सिंगर विदेश में हैं, लेकिन इनको बुलाया गया है।

गंगा नदी के जलस्तर में लगातार वृद्धि से पटना के पांच प्रखंडों में पलायन शुरू

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पटना। भारी बारिश और नेपाल से छोड़े गये पानी से बिहार में गंगा नदी के जलस्तर में लगातार वृद्धि हो रही है। इससे लोगों का पलायन शुरू हो गया है। गंगा नदी से सटे पटना जिले के मनेर, दानापुर, पटना सदर, बाढ़ और मोकामा प्रखंडों में बाढ़ की स्थिति गंभीर हो गई है।

जिला प्रशासन के अनुसार अब तक 50,000 से अधिक की आबादी बाढ़ से प्रभावित है और लोगों का शहर की ओर पलायन शुरू हो गया है। प्रभावित इलाकों में लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए 35 नावें तैनात की गई हैं और सभी सीओ, बीडीओ और एसडीओ को हाई अलर्ट पर रखा गया है। जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एसएम ने दीघा पाटीपुल, मीनार घाट, कुर्जी बिंदटोली घाट सहित अन्य क्षेत्रों का दौरा कर राहत व्यवस्था की समीक्षा की तथा पीड़ितों से संवाद किया। गंगा नदी का जलस्तर लगातार प्रति घंटे 1 सेंटीमीटर से अधिक बढ़ रहा है। बीते 24 घंटे में गांधीघाट पर जलस्तर 49.57 मीटर से बढ़कर 49.87 मीटर, दीघाघाट पर 50.81 से 51.10 मीटर, मनेर में 52.74 से 52.99 मीटर, हाथीदह में 42.48 से 42.74 मीटर, और सोन नदी में कोईलवर पर 53.01 से 53.51 मीटर तक पहुंच गया है। निचले इलाकों की सड़कों पर पानी चढ़ चुका है, जिससे कई गांव पूरी तरह जलमग्न हो गए हैं। रामनगर दियारा पंचायत (अथमलगोला) के वार्ड संख्या 9, 10, 11 और 12 सबसे अधिक प्रभावित हैं, जहां ग्रामीण सड़क पर पानी भर गया है और संपर्क पूरी तरह कट गया है। बाढ़ राहत कार्य के लिए जिला प्रशासन ने 11 कोषांगों का गठन किया है। इन टीमों में एसडीएम, डीएसपी, सीओ और थाना प्रभारी को जिम्मेदारी सौंपी गई है ताकि जरूरतमंदों तक तुरंत राहत सामग्री पहुंचाई जा सके। पीड़ितों के लिए तीन शरणस्थली तैयार की गई हैं ऽ नकटा दियारा (पाटीपुल), मीनार घाट और मरीन ड्राइव पर बिंदटोली के लोगों के लिए एक लेन में टेंट लगाया गया है। इन स्थानों पर सामुदायिक रसोई, चिकित्सा सुविधा और पशुओं के लिए चारा की भी व्यवस्था की गई है। बाढ़ और मोकामा में भी सामुदायिक रसोई कार्यरत है। दानापुर के दियारा क्षेत्र में भी स्थिति भयावह होती जा रही है। जलस्तर बढ़ने के कारण लोग अपने मवेशियों और सामान के साथ ऊँचे स्थानों की ओर पलायन कर रहे हैं। कुछ लोग बलदेव इंटर स्कूल में शरण लिए हुए हैं, तो कई अपने रिश्तेदारों के यहां आश्रय ले रहे हैं। जिला प्रशासन ने आम लोगों से अपील की है कि किसी भी प्रकार की आपात स्थिति या सूचना के लिए जिला आपातकालीन नियंत्रण कक्ष (0612-2210118) पर संपर्क करें।

चंडीगढ़ पुलिस ने पंजाब के कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा को भेजा नोटिस, मांगा जवाब

चंडीगढ़। चंडीगढ़ पुलिस ने पंजाब विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष प्रताप बाजवा की शिकायत पर आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा को नोटिस भेजकर जवाब देने को कहा है। प्रताप सिंह बाजवा ने चंडीगढ़ पुलिस से सरकार के दो मंत्रियों अमन अरोड़ा व हरपाल सिंह चीमा के खिलाफ वीडियो एडिट करके वायरल करने की शिकायत की थी। इस पर 11 जुलाई को चंडीगढ़ के सेक्टर-3 थाना में दोनों मंत्रियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी, जिसमें अरोड़ा की भूमिका भी जांच के घेरे में है। दरअसल, बाजवा ने कुछ दिन पहले शिरोमणि अकाली दल के नेता एवं पूर्व मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया की गिरफ्तारी को लेकर एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था, जिसे एडिट कर पोस्ट करने का आरोप इन मंत्रियों पर है। इस मामले में कार्रवाई करते हुए चंडीगढ़ पुलिस ने अमन अरोड़ा को नोटिस भेजकर उनकी पूरी सोशल मीडिया टीम की पूरी डिटेल मांगी है, ताकि पता चल सके कि किस शख्स ने बिक्रम मजीठिया वाली पोस्ट को सोशल मीडिया पर डाला था।

बीएसएफ हर चुनौती से निपटने में सक्षम: डीजी दलजीत चौधरी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के महानिदेशक दलजीत सिंह चौधरी ने कहा कि बीएसएफ न केवल सजग है, बल्कि हर चुनौती से निपटने में पूरी तरह सक्षम है। बल की निष्ठा, अनुशासन और दक्षता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। बीएसएफ महानिदेशक ने बीते दिनों गुरदासपुर सीमा क्षेत्र का दौरा किया और सुरक्षा चुनौतियों एवं बल की तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर में देश के लिए उत्कृष्ट योगदान देने वाले जवानों को सम्मानित किया। दौरे के दौरान उन्होंने महिला प्रहरियों के लिए बनाए गए नए बैरक का उद्घाटन किया। उनके साथ एडीजी सतीश एस. खंडारे तथा आईजी पंजाब फ्रंटियर डॉ. अतुल फुलज़ेले भी उपस्थित रहे। इसके बाद फ्रंटियर मुख्यालय जालंधर में आयोजित प्रहरी सम्मेलन में महानिदेशक ने ऑपरेशन सिन्दूर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले जवानों को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डीआईजी जे.के. बर्डी को मणिपुर के अशांत इलाकों में विशेष अभियान के दौरान दिखाए गए नेतृत्व के लिए डीजी स्टार से नवाजा गया।महानिदेशक ने कहा कि हमें जवानों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा, क्योंकि एक सशक्त बल ही देश की सीमाओं को सुरक्षित रख सकता है।

भाखड़ा डैम पर सीआईएसएफ की तैनाती की तैयारी शुरू

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। केन्द्र सरकार ने भाखड़ा डैम पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की तैनात की तैयारी शुरू कर दी है। बल के आईजी के नेतृत्व में एक टीम 11 व 12 अगस्त को नंगल का दौरा करेगी। यहां जवानों के ठहरने के लिए आवास बनाए जा रहे हैं। विशेष टीम तैनात से पहले प्रबंधों का जायाजा लेगी। हाल ही में पंजाब सरकार ने सीआईएसएफ की तैनाती के विरोध में विधानसभा में प्रस्ताव पारित किया था।पंजाब सरकार का कहना है कि जब पंजाब पुलिस सुरक्षा दे रही तो सीआईएसएफ की तैनीती की क्यों आवश्यकता है। प्रोजेक्ट में पंजाब, हिमाचल, हरियाणा और राजस्थान हिस्सेदार हैं। प्रोजेक्ट का 60 फीसदी खर्च पंजाब उठाता है जबकि अन्य खर्च तीन राज्य उठाते हैं। नंगल डैम से पंजाब के अलावा हरियाणा, हिमाचल व राजस्थान को पानी की आपूर्ति होती है। मई माह के दौरान हरियाणा के साथ हुए जल विवाद के दौरान पंजाब ने इस मुद्दे पर आक्रामक रूख अपनाए रखा। भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) के चेयरमैन को भीतर तक घुसने नहीं दिया गया। बीबीएमबी की सिफारिश पर केंद्र सरकार ने भाखड़ा डैम की सुरक्षा का जिम्मा सीआईएसएफ को सौंपने का फैसला किया। इसके विरोध में पंजाब सरकार ने विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर सीआईएसएफ की तैनाती के विरोध में प्रस्ताव पारित कर दिया।सीआईएसएफ की तैनाती को पंजाब में कांग्रेस सरकार के दौरान वर्ष 2021 में मंजूरी दी गई थी।

बिहार: पुनौरा धाम में भव्य आयोजन की तैयारी, 11 पवित्र नदियों के जल से होगा मां सीता के मंदिर का शिलान्यास

■ केंद्रीय गृहमंत्री और मुख्यमंत्री कल करेंगे शिलान्यास-कार्यक्रम में लाखों लोगों के शामिल होने का अनुमान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पटना। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण के बाद बिहार के सीतामढ़ी के पुनौरा धाम में माता सीता का अद्‌भुत मंदिर बनने जा रहा है। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शुक्रवार यानी 8 अगस्त को मंदिर का शिलान्यास करेंगे। पुनौरा धाम में जानकी मंदिर और कॉरिडोर के शिलान्यास समारोह को भव्य बनाने के लिए सभी आवश्यक कार्य को पूर्ण कर लिया गया है। इस कार्यक्रम में अमित शाह और नीतीश कुमार समेत कई बड़े नेता, संत और आम लोग शामिल होंगे। अनुमान है कि इस कार्यक्रम में लाखों लोग शामिल होंगे। पुनौरा धाम मंदिर के महंत कौशल किशोर दासजी ने बातचीत में बताया कि इस शिलान्यास समारोह के लिए घर-घर जाकर आमंत्रण अभियान भी चलाया गया। श्रद्धालुओं को पीले चावल और तुलसी के पत्तों के साथ आमंत्रित किया गया। इसके साथ ही, शहर से गुजरने वाले राहगीरों को भी कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया। यह शिलान्यास समारोह तीन दिवसीय भव्य उत्सव के रूप में मनाया जाएगा और माता जानकी के दिव्य मंदिर की नींव के लिए 11 नदियों का पवित्र जल लाया गया है। इनमें गंगा, यमुना, भागीरथी, अलकनंदा, मंदाकिनी, पिंडर, धौलीगंगा, लक्ष्मण गंगा, सरस्वती, कमला और सरयू नदियां शामिल हैं। महंत कौशल किशोर दास के शिष्य रामकुमार दास ने बताया कि मंदिर प्रबंधन ने शिलान्यास समारोह की शाम को मंदिर में दीपोत्सव का आयोजन करने का भी निर्णय लिया है। इसके लिए लोगों से शिलान्यास के दिन दीपदान लेकर आने की अपील की गई है। उस दिन मंदिर के साथ-साथ सीताकुंड परिसर को 51,000 दीपों से सजाने की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। बीते 01 जुलाई को बिहार मंत्रिमंडल ने पुनौरा धाम में मंदिर निर्माण के लिए 882.87 करोड़ रुपये के बजट को मंजूरी दी थी। इस राशि में से 137 करोड़ रुपये जानकी मंदिर के निर्माण के लिए और 728 करोड़ रुपये पर्यटन संबंधी बुनियादी ढांचे के विकास के लिए इस्तेमाल किए जाएंगे। इसके 10 वर्षों तक रखरखाव पर 16.62 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रावधान भी किया गया है।

हथकरघा आत्मनिर्भर भारत की भावना का सशक्त आधार है: सत्या शर्मा

नई दिल्ली। नगर निगम में स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने गुरुवार को 'राष्ट्रीय हथकरघा दिवस' पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि हथकरघा न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की भावना का भी सशक्त आधार है। सत्या शर्मा ने आज 'राष्ट्रीय हथकरघा दिवस' पर एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि हथकरघा सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। आजादी के बाद भी हथकरघा अपनी सांस्कृतिक और आर्थिक भूमिका निभाता आ रहा है। ये सिर्फ कपड़ा नहीं बुनता, ये एक लोककला है, एक विरासत है, एक रोजगार है। जिससे लाखों बुनकरों और कारीगरों का जीवन जुड़ा है। शर्मा ने कहा कि आज जब पूरी दुनिया 'फास्ट फैशन' की दौड़ में लगी है, तब भारत के हथकरघा उत्पाद खादी, बनारसी, चंदेरी, इकत, कांथा, पटोला एवं विविधताओं के साथ केवल टिकाऊ हैं जो भारतीयों की पहचान भी है। सत्या शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने बुनकरों को न केवल सम्मान दिया है, बल्कि उन्हें वैश्विक बाजार से जोड़ने के लिए ठोस रणनीति पर काम भी किया है। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है कि हम सभी मिलकर इस परंपरा को आधुनिक रंग दें और कला के ताने को तकनीक के बाने से जोड़ें। उन्होंने कहा कि जब हम खादी या हैंडलूम पहनते हैं, तो सिर्फ एक कपड़ा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को अपने तन पर धारण करते हैं।

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान स्टेट हेड - संदीप मिश्रा
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063